जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

चूरू

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 256906, 256907, फैक्सः- 01562-256908 वर्षः 17 संख्याः 99 प्रभात चूरू, मंगलवार 5 अगस्त, 2025 पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

'ओम बिड़ला के ओ.एस.डी. राजीव दत्ता पर लगे मानव तस्करी के आरोपों की जाँच गंभीरता और तीव्रता से करें'

राजस्थान हाई कोर्ट ने निर्देश दिया कि इस मामले में दायर एफ.आई.आर. तथा परिवादों की जाँच ए.डी.जी. (अपराध) दिनेश एम.एन. के निरीक्षण में की जाए

- अदालत ने अपने आदेश में याचिकाकर्ताओं को कानूनी सुरक्षा देते हुए कहा कि इनके खिलाफ पुलिस प्रशासन बलपूर्वक या दण्डात्मक कार्यवाही नहीं कर सकता, जैसे कि उनकी गिरफ्तारी करना इत्यादि, जब तक अदालत ऐसी कार्यवाही करने की अनुमति नहीं देती या याचिकाकर्ता जाँच में सहयोग नहीं करते।
- याचिकाकर्ताओं की ओर से अदालत में कहा गया कि अजमेर, पाली, बूंदी और कोटा में इस मामले से जुड़ी एफ.आई.आर. व परिवाद दायर किया है, परन्तु कोटा में राजनैतिक दबाव के चलते उनकी एफ.आई.आर. दर्ज नहीं की गई।
- याचिकाकर्ता का कहना है कि कोटा से जयपुर के रास्ते में उनके साथ अंजान व्यक्ति ने मारपीट भी की, जिसकी भी पुलिस ने एफ.आई.आर. दर्ज नहीं की।

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4, अगस्त। राजस्थान हाईकोर्ट ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला के ओएसडी राजीव दत्ता के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने का आदेश दिया है। अदालत के निर्देशानुसार एफआईआर दर्ज कर ली गई है।

जयपुर राजस्थान उच्च न्यायालय बैंच ने कहा कि लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला के ओएसडी राजीव दत्ता, अर्चना झाला, दिनेश मुरझानी व वंदिता राणा पुलिस अधीक्षक अजमेर के विरुद्ध अजमेर मजिस्ट्रेट कोर्ट में पेंडिंग मानव तस्करी की शिकायत का अनुसंधान एडीजी क्राइम दिनेश एम.एन. करेंगे एवं याचिकाकर्ता एडवोकेट शेखर मेवाड़ा के विरुद्ध दर्ज एफआईआर का अनुसंधान भी एडीजी क्राइम दिनेश एमएन ही करेंगे।

याचिकाकर्ताओं की ओर से अदालत में कहा गया कि अजमेर, पाली, बूंदी और कोटा में इस मामले से जुड़ी एफ.आई.आर. व परिवाद दायर की है, परन्तु कोटा में राजनैतिक दबाव के चलते उनकी एफ.आई.आर. दर्ज नहीं की गई। याचिकाकर्ता का कहना है कि कोटा से जयपुर के रास्ते में उनके साथ अंजान व्यक्ति ने मारपीट भी की, जिसकी भी पुलिस ने एफ.आई.आर. दर्ज नहीं की।

अधिवक्ता शेखर मेवाड़ा पर बूंदी में हुए कातिलाना हमले की एफआईआर दर्ज करने के निर्देश दिए एवं याचिकाकर्ताओं के खिलाफ सभी प्रकार की कानूनी कार्यवाहियों पर रोक लगा दी गई। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला के ओएसडी राजीव दत्ता एवं रविंदर गौड़ (आईजी कोटा), गंगा सहाय (डिप्टी एसपी कोटा सिटी), राजेन्द्र कुमार मीणा (एसपी बूंदी), रमेश आर्य (एसएचओ सदर बूंदी), सुनील खटाना व अन्य लोगों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कर कार्यवाही करने का आदेश दिया।

निम्न याचिकाओं की तरफ से अधिवक्ता राजस्थान उच्च न्यायालय बार एसोसिएशन के अध्यक्ष महेन्द्र शांडिल्य ने न्यायालय को बताया कि ऊपर बताए गए व्यक्तियों के खिलाफ मानव तस्करी में परिवाद अनुसंधान में लंबित है तथा उच्च न्यायालय ने एफआईआर दर्ज करने के आदेश दिए हैं।

अदालत के आदेश के अनुसार, "पक्षकारों के अधिवक्ताओं की दलीलें सुनने के बाद, न्यायालय में उपस्थित अधिकारी (दिनेश एम.एन.) द्वारा दी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

स्कूल इमारतों की बदहाल स्थिति पर सरकार दो सप्ताह में जवाब दे

जयपुर, 4 अगस्त। राजस्थान हाईकोर्ट ने प्रदेश की स्कूलों की इमारतों की बदहाल स्थिति और उनमें संसाधनों के अभाव से जुड़े मामले में केंद्र और राज्य सरकार को जवाब पेश करने के लिए दो सप्ताह का समय दिया है। जस्टिस महेन्द्र गोयल और जस्टिस अशोक कुमार जैन की खंडपीठ ने यह आदेश प्रकरण में लिए गए स्वप्रेरित प्रसंज्ञान पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान केंद्र और राज्य सरकार की ओर से महाधिवक्ता सहित अन्य वकील पेश हुए। उन्होंने अदालत से मामले में जवाब पेश करने के लिए समय मांगा। इस पर अदालत ने उन्हें दो सप्ताह का समय देते हुए प्रकरण की सुनवाई 18 अगस्त को तय की है।

- हाई कोर्ट ने प्रकरण के स्वप्रेरित प्रसंज्ञान की सुनवाई 18 अगस्त को तय की।

गौरतलब है कि हाईकोर्ट की एकलपीठ ने गत 28 जुलाई को प्रदेश की सरकारी स्कूलों के जर्जर भवनों सहित उनमें संसाधनों की कमी को लेकर स्वप्रेरणा से प्रसंज्ञान लिया था। इसके साथ ही अदालत ने मामले में शिक्षा मंत्रालय, बाल विकास मंत्रालय, मुख्य सचिव, एसीएस शिक्षा, प्रमुख बाल कल्याण सचिव और राष्ट्रीय बाल आयोग को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया था। वहीं दूसरी ओर हाईकोर्ट की एक अन्य एकलपीठ ने स्कूल भवनों के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कश्मीर को फिर से राज्य का दर्जा देने पर विचार कर रही है केन्द्र सरकार?

दिन भर सोशल मीडिया पर यह चर्चा आम रही

- चर्चा है कि भारत सरकार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी छवि बेहतर बनाने के लिए यह कदम उठा सकती है।
- लेकिन, यह भी कहा जा रहा है कि केन्द्र सरकार को भाजपा कार्यकताओं व समर्थकों का इस पर समर्थन शायद ना मिले।
- भाजपा व मोदी के कई समर्थकों ने कश्मीर का राज्य का दर्जा बहाल करने पर चिंता जताई और कहा, जल्दबाजी में कोई कदम उठाने की गलती न की जाए।

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 अगस्त। सोशल मीडिया पर इन दिनों इस बात को लेकर एक खास हलचल देखी जा रही है कि केन्द्र सरकार अनुच्छेद 370 हटाए जाने की छठी वर्षगांठ, यानी 5 अगस्त को जम्मू-कश्मीर को फिर से राज्य का दर्जा देने पर विचार कर रही है।

याद दिला दें कि 5 अगस्त 2019 को केन्द्र सरकार ने अनुच्छेद 370 को खत्म करके, जम्मू-कश्मीर को दो केन्द्र शासित प्रदेशों, जम्मू-कश्मीर और लद्दाख, में बांट दिया था। इसके साथ ही, राज्य की विधानसभा भंग कर दी गई थी तथा वहां की सत्ता एक उप-राज्यपाल के अधीन कर दी गई थी।

केन्द्र पर कश्मीर को फिर से राज्य का दर्जा देने का दबाव भी है, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट ने भी 2023 में केन्द्र सरकार से राज्य का दर्जा जल्द से जल्द तथा "यथाशीघ्र" बहाल करने को कहा था। करीब दस साल के लम्बे इन्तज़ार के बाद, पिछले साल यहां विधानसभा चुनाव हुए, जिसके बाद मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला और कांग्रेस नेता लगातार राज्य का दर्जा बहाल करने की मांग कर रहे हैं।

हाल के कुछ घटनाक्रमों ने राज्य के दर्जे की लम्बित बहाली की इन अफवाहों को और बल दिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 3 अगस्त को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की और इसके बाद गृह मंत्री अमित शाह ने भी राष्ट्रपति से भेंट की। शाह ने जम्मू-कश्मीर के कुछ नेताओं और भाजपा के प्रदेश प्रमुख के साथ भी मीटिंग कीं। सूत्रों के अनुसार, प्रधानमंत्री ने मंगलवार को एनडीए सांसदों की भी बैठक बुलाई है।

अगर वाकई राज्य का दर्जा बहाल होता है, तो यह कदम प्रधानमंत्री मोदी को वर्तमान गम्भीर चुनौतियों से राहत दिलाने में मदद कर सकता है। ज्ञातव्य है कि हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप की टैरिफ नीति और राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ के इस्तीफे ने सरकार को मुश्किल में डाल दिया है। इसके अलावा, पहलगाम हत्याकांड के बाद पाकिस्तान पर की गई सैन्य कार्रवाई से भी भारत की कूटनीतिक स्थिति में कोई खास सुधार नहीं हुआ। ऐसा माना जा रहा है कि जम्मू-कश्मीर के राज्य के दर्जे की बहाली से अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय की नजरों में भारत सरकार की स्थिति सुधारने में मदद मिल सकती है।

हालांकि, यह कदम भाजपा के समर्थकों को शायद पसंद न आए। सेना के पूर्व अधिकारी और लेखक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मतलब यह नहीं कि आप कुछ भी कह सकते हैं'

सुप्रीम कोर्ट ने राहुल गांधी को राहत देने के साथ ही नसीहत भी दी

- सुप्रीम कोर्ट ने सेना के कथित अपमान संबंधी एक केस, जो लखनऊ की एक अदालत में चल रहा था, में कार्यवाही पर स्टे लगा दिया।
- राहुल पर आरोप था कि भारत जोड़ो यात्रा के दौरान उन्होंने सेना पर टिप्पणी की थी कि चीन के सैनिक अरुणाचल में भारतीय सैनिकों को पीट रहे थे।
- सुप्रीम कोर्ट ने इस आधार पर राहत दी कि राहुल की टिप्पणी से शिकायतकर्ता प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित नहीं है।
- कोर्ट ने यह भी कहा, यह मुद्दा संसद में उठाया जाना चाहिए।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 अगस्त। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को राहुल गांधी के खिलाफ सेना पर दिए गए बयान को लेकर दर्ज मानहानि के मुकदमे पर रोक लगा दी, साथ ही यह सवाल भी उठाया कि उन्होंने यह मुद्दा सोशल मीडिया पर क्यों उठाया, संसद में क्यों नहीं?

न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने राहुल गांधी को सावधान करते हुए कहा कि ऐसे संवेदनशील मुद्दे सोशल मीडिया पर उठाने की बजाय संसद में उठाए जाने चाहिए।

बैंच ने नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के खिलाफ लखनऊ की अदालत में विचाराधीन उस क्रिमिनल मानहानि केस में स्टे दे दिया, जो 2022 की "भारत जोड़ो यात्रा" के दौरान भारतीय सेना के बारे में की गई उनकी टिप्पणी से सम्बंधित है।

गांधी ने कहा था कि "चीनी सैनिक अरुणाचल में भारतीय सैनिकों को पीट रहे हैं।" यह टिप्पणी "लाइन ऑफ एक्चुअल कन्ट्रोल" पर चीनी कार्यवाही को लेकर, केन्द्र सरकार को निशाना बनाते हुये की गई थी।

अदालत ने गांधी से यह भी पूछा कि क्या उनकी टिप्पणी किसी विश्वसनीय सामग्री पर आधारित थी।

बैंच ने कहा, "आपने यह टिप्पणी सोशल मीडिया पर क्यों की? संसद में क्यों नहीं? आपको कैसे पता चला कि चीन ने 2000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर कब्जा कर लिया? आपके पास इसका

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एसआई भर्ती पेपर लीक में याचिकाकर्ता की बहस पूरी हुई

जयपुर, 4 अगस्त। राजस्थान हाईकोर्ट में एसआई भर्ती-2021 पेपर लीक मामले में याचिकाकर्ता पक्ष से जुड़े सभी वकीलों की बहस पूरी हो गई है। अदालत ने मामले में राज्य सरकार को पक्ष रखने के लिए पांच अगस्त का समय दिया है। जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ ने यह आदेश कैलाश चन्द व अन्य की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ताओं की ओर से ओपी

- अब सुनवाई 5 अगस्त को।

सोलंकी और हरेंद्र नील ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता ने भर्ती को रद्द करने की गुहार करते हुए याचिका दायर की है। याचिका में भर्ती को लेकर राज्य सरकार कोई निर्णय ले, ऐसी प्रार्थना नहीं की गई है। ऐसे में राज्य सरकार की ओर से भर्ती रद्द नहीं करने का निर्णय लेने के आधार पर ही याचिका सारहीन नहीं हो जाती है। याचिकाकर्ता की ओर से बहस पूरी करने के बाद अदालती समय पूरा होने पर अदालत ने मामले की सुनवाई 5 अगस्त को तय की है।

क्या बिहार चुनाव के बाद कोई बम फोड़ सकते हैं चंद्रबाबू नायडू?

लगातार दूसरी बार मोदी सरकार की नीतियों पर विरोध जताया

- अब चंद्रबाबू नायडू ने ट्रंप द्वारा टैरिफ बढ़ाए जाने पर मोदी सरकार को कड़ा पत्र लिखा व आंध्र के मत्स्य उद्योग के लिए गंभीर चिंता जताई।
- इससे पहले चंद्रबाबू ने बिहार में मतदाता पुनरीक्षण अभियान पर नाराज़गी जताई थी।
- नायडू के इन कदमों को एनडीए में दरार पड़ने का पूर्व संकेत माना जा रहा है। विशेषज्ञों ने कहा, अगर बिहार चुनाव के नतीजे भाजपा के अनुकूल नहीं आए तो नायडू कोई बड़ा कदम उठा सकते हैं।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 अगस्त। एक ऐसे कदम के अन्तर्गत, जो एनडीए गठबंधन में दरार को और गहरा कर सकता है, आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री और तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) प्रमुख एन. चंद्रबाबू नायडू ने केन्द्र सरकार को कड़े शब्दों में एक पत्र लिखा है। इस पत्र में उन्होंने चिंता जताई है कि अमेरिका द्वारा हाल ही में की गई टैरिफ वृद्धि का आंध्र प्रदेश के झींगा (श्रिम्प) और मत्स्य उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

मोदी सरकार को संबोधित इस पत्र में तटीय क्षेत्रों के उन किसानों के हितों की रक्षा के लिए तत्काल हस्तक्षेप की मांग की गई है, जो समुद्री खाद्य निर्यात पर अत्यधिक निर्भर हैं।

नायडू का यह पत्र ऐसे समय में आया है, जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अमेरिका के इस कदम पर अब तक चुप्पी साध रखी है, जबकि यह भारत के जलीय कृषि क्षेत्र, विशेष रूप से झींगा निर्यात में अग्रणी राज्य आंध्र प्रदेश, के लिए गंभीर आर्थिक नतीजों का कारण बन सकता है।

राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, यह घटनाक्रम टीडीपी और भाजपा नेतृत्व वाले एनडीए के बीच बढ़ते असंतोष का एक और संकेत है। हाल के हफ्तों में यह दूसरा अवसर है, जब नायडू ने खुलकर असहमति जताई है।

इससे पहले, नायडू ने बिहार में केन्द्र की विवादास्पद विशेष मतदाता पुनरीक्षण पहल को लेकर नाराजगी जताई थी। विपक्ष ने भी तीखे शब्दों में विशेष मतदाता पुनरीक्षण की आलोचना की थी तथा इसे, चुनाव से ठीक पहले, एक संवेदनशील राज्य में मतदाता सूची से छेड़छाड़ का प्रयास बताया था।

पिछले एक महीने में, नायडू ने कम से कम छह प्रमुख नीतिगत मुद्दों पर चिंता जताई है, जो संकेत देता है कि एक समय मजबूत रहा एनडीए का गठबंधन अब ढीला हो रहा है। नायडू की यह सतर्क, लेकिन रणनीतिक स्थिति भाजपा एवं विपक्ष दोनों के लिये ही इस बात का संकेत मानी जा रही है कि टीडीपी भविष्य के राजनीतिक समीकरणों को लेकर नए विकल्पों पर विचार कर रही हो सकती है।

आंध्र के मुख्यमंत्री के करीबी सूत्रों का कहना है कि नायडू "राजनीतिक हालात" पर गहराई से नज़र रखे हुए हैं, खासकर नवंबर में होने वाले बिहार विधानसभा चुनावों पर। एक शीर्ष टीडीपी पदाधिकारी ने इस संवाददाता को पुष्टि की कि "नायडू, बिहार चुनाव परिणामों के बाद ही, मोदी सरकार को भविष्य में समर्थन देते रहने के बारे में स्पष्ट रुख अपनाएंगे।"

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि नायडू के हालिया कदम एनडीए के क्षेत्रीय सहयोगियों में बढ़ती स्वायत्तता की प्रवृत्ति को दर्शाते हैं। हैदराबाद के एक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'रुस से तेल खरीदा तो आयात शुल्क और बढ़ायेंगे'

वाशिंगटन, 04 अगस्त। अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने सोमवार को धमकी दी है कि यदि भारत ने रूस से तेल खरीदना बंद नहीं किया तो वह भारतीय उत्पादों पर आयात शुल्क और बढ़ा देंगे।ट्रंप ने ट्रुथ सोशल पर एक पोस्ट में लिखा कि भारत को इस बात की चिंता नहीं है कि यूक्रेन में रूस कितने लोगों को मार रहा है। इस कारण, "मैं भारत द्वारा

- अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने फिर भारत को धमकी दी।

अमेरिका को दिये जाने वाले आयात शुल्क में बड़ी बढ़ोतरी करूँगा।"

अमेरिकी राष्ट्रपति ने आरोप लगाया कि भारत न सिर्फ रूस से बड़ी मात्रा में तेल खरीद रहा है, बल्कि उसमें से ज्यादातर तेल खुले बाजार में बेचकर भारी मुनाफा कमा रहा है।

उल्लेखनीय है कि अमेरिका ने 01 अगस्त से दुनिया के कई देशों पर अतिरिक्त आयात शुल्क लगाने की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ट्रंप की टैरिफ धमकी के जवाब में स्वदेशी का नारा दिया प्र.मंत्री मोदी ने

प्र.मंत्री ने एक रैली में कहा, हम वो सामान खरीदेंगे, जो एक भारतीय के पसीने से बना हो

- ट्रंप की टैरिफ धमकी पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कड़ा रुख अपनाया और निर्देश दिए कि रूस से कच्चे तेल की खरीद जारी रखी जाएगी।
- यूक्रेन युद्ध रोकने पर पुतिन के इन्कार के बाद ट्रंप ने भारत पर निशाना साधा और कहा कि भारत रूस से जो तेल खरीद रहा है उसी आय से रूस युद्ध कर रहा है।
- हालांकि, चीन भी रूस से बराबर तेल खरीद रहा है, पर, विश्व की इस दूसरी बड़ी अर्थव्यवस्था से टकराने की हिम्मत शायद अमेरिका में नहीं है। इसलिए अमेरिका व उसके समर्थक देश भारत पर निशाना साध रहे हैं।
- चूंकि, भारत एक बहुत बड़ा कन्ज़्यूमर बेस है, इसलिए सवाल यह है कि इतने बड़े उपभोक्ता बाज़ार की अनदेखी कर अमेरिका, भारत पर टैरिफ कब तक जारी रखेगा?

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4, अगस्त। अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप की टैरिफ धमकियों के बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक चुनौतीपूर्ण रुख अपनाते हुए, देशवासियों से स्थानीय उत्पाद खरीदने की अपील की और संकेत दिया कि भारत रूसी तेल की खरीद जारी रखेगा।

जानकार सूत्रों ने ब्लूमबर्ग को बताया, भारत सरकार ने देश की तेल रिफाइनरियों को रूसी तेल की खरीद रोकने का कोई निर्देश नहीं दिया है और इस बारे में कोई अंतिम निर्णय भी नहीं लिया गया है। सूत्रों के मुताबिक, सार्वजनिक और निजी, दोनों तरह की रिफाइनरियों को अपनी प्राथमिकता के अनुसार स्रोत चुनने की अनुमति है और कच्चे तेल की खरीद एक व्यावसायिक निर्णय बना हुआ है।

सप्ताहांत में पीएम मोदी ने वैश्विक अनिश्चितता के बीच भारत के आर्थिक हितों की रक्षा करने की आवश्यकता पर बल दिया। यह बयान ऐसे समय में आया है, जब अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप की सरकार ने भारत के निर्यातों पर 25 प्रतिशत टैरिफ लगा दिया है और चेतावनी दी है कि यदि भारत रूसी तेल की खरीद जारी रखता है तो और सख्त कदम उठाए जा सकते हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने शनिवार को उत्तर प्रदेश की एक रैली में कहा था, विश्व अर्थव्यवस्था अनेक आशंकाओं से गुजर रही है, एक अस्थिरता का माहौल है, "अब जो भी हम खरीदें, एक ही कसौटी होनी चाहिए, हम वही चीज़ें खरीदेंगे, जो एक भारतीय के पसीने से बनी है।"

यूक्रेन में युद्ध समाप्त करने के लिए रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन पर दबाव बनाने की कोशिशों के तहत अमेरिका ने अब भारत को भी निशाना बनाना शुरू कर दिया है। पिछले सप्ताह राष्ट्रपति ट्रंप ने ब्रिक्स सदस्यता और रूस के साथ घनिष्ठ संबंधों को लेकर भारत की तीखी आलोचना की और कहा, "वे अपनी मरी हुई अर्थव्यवस्थाओं को साथ लेकर डूब सकते हैं।"

यह बात अमेरिका की ओर से एक बड़े रुख परिवर्तन का संकेत है। अमेरिका ने वर्षों तक भारत और रूस के ऐतिहासिक संबंधों को नजरअंदाज़ करते हुए भारत को एशिया में चीन के मुकाबले संतुलन के रूप में देखा था। अब राष्ट्रपति ट्रंप इस रणनीति को त्यागते हुए, पुतिन पर दबाव बढ़ाने की राह पर हैं, जिन्होंने युद्ध समाप्त करने की अमेरिकी कोशिशों का विरोध किया है।

वाइट हाउस के उप प्रमुख स्टीफन मिलर ने रविवार को भारत पर भारी टैरिफ लगाने, अमेरिकी इमिग्रेशन सिस्टम के साथ धोखाधड़ी करने और रूस से चीन के बराबर तेल खरीदने का आरोप लगाया।

मिलर ने कहा, "राष्ट्रपति ट्रंप भारत और प्रधानमंत्री के साथ हमेशा शानदार संबंध चाहते रहे हैं, लेकिन अब हमें युद्ध की फंडिंग के विषय में सच्चाई का सामना करना होगा।"

मिलर ने कहा, "राष्ट्रपति ट्रंप सभी विकल्पों को खुला रखे हुए हैं,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

झारखंड के पूर्व मु.मंत्री शिबू सोरेन का निधन

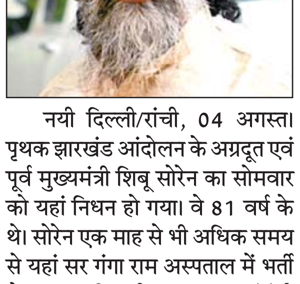

नयी दिल्ली/रांची, 04 अगस्त। पृथक झारखंड आंदोलन के अग्रदूत एवं पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन का सोमवार को यहां निधन हो गया। वे 81 वर्ष के थे। सोरेन एक माह से भी अधिक समय से यहां सर गंगा राम अस्पताल में भर्ती थे। उनका किडनी तथा हृदय संबंधी बीमारियों का इलाज चल रहा था। उन्होंने आज सुबह अस्पताल में ही अंतिम सांस ली।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को यहां गंगाराम अस्पताल जाकर झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि दी और उनके परिजनों से

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

कृत्रिम सुख की बजाये, हमेशा ठोस उपलब्धियों के पीछे समर्पित रहिये। -अब्दुल कलाम

एस.आई.आर. पर रार, आर या पार

आजकल बिहार की मतदाता सूचियों का एस आई आर (विशेष गहन पुनरीक्षण यानि स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन) चल रहा है। यह पूरे देश में सर्वाधिक चर्चा का विषय बना हुआ है। चुनाव आयोग के अनुसार एस आई आर सभी राज्यों के लिए भी किया जाएगा। अत: देशवासियों के लिए यह समझना आवश्यक है कि यह क्या है और इसका क्या प्रभाव होगा?

चुनाव आयोग के अनुसार एस आई आर, मतदाता सूचियों के शुद्धिकरण की प्रक्रिया है, जिससे मृत, स्थाई रूप से पलायन करने वालों और अयोग्य लोगों के नाम मतदाता सूचियों से हटाए जाते हैं। इसमें, पूरी मतदाता सूची नई बनाई जाती है और प्रत्येक व्यक्ति को नामांकन प्रपत्र भरकर बी एल ओ के पास जमा कराना होता है। बी एल ओ द्वारा इन सबको अपलोड किया जाता है। चुनाव आयोग के अनुसार हर उस व्यक्ति का नाम मतदाता सूची में होगा जो भारत का नागरिक है और 18 साल से ऊपर है। जिस तरह से धरातल पर बिहार में यह कार्य चल रहा है, उसे देखकर, सभी विपक्षी दल एस आई आर को केवल लोगों के नाम काटने की प्रक्रिया बता रहे हैं।

निर्वाचन आयोग ने प्राप्त प्रपत्रों के आधार पर प्रारूप मतदाता सूचियां का प्रकाशन 1अगस्त 2025 को कर दिया है। 24 जून 2025 को उपलब्ध मतदाता सूचियों में कुल 7.89 करोड़ नाम अंकित थे जबकि ड्राफ्ट मतदाता सूचियों में कुल 7.24 करोड़ नाम हैं। इसका मतलब यह हुआ कि कुल 65 लाख लोगों के नाम हटा दिए गए हैं। इस पूरी प्रक्रिया को दलगत राजनीति से ऊपर उठते हुए मतदाता की दृष्टि से देखने की आवश्यकता है।

प्रश्न यह नहीं है कि जिन मतदाताओं के नाम काटे जा रहे हैं, वे किस दल के हैं, अपितु यह कि भारत के प्रत्येक वयस्क नागरिक को मतदान के माध्यम से अपनी सरकार चुनने का अधिकार है या नहीं? यदि कोई भी कार्यवाही उन्हें मताधिकार से वंचित करने का काम कर रही है तो यह बहुत गंभीर बात है। यदि वास्तव में इसके कारण लाखों लोग अपने मताधिकार से वंचित होते हैं तो इसे रोकने की आवश्यकता है।

हम एस आई आर की प्रक्रिया को थोड़ा सिलसिले वार समझने का प्रयास करते हैं। चूंकि प्रत्येक वयस्क को मताधिकार प्राप्त है, सामान्यतया किसी भी राज्य में या क्षेत्र में वयस्क लोगों की संख्या वहां के मतदाता सूचियों में अंकित संख्या के बराबर होनी चाहिए। देश के अनेक राज्यों में मतदाताओं की संख्या, उस राज्य की अनुमानित वयस्क जनसंख्या से अधिक है। उदाहरण के लिए आंध्र प्रदेश में 102%, कर्नाटका में 108%, तेलंगाना में 116%, ओडिशा में 105% और पश्चिम बंगाल में यह 101% है। इनकी तुलना में बिहार में यह 97% है।

इसके कई कारण हो सकते हैं। कई बार यह होता है कि एक व्यक्ति जिसका नाम एक स्थान पर मतदाता सूची में अंकित है, वह किसी कारणवश दूसरे स्थान पर चला जाता है, तो मतदाता सूचियां के पुनरीक्षण के समय उसका नाम वहां भी जुड़ जाता है। इस प्रकार उसका नाम दो स्थान पर हो जाता है। वह यदि पुराने स्थान से नाम कटवाने का प्रार्थना पत्र देता है तो भी उसका नाम नहीं कटता है। मेरा स्वयं का जब 1995 में जयपुर से डूंगरपुर स्थानांतरण हुआ तो जयपुर में अपना नाम कटवाने के लिए, जिम्मेदार नागरिक की तरह आवेदन किया, किंतु इसकी कोई पुख्ता सूचना मुझे नहीं मिली। उसके बाद डूंगरपुर में कलेक्टर के पद का भार ग्रहण करने के बाद मैंने वहां की मतदाता सूची में अपना नाम अंकित करने हेतु प्रार्थना पत्र दिया और वहां अंकित भी हो गया। वहां मैंने मतदान भी किया। इसके बाद जब मैं जयपुर वापस आया और यहां नाम जुड़वाने का प्रयास किया तो यह जानकर आश्चर्य हुआ कि मेरा नाम तो यहां की मतदाता सूची में से काटा ही नहीं गया था। इस प्रकार लगभग एक वर्ष तक मेरा नाम दो स्थानों पर अंकित रहा। जब यह स्थिति एक आईएएस अधिकारी के साथ हो सकती है तो पता नहीं कितने अनगिनत व्यक्ति ऐसे होंगे जिनका नाम एक से अधिक स्थानों पर दर्ज होगा। तेजस्वी यादव को इसी बात पर तो नोटिस दिया जा रहा है।

अब हम जरा बिहार की ही बात कर लें। 24 जून 2025 को उपलब्ध मतदाता सूची में यह संख्या 7.89 करोड़ थी जबकि अनुमानित वयस्क जनसंख्या बिहार में 8.16 करोड़ थी। जब इस समय प्रारूप का प्रकाशन एक अगस्त 2025 को हुआ है तो अनुमानित वयस्क जनसंख्या 8.18 करोड़ की तुलना में निर्वाचकों की संख्या 7.24 करोड़ है जो कि कुल वयस्क जनसंख्या का 88% है। स्पष्ट है कि बिहार की वयस्क जनसंख्या की तुलना में मतदाताओं की संख्या 94 लाख कम हो गई है।

यह प्रकरण माननीय उच्चतम न्यायालय में लंबित है। वहां पर उसकी सुनवाई भी चल रही है। न्यायालय ने कहा है कि एस आई आर की प्रक्रिया, सभी योग्य मतदाताओं के नाम जोड़ने के लिए होनी चाहिए न कि लोगों के नाम काटने के लिए। जिस प्रकार से निर्वाचन आयोग धरातल पर काम कर रहा है, और इसके कई सबूत वीडियो और रिपोर्ट के द्वारा मीडिया में आए हैं, उससे तो यह लगता है कि निर्वाचन आयोग केवल मतदाताओं के नाम काटने के लिए यह काम कर रहा है। 24 जून, 2025 की मतदाता सूचियां में से, ड्राफ्ट मतदाता सूचियों में 65 लाख लोगों के नाम कम हुए हैं। आश्चर्य की बात है कि इसमें एक भी नया नाम नहीं जोड़ा गया। किसी मतदाता का नाम विदेशी नागरिक होने के आधार भी पर नहीं काटा गया है।

निर्वाचन आयोग के अनुसार जिन 65 लाख लोगों के नाम काटे गए हैं उनमें से 22 लाख मृतक हैं, 36 लाख ऐसे हैं जो स्थाई रूप से दूसरे स्थान पर चले गए या जिनकी कोई जानकारी नहीं है एवं 7 लाख ऐसे हैं जिनके नाम एक से अधिक स्थान में अंकित हैं। यह उल्लेखनीय है कि किसी भी व्यक्ति का नाम मतदाता सूची से हटाने से पूर्व उसकी सुनवाई करना आवश्यक है। ऐसा कुछ भी काम इस बार नहीं किया गया है। निर्वाचन आयोग यह कह रहा है कि जिन लोगों के नाम अंकित नहीं है, वे अपनी आपत्ति 31 अगस्त तक दे सकते हैं। यह समझना आवश्यक है कि जिन 7.24 करोड़ लोगों के नाम मतदाता सूची में उपलब्ध हैं, उनमें से भी अनेक ऐसे हैं जो निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित दस्तावेजों में से कोई भी एक देने में समर्थ नहीं हो पाएंगे एवं इसके कारण उनके भी नाम कट जाएंगे। ऐसे व्यक्तियों की संभावित संख्या कुछ भी हो सकती है। एक अनुमान के अनुसार सभी को जोड़कर लगभग डेढ़ करोड़ व्यक्तियों के नाम बिहार की मतदाता सूचियां से काट दिए जाने की संभावना है। ऐसा करना सर्वोच्च न्यायालय के उस आदेश के ठीक विपरीत है जिसके अनुसार लक्ष्य समावेश का होना चाहिए न कि अधिकाधिक निष्कासन का।

> **यदि इसी प्रकार की प्रक्रिया देश के सभी राज्यों में अपनाई जाएगी, जैसा कि निर्वाचन आयोग द्वारा कहा जा रहा है, तो संभावना है कि देश के 100 करोड़ मतदाताओं में से लगभग 10 करोड़ से अधिक मतदाता, मताधिकार से वंचित हो जाएंगे। इसका तो यही अर्थ होगा कि वयस्क होने के बाद भी वे भारत के किसी भी स्थान पर मत देने के योग्य नहीं माने जाएंगे। इतनी बड़ी संख्या किसी भी चुनाव में जीत हार के लिए निर्णायक सिद्ध होगी।**

जिन लोगों के नाम प्रारूप मतदाता सूची में शामिल हैं, उनमें से भी लाखों लोगों के नाम कटने की संभावना है। एक-एक विधानसभा क्षेत्र में 40 से पचास हजार मतदाताओं के नाम के आगे "not recommended" लिखा है।

प्रश्न यह भी है कि जिन व्यक्तियों के नाम प्रारंभ से मतदाता सूचियों में रहे हैं, वे सभी मताधिकार का उपयोग करते रहे हैं। यदि ये सब अवैध थे तो क्या इनके आधार पर चुनी गईं केंद्र और राज्य सरकारें अवैध और असंवैधानिक घोषित की जाएंगी? अब, एस आई आर के नाम पर नागरिकों से अपनी नागरिकता सिद्ध करने के लिए कहना अथवा उसकी आड़ में दस्तावेज मांगना किसी भी रूप में औचित्य पूर्ण नहीं लगता है। वैसे भी जिन दस्तावेजों को निर्वाचन आयोग ने नागरिकता के प्रमाण के रूप में मान्यता दी है, उनसे कैसे नागरिकता सिद्ध होती है, यह चुनाव आयोग द्वारा स्पष्ट नहीं किया जा रहा है। उदाहरण के लिए यदि किसी के पास भारतीय पासपोर्ट है, उसे भारतीय नागरिक मान लिया जाता है। मजे की बात यह है कि पासपोर्ट बनवाने के लिए नागरिकता का कोई प्रमाण पत्र नहीं मांगा जाता। इसी प्रकार लाखों, करोड़ों लोग जो सरकार के विभिन्न विभागों में नौकरी में थे या हैं उनसे भी नागरिकता का कोई प्रमाण नहीं मांगा गया। सबके द्वारा केवल इस बारे में स्व-घोषणा की गई कि वे भारतीय हैं, और उसी आधार पर उन्हें भारतीय मान लिया गया।

'आधार' को भी 11 दस्तावेजों में शामिल नहीं किया गया है जबकि अब लगभग सभी सरकारी कार्यों के लिए 'आधार' को अनिवार्य कर दिया गया है। इसका कारण निर्वाचन आयोग द्वारा यह बताया जा रहा है कि कई लोगों ने फर्जी आधार कार्ड बनवा रखे हैं। चुनाव आयोग ने यह किस प्रकार मान लिया कि अब जो 11 दस्तावेज चुनाव आयोग द्वारा चाहे जा रहे हैं, वे उसी तरह फर्जी नहीं बनवाए जा सकते हैं? जिस देश में डिग्रियां तक विश्वविद्यालय द्वारा फर्जी बनाई जा रही हों, वहां जन्म प्रमाण पत्र (स्वयम का या माता-पिता का) फर्जी बनाने में क्या बड़ी बात है? यदि ऐसा हुआ तो निर्वाचन आयोग की सारी प्रक्रिया का अर्थ ही क्या रह जाएगा?

निर्वाचन आयोग यह तर्क दे सकता है कि किसी को आपत्ति होने पर वह प्रमाण सहित अपील, निर्वाचन अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत कर सकता है। सामाजिक संगठनों को यह कार्य करने में सबसे बड़ी समस्या यह है कि निर्वाचन आयोग ने जिन व्यक्तियों के नाम काट दिए हैं, उनकी श्रेणी वार सूची सार्वजनिक नहीं की गई है। अत: उनका भौतिक सत्यापन नहीं किया जा सकता है। पुरानी और नई सूचियों का मिलान करके भी ऐसी जानकारी निकालना लगभग असंभव है, क्योंकि बिहार में बूथों की संख्या 73000 से बढ़ा कर कर 92000 कर दी गई है।

यदि वास्तव में निर्वाचन आयोग निष्पक्ष है और किसी वर्ग विशेष को मतदान अधिकार से वंचित करने का उद्देश्य नहीं है, तो फिर निर्वाचन आयोग को उन सभी लोगों की सूची जारी करनी चाहिए जिनके नाम जून, 2025 की मतदाता सूची में से हटा दिए गए हैं। ऐसा न करके, निर्वाचन आयोग ने अनावश्यक आशंकाओं को जन्म दिया है।

यदि इसी प्रकार की प्रक्रिया देश के सभी राज्यों में अपनाई जाएगी, जैसा कि निर्वाचन आयोग द्वारा कहा जा रहा है, तो संभावना है कि देश के 100 करोड़ मतदाताओं में से लगभग 10 करोड़ से अधिक मतदाता, मताधिकार से वंचित हो जाएंगे। इसका तो यही अर्थ होगा कि वयस्क होने के बाद भी वे भारत के किसी भी स्थान पर मत देने के योग्य नहीं माने जाएंगे। इतनी बड़ी संख्या किसी भी चुनाव में जीत हार के लिए निर्णायक सिद्ध होगी। सामान्यतया, हार-जीत में अंतर 2-3% का होता है। 10% से अधिक मतदाताओं के नाम कम होने से चुनाव का फैसला पूरी तरह उलट सकता है।

इतनी सारी आशंकाओं को देखते हुए सभी विपक्षी दलों ने संसद में इस पर चर्चा करने के लिए एवं सड़क पर आंदोलन करने की तैयारी कर ली है। इस बारे में चुनाव आयोग ने यदि स्वयं ने निर्णय नहीं लिया एवं सर्वोच्च न्यायालय ने भी एस आई आर की इस प्रक्रिया को नहीं रोका, तो देश में लोकतंत्र के समक्ष एक गंभीर संकट उत्पन्न होने की आशंका हो जाएगी। देश को इस समय निर्वाचन आयोग द्वारा ऐसे मोड़ पर खड़ा कर दिया गया है, जहां एस आई आर पर लड़ाई आर पार की होने वाली है। फिलहाल, सबकी निगाहें सर्वोच्च न्यायालय में 12-13 अगस्त, 2025 को होने वाली सुनवाई पर टिकी हैं।

-अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

पाकिस्तान की जुबान बोलती कांग्रेस

मदन राठौड़, भाजपा, प्रदेश अध्यक्ष

भारत ने बीते दो दशकों में आतंकवाद के खिलाफ एक लंबी और कठिन लड़ाई लड़ी है, लेकिन फर्क इस बात से पड़ा कि सत्ता में कौन था। 2004 से 2014 तक यूपीए सरकार की नरम, ढुलमुल और तुष्टिकरण की नीति ने देश को बार-बार लहूलुहान किया। मुंबई का 26/11 हमला जिसमें 166 निर्दोष नागरिक मारे गए, 2005 के दिल्ली धमाकों में 62 लोग मारे गए, 2008 में जयपुर में 63 और अहमदाबाद में 56 लोगों की जान चली गई। ये सिर्फ आंकड़े नहीं, उन मासूमों की कुर्बानी की कहानियाँ हैं जिनका कसूर सिर्फ इतना था कि वे उस वक्त उस जगह पर थे। और सबसे चिंताजनक बात यह थी कि ऐसी कितनी ही अनगिनत आतंकी घटनाएँ आए दिन देश के किसी न किसी हिस्से को लहूलुहान करती रहती थीं, जिनसे हर भारतीय के मन में डर और असुरक्षा का भाव गहराता चला गया। यूपीए के दौर में पूरे देश के नागरिकों के मन में हर वक्त यह डर बैठा रहता था कि न जाने कब और कहां धमाका हो जाए, कितने निर्दोष मर जाएँ।

सबसे शर्मनाक और दुखद पहलू यह था कि उस समय बाटला हाउस एनकाउंटर में मारे गए आतंकवादियों के लिए तो कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने आंसू बहाए, लेकिन क्या उन्होंने कभी दिल्ली, मुंबई, जयपुर या अहमदाबाद की सड़कों पर मारे गए निर्दोष नागरिकों के लिए आंसू बहाए? क्या कभी उन सैकड़ों घरों के उजड़ने का दर्द महसूस किया? यही यूपीए की नीति का असली चेहरा था - आतंकवादियों के लिए सहानुभूति और आम भारतीयों के जीवन के प्रति बेरुखी, जिसने पूरे देश का मनोबल गिराया और पाकिस्तान जैसे आतंक के प्रायोजक देश का हौसला बढ़ाया।

आज सोचिए, अगर मुंबई, जयपुर और अहमदाबाद के उन भीषण हमलों के बाद उसी वक्त ऑपरेशन सिंदूर जैसी निर्णायक कार्यवाही की गई होती, तो शायद पाकिस्तान को उसी समय सबक मिल गया होता और आतंकवाद की कमर टूट जाती। लेकिन सत्ता में रही कांग्रेस की नीति हमेशा आतंकवादियों के प्रति नरम रही, पाकिस्तान प्रेम इनके भीतर गहराई तक बैठा रहा, और इसी कारण देश बार-बार लहूलुहान हुआ।

2014 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरकार बनने के बाद आतंकवाद के खिलाफ भारत की नीति ही बदल दी गई। पहले हमला, फिर जवाब की बजाय घर में घुसकर जवाब देने की नीति आई। उरी हमले के बाद 2016 में सर्जिकल स्ट्राइक कर पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों को तबाह किया गया, पुलवामा हमले के बाद 2019 में बालाकोट एयरस्ट्राइक कर पाकिस्तान की धरती पर जैश-ए-मोहम्मद के अड्डों को नष्ट किया गया, और हाल ही में 2025 में पहलगाम आतंकी हमले के बाद ऑपरेशन सिंदूर चलाकर पाकिस्तान और पीओके में लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद और हिजबुल मुजाहिदीन के नौ कैंपों को मिट्टी में मिला दिया गया और पाकिस्तान को घुटनों पर ला दिया गया। आज पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय मंचों पर रो रहा है कि हमें मारा गया, लेकिन इधर भारत में कुछ लोग, कांग्रेस के नेता, ऑपरेशन सिंदूर की बारीकियां पूछ रहे हैं, हमारे कितने विमान गिरे? कितना नुकसान हुआ?

इस तरह हमारे देश के ऊपर ही सवाल उठा रहे हैं और हमारी सेना का मनोबल गिरा रहे हैं। क्या 1962, 1965 या 1971 की लड़ाइयों में किसी ने ऐसा बेहूदा सवाल पूछा था?

सबसे दुखद बात यह है कि अभी हाल ही में हुए पहलगाम आतंकी हमले में जब भारत ने पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब दिया, तब कांग्रेस के वरिष्ठ नेता चिदंबरम जैसे लोग यह बयान देने लगे कि कैसे पता चला कि आतंकवादी पाकिस्तानी थे? इस तरह के बयान सीधे-सीधे पाकिस्तान के पक्ष को मज़बूत करते हैं, क्योंकि पाकिस्तान तो यही दावा कर रहा है कि हमले में मारे गए आतंकी हमारे थे ही नहीं।

और जब भी भारत मजबूती से जवाब देता है, तभी कांग्रेस के नेता राष्ट्रविरोधी बयानों की झड़ी लगाकर देश की आवाज़ को कमजोर करने की कोशिश करते हैं, सेना के साहस पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की स्थिति को कमजोर करने की साज़िश रचते हैं। यही कांग्रेस का चाल, चलन और चरित्र हमेशा से रहा है आतंकवादियों के लिए नरम दिल, पाकिस्तान के लिए सहानुभूति और भारत के सुरक्षा बलों पर सवाल। यूपीए के समय गृह मंत्रालय जैसे महत्वपूर्ण पद जिनके हाथ में थे, उनकी नीति कैसी रही होगी, यह उनके हाल के बयानों से ही साफ दिखता है।

मोदी सरकार ने साफ कर दिया है कि अब भारत सिर्फ सहन नहीं करेगा, बल्कि हर हमले का जवाब पाकिस्तान की धरती पर जाकर देगा। स्टेट और नॉन-स्टेट एक्टर्स का फर्क खत्म कर दिया गया चाहे हमला कोई संगठन करे, अगर वह पाकिस्तान की शह पर होगा तो उसे पाकिस्तान प्रायोजित हमला माना जाएगा और जवाब भी उसी अंदाज में दिया जाएगा। नतीजा सबके सामने है - 2014 से 2024 के बीच आतंकी घटनाओं में 70 प्रतिशत से ज्यादा कमी आई, नागरिक हताहतों में 80 प्रतिशत तक की गिरावट आई और देश के बड़े शहरों में होने वाले हमलों में भी भारी कमी आई।

यही है नया भारत, जो दुश्मन के घर में घुसकर जवाब देता है। कांग्रेस को यह समझना होगा कि सेना पर सवाल उठाना, पाकिस्तान का बचाव करना और आतंकवादियों पर सहानुभूति दिखाना राष्ट्र को कमजोर करता है। हमें गर्व है कि मोदी सरकार की जीरो टॉलरेंस नीति ने भारत को आत्मविश्वासी, निर्णायक और शक्तिशाली बनाया है और यही नये भारत की सबसे बड़ी ताकत है।

-मदन राठौड़,
प्रदेश अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी, राजस्थान

मेड़ता सिटी में मीरा जयंती महोत्सव परवान पर

- **संत प्रकाशदासजी ने अपने उद्बोधन से गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने की मांग की**
- **महोत्सव में विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित**

मेड़ता सिटी, (निसं)। मीरा नगरी मेड़ता सिटी में मीरा जयंती महोत्सव परवान पर है। मीरा जयंती महोत्सव समिति अध्यक्ष जितेंद्र गहलोत, सचिव रवि प्रकाश कमेडिया, कोषाध्यक्ष सुरेंद्र बिड़ला सहित पदाधिकारी व कार्यकर्ता व्यवस्थाओं में जुटे हुए हैं। इस दौरान विभिन्न धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं।

मंदिर में मीरा बाई और ठाकुरजी की रजत रेवाड़ी के समक्ष विभिन्न समाज भजन मंडलियों द्वारा लगातार भजन कीर्तन किया जा रहा है। मीरा स्मारक राव दुदागढ़ में भी अनेक कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। इसी क्रम में रविवार रात्रि में श्रीकिशन देव छतरी महंत हरिनारायण दादू पंथी के सानिध्य में मीरा स्मारक में भक्ति संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय गौ ऋषि संत प्रकाशदास महाराज ने भजनों का गायन किया। मीडिया प्रभारी सुनील पुरी ने बताया कि इस दौरान मेड़ता विधायक लक्ष्मणराम कलरू, संतोष देवी कलरू, पालिकाध्यक्ष शोभा लाहोटी, संत धीरजराम पुष्कर रामस्नेही, साध्वी विनोद बाई सा आदि मौजूद रहे। इस दौरान संत प्रकाशदासजी ने गुरु भजनों के साथ भजन संध्या शुरू की जिसमें मीरा बाई, भगवान शिवजी, कृष्ण-राधा सहित अनेक देवी-देवताओं के भजनों का गायन किया। अनेक भक्ति मय, हास्य, व्यंग्य भजनों के माध्यम उपस्थित जन समुदाय को नाचने को मजबूर कर दिया। संत प्रकाशदासजी ने अपने उद्बोधन से गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने की मांग की। उन्होंने देश की सेना द्वारा ऑपरेशन सिंदूर द्वारा किए गए वीरतापूर्वक कार्य को आमजन को अवगत करवाया। देश में नारी शक्ति द्वारा किए वीरता पूर्वज कार्यों को बताया।

मेड़ता सिटी में मीरा जयंती महोत्सव में संतप्रकाशदास ने भजनों की प्रस्तुति दी।

महोत्सव अध्यक्ष जितेंद्र गहलोत, सचिव रविप्रकाश कमेडिया, कोषा अध्यक्ष सुरेंद्र बिड़ला, वरिष्ठ उपाध्यक्ष लखाराम मेहला, संरक्षक विक्रम शर्मा, हेमंत सामरिया, पुखराज गहलोत, रामेश्वर जांगिड़, विनोद टेलर, भजनदास नगर, दशरत सारस्वत, कैलाश गौड़, शेखर सांखला, रविंद्र गहलोत, ऋषि भाटी आदि समिति के पदाधिकारी कार्यकर्ता कार्यक्रमों की व्यवस्थाओं में जुट हुए हैं।

जैसलमेर में गिद्ध पक्षी पर जी.पी.एस. ट्रांसमीटर लगाने का काम हुआ

- **''रेप्टर इकोलॉजी इन द थार डेजर्ट'' नाम से शुरू हुआ शिकारी पक्षियों पर रिसर्च प्रोजेक्ट जैसलमेर में जारी है**
- **हाल ही में एक इजिप्शियन वल्चर और एक टॉनी ईगल पर ट्रांसमीटर लगाने का काम हुआ है**

जैसलमेर, (निसं)। वाइल्ड लाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया और राजस्थान वन विभाग ने संयुक्त रूप से थार के रैप्टर इकोलॉजी (शिकारी पक्षियों का परिस्थितिकी तंत्र) पर एक प्रोजेक्ट शुरू किया है। ''रेप्टर इकोलॉजी इन द थार डेजर्ट'' नाम से शुरू हुआ शिकारी पक्षियों पर रिसर्च प्रोजेक्ट जैसलमेर में जारी है और हाल ही में एक इजिप्शियन वल्चर और एक टॉनी ईगल पर ट्रांसमीटर लगाने का काम हुआ है।

वाइल्ड लाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया देहरादून के वैज्ञानिक वरुण खेर ने बताया कि इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य थार क्षेत्र में पाए जाने वाले शिकारी पक्षियों जैसे बाज, मृत पशुओं को खाने वाले गिद्धों (स्कैवेंजर वल्चर-मृत भक्षी गिद्ध) की पारिस्थितिकी को समझना है। इस रिसर्च के तहत पहली बार थार क्षेत्र में रैप्टर प्रजातियों पर जीपीएस ट्रांसमीटर आधारित टेलीमेट्री अध्ययन शुरू किया गया है। उन्होंने बताया कि जैसलमेर का डेजर्ट नेशनल पार्क रैप्टर पक्षियों के लिए देश का बहुत ही महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जहां इनकी संख्या देश के अन्य हिस्सों की तुलना में बहुत अधिक है। यह अध्ययन इन प्रजातियों की आवाजाही, निवास स्थान, प्रजनन व्यवहार और खतरों को समझने में मदद करेगा।

जैसलमेर में स्थित राष्ट्रीय मरु उद्यान (डेजर्ट नेशनल पार्क) गिद्ध और अन्य शिकारी पक्षियों के लिए काफी खास है। यहां भारत में पाए जाने वाले नौ गिद्धों की प्रजाति में आठ प्रजातियां पाई जाती हैं। इसी पर नजर रखते हुए भारतीय वन्यजीव संस्थान देहरादून ने राजस्थान वन विभाग की सहायता से इन शिकारी पक्षियों पर अध्ययन के लिए एक प्रोजेक्ट शुरू किया है। जिसका नाम ''रेप्टर इकोलॉजी इन द थार डेजर्ट'' रखा गया है।

गणेश महोत्सव के लिये इको फ्रेंडली प्रतिमाएं बनाई

भीलवाड़ा, (निसं)। धर्म एवं समाज सेवा के लिए समर्पित श्रीगणेश उत्सव प्रबंध एवं सेवा समिति भीलवाड़ा के तत्वावधान आगामी 10 दिवसीय गणेश महोत्सव की समरसता 27 अगस्त से शुरू होगी। समिति द्वारा इंदौर के मूर्तिकारों ने भगवान गणपति की आकर्षक मल्टी कलर प्रतिमाएं स्थानीय स्तर पर तैयार करने का कार्य पूरा कर लिया है।

समिति के मीडिया प्रभारी महावीर समदानी के अनुसार गत 30 वर्षों से गणेश महोत्सव मना रही समिति के द्वारा हर वर्ष भगवान गणपति की मूर्ति स्थानीय मांग के अनुसार तैयार कराई जाती है। इस बार 10 दिवसीय आयोजन 27 अगस्त गणेश चतुर्थी बुधवार से छह सितंबर शनिवार अनंत चतुर्दशी के दिन विसर्जन के साथ संपन्न होगा 1893 में बाल गंगाधर तिलक ने गणेश चतुर्थी को एक सार्वजनिक उत्सव के रूप में मनाने की शुरुआत की जिसका उद्देश्य लोगों को एकजुट करना और ब्रिटिश शासन के खिलाफ राष्ट्रीय भावना को बढ़ावा देना था। उन्होंने गणेश उत्सव को एक मंच के रूप में इस्तेमाल किया जहां देश भक्ति के गीत गाए जाते थे। राष्ट्रवादी विचारों का प्रचार किया जाता था। गणेश महोत्सव के तहत सभी जातियों, धर्मों और समुदाय के लोगों को एक मंच पर लाना है। ऐसे उत्सवों से राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्रवादी भावनाओं को बढ़ावा मिलता है।

10 दिवसीय गणेश महोत्सव के माध्यम से ये भारतीय संस्कृति और परंपराओं को पुनर्जीवित करने का मंच बनता जा रहा है। इस त्यौहार को एक ऐसे मंच के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। जहां लोग अपनी संस्कृति और हेरिटेज को मना सके।

राशिफल मंगलवार 5 अगस्त, 2025

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, ज्येष्ठा नक्षत्र दिन 11:23 तक, ऐन्द्रयन योग प्रात: 7:24 तक, विष्टि करण दिन 1:13 तक, चन्द्रमा आज दिन 11:23 से धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-कन्या, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग दिन 11:23 तक है। कुमार योग दिन 11:23 से दिन 1:13 तक है। आज पवित्र एकादशी व्रत, मंगला गौरी पूजन है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:15 से 10:54 तक, लाभ-अमृत 10:54 से 2:12 तक, शुभ 3:51 से 5:29 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:57, सूर्यास्त 7:08

मेष
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। पारिवारिक परेशानियों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित समस्या हो सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

वृष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। व्यावसायिक आय में वृद्धि हो सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है।

मिथुन
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। दिनचर्या में सुधार होगा। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या
आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

तुला
आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

धनु
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

मकर
आर्थिक/वित्तीय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सार-समाचार

कृष्ण की बाल लीलाओं का प्रसंग सुनाया

राजलदेसर (निसं)। कस्बे की श्रीनाथ नगर गौशाला में महिला कार्य समिति की ओर से गौ सेवार्थ श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया जा रहा है जिसमें कथा वाचक पंडित पवन कुमार बोहरा ने कहा भागवत कथा सुनने से नहीं भागवत कथा में बताए गए उपदेश को अपने जीवन में उतारे इस अवसर पर भगवान श्री कृष्ण की विभिन्न बाल लीलाओं के बारे में गुणगान किया। इस अवसर पर गौशाला परिसर में महिला कार्य समिति की ओर से श्रावणी महोत्सव के तहत मेला का भी आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न प्रकार के खाने पीने के स्टॉल लगाए गए जिसमें महिलाओं ने जमकर खरीदारी की एवं झूले भी लगाए गए। कार्यक्रम के तहत महिला कार्य समिति की ओर से गौ माता को गुड खिलाया गया इस अवसर पर महिला कार्य समिति की अध्यक्ष शांति देवी राजपुरोहित ने बताया महिला कार्य समिति की ओर से प्रतिवर्ष इस तरह का कार्यक्रम किया जाता है एवं हर अमावस्या पर सत्संग का भी आयोजन किया जाता है जिसमें गौ सेवार्थ जो भी राशि आती है गौशाला में भेंट की जाती है। इस मौके पर कथा के मुख्य यजमान नंदलाल दर्जी, पूर्व मंत्री पवन बोथरा, मालचंद पुरोहित, पूनम चंद्र गर्ग, सागरमल सुथार, बजरंग लाल भाटिया, पवन शर्मा, लालचंद पांडे, सत्यनारायण राजपुरोहित, रामावतार पांडे, सुभाष मारू, भंवरलाल नाई , मैनेजर राजेंद्र शर्मा आदि गौशाला के कर्मचारी एवं महिला कार्य समिति की सदस्य उपस्थित रही।

हर-हर महादेव के नारों से गूंजा कस्बा

बीदासर (निसं)। श्रावन माह के अंतिम सोमवार को कस्बा शिव भक्ति के रंग में रंग गया। कस्बे की गलियों व मोहल्लों से 15 किलोमीटर दूर निकटवर्ती गांव गोपालपुरा के डुंगर बालाजी स्थित सरोवर का जल लेकर कावड़ियों के अनेक जत्थे जुलूस व डीजे के साथ निकले तो पुरा कस्बा हर हर महादेव के नारों से गुंजायमान हो उठा। जगह जगह सैकड़ों कावड़ियों का श्रद्धालुओं ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। गोपालपुरा के सरोवर से पैदल कावड़ियों जत्थे में लगभग तीन सौ महिलाओं व दो सौ युवकों के कावड़ियों का जत्था काशीपुर बालाजी धाम से डीजे की धुन पर नाचते झुमते जुलुस के साथ कस्बे के मुख्य मार्गों से होते हुए दरीबा के बाबा भूतनाथ महादेव मंदिर में पहुंचकर पवित्र जल से शिवलिंग का अभिषेक किया। जुलुस में विभिन्न देवी देवाओं की झांकिया आकर्षण का केंद्र रही। कावडियों का विशाल जुलुस देखने के लिए जगह जगह पर नगरवासियों का हुजुम उमड पडा। वही कस्बे के अन्य शिवालयों में बाबा भोलेनाथ के जय जयकारों से गुंज उठा। कस्बे के मुख्य बाजार स्थित शिवालय, भूतनाथ महादेव मंदिर, बैरी चैक स्थित हनुमान मंदिर शिवालय, बाबा भोलेनाथ अखाड़ा शिवालय, उतरादा बास गोगा मेड़ी शिवालय, वार्ड एक स्थित राठौड़ शिव मंदिर सहित अनेक शिवालयों में सुबह से ही शिव भक्तो व कावड़ियों का आने का क्रम शुरू हो गया।

रुद्राभिषेक महायज्ञ का आयोजन

पाटन (निसं)। निकटवर्ती ग्राम पंचायत महावा में प्रसिद्ध धार्मिक स्थल घुघाड़ी धाम में सोमवार को पार्थिव शिव रुद्राभिषेक महायज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में क्षेत्रभर से उमड़े श्रद्धालुओं ने आस्था और श्रद्धा के साथ भाग लिया। 51 दंपतियों ने रुद्राभिषेक अनुष्ठान में वैदिक विधि-विधान से भाग लिया। पूरे कार्यक्रम का संचालन पंडित भानु प्रकाश शास्त्री एवं श्री श्री 108 बिहारी दास जी महाराज के सान्निध्य में हुआ। विद्वान ब्राह्मणों द्वारा मंत्रोच्चारण के साथ भगवान शिव का रुद्राभिषेक कर पुण्य लाभ अर्जित किया गया। सुबह से ही भगवान शंकर की पूजा-अर्चना, जलाभिषेक, दुग्धाभिषेक तथा विभिन्न द्रव्यों से रुद्राभिषेक की श्रृंखला चली।पूजा उपरांत विशाल महाआरती का आयोजन हुआ, जिसके पश्चात भगवान को भोग अर्पित कर उपस्थित श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया गया। कार्यक्रम की विशेष शोभा तब बढ़ी जब दाऊधाम से पधारे संत भोला शंकर दास महाराज ने अपने संतवाणी से श्रद्धालुओं को भक्ति, सदाचार एवं समाज सेवा का संदेश दिया।इसके पश्चात भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें भक्तों ने पंगत में बैठकर प्रसादी ग्रहण की। श्रद्धालुओं ने मंदिर में धूप-दीप अर्पित कर अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु भगवान शिव से प्रार्थना की।

रिटर्निंग अधिकारी नियुक्त

सीकर (निसं)। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं जिला कलेक्टर मुकुल शर्मा ने आदेश जारी कर सीकर जिले की पंचायत समिति फतेहपुर के सदस्य के उप चुनाव के निर्वाचन के लिए राजस्थान पंचायती राज निर्वाचन नियम 1994 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए रिटर्निंग अधिकारी एवं सहायक रिटर्निंग अधिकारी नियुक्त किये है। आदेशानुसार फतेहपुर उपखण्ड अधिकारी एवं उपखण्ड मजिस्ट्रेट फतेहपुर को रिटर्निंग अधिकारी, तहसीलदार फतेहपुर को सहायक रिटर्निंग अधिकारी नियुक्त किया गया है।इसी प्रकार सीकर जिले की नगर पालिका खण्डेला के सदस्य वार्ड संख्याक 23 के उप चुनाव के निर्वाचन के लिए रिटर्निंग अधिकारी एवं सहायक रिटर्निंग अधिकारी नियुक्त किये है। आदेशानुसार खण्डेला उपखण्ड अधिकारी एवं उपखण्ड मजिस्ट्रेट खण्डेला को रिटर्निंग अधिकारी, तहसीलदार खण्डेला को सहायक रिटर्निंग अधिकारी नियुक्त किया गया है।

भगवान शिव का जलाभिषेक किया

पाटन (निसं)। सावन के पवित्र महीने में भक्ति भाव से ओतप्रोत वातावरण में आज भुदोली गांव के सभी शिवालयों में भगवान शंकर का विधिवत जलाभिषेक किया गया। मंदिरों में भक्तों की भारी भीड़ उमड़ी और धार्मिक आयोजनों का आयोजन हुआ। खास तौर पर, खोरा धाम के श्रद्धालु प्रदीप सिंह ने हरिद्वार से पैदल नौ दिन की कठिन यात्रा करके कावड़ लेकर भगवान शंकर का जलाभिषेक किया। उनके गांव लौटने पर ग्रामीणों ने जगह-जगह फूल-मालाओं और डीजे के साथ उनका भव्य स्वागत किया।खोरा स्थित शिवालय मंदिर में प्रदीप सिंह द्वारा हरिद्वार से लाई गई पवित्र गंगाजल से भगवान शिव का जलाभिषेक पूरे विधि-विधान के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर पूरा क्षेत्र शिवमय हो उठा।स्वागत कार्यक्रम में समाजसेवी रोहिताश खोरा, ओमप्रकाश ठेकेदार, विजेंद्र सिंह, रामेश्वर लाल भडाणा, राज खोरा, दौलत सिंह खोरा, सहित दर्जनों ग्रामीण मौजूद रहे।

अलमारी भेंट की

रतनगढ़ (निसं)। नव पदोन्नत प्राचार्यों नंदलाल स्वामी ने सोमवार को मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय रतनगढ़ में अलमारी भेंट की। मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी संदीप कुमार व्यास ने बताया कि ब्लॉक के नव पदोन्नत प्राचार्यों ने सीबीईओ कार्यालय में एक अलमारी भेंट की है इस पर व्यास ने प्राचार्यों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी उमेश कुमार जाखड़, अरविंद कुमार शर्मा,शिशुपाल घुघरवाल, पूनम चन्द महर्षि,शुभकरण शर्मा, राधाकृष्ण पीपलवा, विरेन्द्र कुमार जायसवाल, सुभाष चन्द्र, बाबूलाल गुर्जर, राजेन्द्र शर्मा व नन्दलाल स्वामी उपस्थित रहे।

शिविर में 70 यूनिट रक्त संग्रहित

सीकर (निसं)। स्थानीय फतेहपुरी गेट स्थित राम प्रताप वल्लभ के मन्दिर मे दीपक त्रिवेदी स्मृति संस्थान द्वारा आयोजित दशवा रक्त दान शिविर का आयोजन किया गया।जानकारी देते हुए संस्थान के उमेश त्रिवेदी ने बताया कि शिविर मे मित्तल ब्लड बैंक और जैन ब्लड बैंक के द्वारा लगभग, 70 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। शिविर मे सीकर विधायक राजेंद्र पारीक, पूर्व ए डी एम ईश्वर सिह राठौड़ ,वैद्य ताराचंद, वरिष्ठ पत्रकार हुलाश तिवाडी, दिनेश त्रिवेदी, रतन तिवारी, विनोद दाधीच,कमल डोलिया, उमेश मिश्रा, अमित पंसारी, पंकज, संदीप, रमेश त्रिवेदी, महेश त्रिवेदी रामलाल शर्मा,बजरंग सिंह, बनवारी शर्मा, सीताराम शर्मा, मनीष पारिक सहित कई गण मान्य लोग शिविर मे उपस्थित रहे।

बहनों का सुरक्षा-समान कार्यक्रम आज

सीकर (निसं)। उपनिदेशक महिला एवं बाल विकास विभाग सीकर सुमन पारीक ने बताया कि 5 अगस्त 2025 मंगलवार को प्रात:11 बजे से दोपहर 2 बजे तक बहनों का सुरक्षा-सम्मान कार्यक्रम का आयोजन जिला परिषद सभागार, कलेक्ट्रेट परिसर सीकर में किया जायेगा जिसमें मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा द्वारा वी.सी के माध्यम से आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं, सहायिकाओं से संवाद किया जायेगा।

तेतरवाल ने एसीबीईओ का पद ग्रहण किया

बीदासर (निसं)। कस्बे के मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय में गत दो वर्ष तीन महिनों से रिक्त चल रहे एसीबीईओ प्रथम का पद पर बजरंग लाल तेतरवाल को लगाया गया है। तेतरवाल ने सोमवार को रिक्त चल रहे एसीबीईओ प्रथम पद पर कार्यग्रहण कर लिया है। तेतरवाल कार्यग्रहण के समय सीबीईओ किशनलाल गहनोलिया, राकेश आत्रे, दुलाराम प्रजापत, यमुना शर्मा, अर्जुन दास अनेक कार्मिक उपस्थित थे।

गरीब परिवार का आशियाना गिरा

राजलदेसर (निसं)। राजलदेसर कस्बे में बारिश के बाद अब मकान में खतरा मंडराने लग गया है। कस्बे के वार्ड नं 23. में शालुराम पुत्र बिरदा राम मेघवाल का दो रोज पूर्व बुजुर्ग दंपति जैसे तैसे अपना जीवनयापन करके गुजारा कर रहे थे लेकिन कुदरत का कहर इस तरह से बरसा की रात्रि को अपने मकान से बाहर आए थे कुछ समय बाद तीन मकान एक साथ गिरे जिससे बड़ा हादसा होते हुए बच गया। साथ ही लाखों रुपए के मकान गिरकर मलबे में बदल गए। वहीं खाने पीने का राशन का सामान कपड़े पलंग आदि हजारों रुपए के समान भी मलबे में दब गया जिससे गरीब परिवार के खाने पीने का भी संकट गहरा गया एवं उनका रो-रो कर बुरा हाल था इसी प्रकार वार्ड नं 26 में एक बीमार व्यक्ति हनुमानमल कामड़ जो घर में लाइट नहीं होने के कारण अपनी पत्नी के साथ आंगन में बैठा हुआ था।

अचानक एक कमरा रसोई गिर गए जिससे उनका खाने-पीने का सामान पूरी तरह से नीचे दब गया एवं मकान का भी हजारों रुपए का नुकसान हुआ लेकिन कुछ मिनट के लिए बड़ा हादसा होते हुए टला वर्तमान में हनुमान मल स्वयं बीमार चल रहा है एवं उनकी धर्मपत्नी मंदबुद्धि होने के कारण दवाई के भी पैसे खर्च होते हैं साथ ही इनकम के साधन भी कम होने के कारण घर का गुजारा करना भी कठिन हो रहा है।

सामाजिक कार्यकर्ता कालूराम तंवर ने जैसे ही इन दोनों परिवारों के मकान गिरने की खबर मीडिया को दी तो मौके पर जाकर उनके हालात का जायजा लिया लेकिन दोनों गरीब परिवार अपने आप को आंसुओं की धारा से रोक नहीं सके वही कालूराम तंवर का कहना है सरकार की अनेको योजनाएं चलती है लेकिन गरीब परिवारों को इन योजनाओं का लाभ नहीं मिलता पैसे वाले लोगों को इनका लाभ मिलता है जिससे गरीब परिवार दर-दर ठोकरे खाता है। उन्होंने प्रशासन एवं भामाशाह से अपील की है गरीब परिवार की मदद के लिए आगे आए।

राजलदेसर कस्बे में बारिश के बाद मकान गिर गया।

कलेक्टर ने समीक्षा बैठक ली

सीकर, (निसं)। जिला कलेक्टर मुकुल शर्मा की अध्यक्षता में साप्ताहिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न विभागीय कार्यों की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। बैठक में जिला कलेक्टर शर्मा ने मुख्यमंत्री आवास पर प्राप्त जन सुनवाई के प्रकरणों के समयबद्ध निस्तारण पर जोर देते हुए कहा कि पुलिस, राजस्व, पीडब्ल्यूडी, जिला परिषद एवं नगर परिषद जवाब भिजवाना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि विभागीय अधिकारी जर्जर भवनों की रिपोर्ट तत्काल जिला स्तरीय समिति को भिजवाना सुनिश्चित करें। उन्होंने बैठक में अनुपस्थित रहने पर श्री कल्याण चिकित्सालय के प्रमुख चिकित्सा अधिकारी को नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। जिला कलेक्टर शर्मा ने हर घर तिरंगा अभियान की तैयारियों की समीक्षा करते हुए शिक्षा विभाग, पर्यटन विभाग और राजीविका को अभियान को सफलतापूर्वक संपन्न कराने के निर्देश दिए। बैठक में बजट घोषणाओं के अंतर्गत कुसुम योजना, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना, सोलर योजना, कृषि एवं ऊर्जा विभाग की आरडीएसएस की प्रगति की समीक्षा की गई।

शहीद राजेंद्र बगड़िया का सैनिक सम्मान के साथ अंतिम संस्कार हुआ

- शहीद की शहादत पर युवाओं और ग्रामीणों ने करीब 10 किलोमीटर तक निकाली तिरंगा यात्रा
- भारत माता के जयकारे और जब तक सूरज चांद रहेगा राजेंद्र बगड़िया का नाम रहेगा के जयघोष से गूंजा धोद इलाका

सीकर (निसं)। जिले के धोद इलाके के नागवा गांव के सशस्त्र सीमा बल में तैनात शहीद राजेंद्र बगड़िया का पार्थिव देह आज सुबह धोद थाने पहुंचा। जहां से सेना के वाहन में शहीद के पार्थिव देह को ससम्मान रखकर ग्रामीण और युवाओं ने पैतृक गांव नागवा तक करीब 10 किलोमीटर की तिरंगा यात्रा निकाली।

तिरंगा यात्रा के दौरान पूरा धोद इलाका भारत मां के जयकारे और जब तक सूरज चांद रहेगा शहीद राजेंद्र बगडिया का नाम रहेगा के जयघोष से गूंजायमान हो उठा। शहीद राजेंद्र बगड़िया की शहादत में निकाली गई तिरंगा यात्रा धोद थाने से पैतृक गांव नागवा पहुंची। जहां पारिवारिक रस्म निभाने के बाद शहीद राजेंद्र बगडिया का सैनिक सम्मान से अंतिम संस्कार किया गया। इस दौरान शहीद को श्रद्धांजलि और पुष्पचक्र अर्पित करने के लिए सशस्त्र सीमा बल के सैन्य अधिकारी और जवान भी मौजूद रहे। इसके साथ ही सीकर एडीएम रतन कुमार, पीसीसी चीफ गोविंद सिंह डोटासरा, धोद विधायक गोवर्धन वर्मा, कांग्रेस जिला अध्यक्ष सुनीता गठाला सहित बड़ी संख्या में स्थानीय जनप्रतिनिधि और सैकडो ग्रामीण मौजूद रहे।

सीकर जिले के धोद थाना इलाके के नागवा निवासी सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) में तैनात जवान राजेंद्र बगडिया की जम्मू कश्मीर में ड्यूटी के दौरान शनिवार अलसुबह पहाड़ी इलाके में पैर फिसलने से नीचे गिरने से देहांत हो गया था। जवान राजेंद्र बगडिया जम्मू कश्मीर के डोडा के गंडोह इलाके में सशस्त्र सीमा बल की 7 बटालियन में तैनात था। जवान राजेंद्र बगडिया सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) में 2012 में भर्ती हुए थे। जिनकी पोस्टिंग वर्तमान में जम्मू कश्मीर के डोडा क्षेत्र में गंडोह क्षेत्र में थी।

जवान राजेंद्र बगडिया की शनिवार अलसुबह ड्यूटी के दौरान पहाड़ी इलाके में पैर फिसल कर नीचे गिरने से मौत हो गई। मौत की सूचना पर उनके पैतृक गांव में शौक की लहर छा गई। शहीद का पार्थिव देह धोद थाने पहुंचा। जहां से करीब 10 किलोमीटर की शहीद के सम्मान में तिरंगा यात्रा निकाली गई। इसके बाद पैतृक गांव में सैन्य सम्मान के साथ अंत्येष्टि हुई। शहीद जवान राजेंद्र बागडिया के पिता रामनिवास बगडिया गांव में ही खेती का काम करते हैं। वहीं माता भंवरी देवी गृहणी है और छोटा भाई नरेंद्र वर्तमान में विदेश में काम करता है। शहीद राजेंद्र बगड़िया के दो बेटियां और एक बेटा है।

चूरू में सोमवार को श्रावण माह का चौथा और अन्तिम सोमवार है। सुबह 5 बजे से ही चूरू के सभी शिवालयों में भोले को रिझाने के लिए भीड़ लगी रही। महिलाओं व पुरूषों ने अन्तिम सोमवार का व्रत रखकर भगवान शिव की पुजा अर्चना की। और शिवलिंग पर दुध, जल, दही, पुष्प, चन्दन, पंचामृत दुब आदि चढ़ायें। मन्दिरों में दिन भर भजनों व रूद्राभिषेक का दौर चला। इस अवसर पर श्रावण माह के अन्तिम सोमवार को मन्दिरों को अनेक प्रकार के फुलों से सजाया गया। सोमवार को कई जगह बर्फ का श्रृंगार भी किया गया। भक्तों ने अपने परिवार के सदस्यों की लंबी उम्र और सुख समृद्धि की कामना की। शाम को मन्दिरों में महाआरती की गई।

वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित

सीकर, (निसं)। शहीद इकबाल अली राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मरडाटू छोटी में रविवार को शहीद इकबाल अली की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। विद्यालय की प्रधानाचार्य सुमन चाहर ने जानकारी देते हुए बताया कि इस अवसर पर विद्यालय स्टाफ, छात्र-छात्राओं व ग्रामीणों ने शहीद की शहादत को याद करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम में शहीद के पुत्र अरमान अली ने विद्यालय के छात्र-छात्राओं को स्टेशनरी वितरित कर उन्हें पढ़ाई में निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। इस दौरान विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया गया। श्रद्धांजलि सभा में वरिष्ठ अध्यापक महिपाल, धर्मेंद्र, हुलाश चंद्र जांगिड, रामस्वरूप, राजेंद्र, गोविंद सहित समस्त विद्यालय स्टाफ, एसडीएमसी सदस्य, अभिभावक, ग्रामीणजन एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में सीआरसी व बीआरसी प्रशिक्षण आयोजित

चूरू (निसं)। सोमवार को जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डाईट की और से सीआरसी और बीआरसी समन्वयकों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं डाईट प्राचार्य डॉ गोविन्द सिंह राठौड की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस अवसर पर राठौड ने बताया कि इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) की मूल अवधारणाओं एवं उसके क्रियान्वयन को लेकर जागरूकता बढ़ाना है। कार्यक्रम में सीएमडीई प्रभागाध्यक्ष कुसुम शेखावत, उप प्राचार्य डाईट नरेंद्र उपाध्याय, आईएफ आईसी प्रभागाध्यक्ष डॉ. विजय लक्ष्मी शेखावत एवं राज्य संदर्भ व्यक्ति सचिन ढांडा ने सहभागिता निभाई और एनईपी के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से जानकारी दी। एनईपी 2020 भारत की शिक्षा व्यवस्था में ऐतिहासिक बदलाव लाने वाली नीति है।

इसका मुख्य उद्देश्य 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा को अधिक समावेशी, लचीला, बहु-आयामी और समग्र बनाना है। इसमें नई स्कूली संरचना लागू की गई है, जो बच्चे के शारीरिक और मानसिक विकास के अनुसार पाठ्यक्रम को वर्गीकृत करती है। प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षा को प्राथमिकता दी गई है, ताकि बच्चा मूलभूत अवधारणाओं को बेहतर समझ सके। शिक्षा नीति के मूल में बचपन में अच्छी देखभाल और पूर्व-प्रारंभिक शिक्षा को मज़बूती देने पर जोर है। कक्षा 6 से कौशल शिक्षा और कोडिंग की शुरुआत की जाएगी। बोर्ड परीक्षाएं अधिक व्यवहारिक एवं योग्यता आधारित होंगी। सतत मूल्यांकन की प्रक्रिया को अपनाया जाएगा ताकि बच्चों की वास्तविक क्षमताओं का आकलन किया जा सके।

उच्च शिक्षा में मल्टीपल एंट्री-एग्जिट सिस्टम, क्रेडिट बैंक की व्यवस्था, और संस्थानों की ऑटोनॉमी जैसे सुधार लाए गए हैं। शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण को सतत और समकालीन बनाने की बात कही गई है ताकि वे समयानुसार स्वयं को अपडेट करते रहें। मूल्य आधारित शिक्षा, नैतिकता, राष्ट्रीयता, और स्थानीय संस्कृति को भी पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है।

डिजिटल शिक्षा, ई-कंटेंट, और तकनीक के उपयोग को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया गया है। इस प्रशिक्षण में सभी प्रतिभागियों ने गहरी रुचि दिखाई और एनईपी के महत्व को समझा। उन्होंने इसे अपने कार्यक्षेत्र में लागू करने हेतु प्रतिबद्धता व्यक्त की। इस प्रकार यह कार्यशाला एनईपी 2020 को जमीनी स्तर पर सफलतापूर्वक लागू करने की दिशा में एक प्रभावी कदम सिद्ध हुई।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डाईट की और से सीआरसी और बीआरसी समन्वयकों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

सार-समाचार

विधायक गोदारा ने जनसुनवाई की

रतनगढ़ निसं)। रतनगढ़ विधायक पूसाराम गोदारा ने शहर एवं देहात ब्लॉक कांग्रेस कार्यालय विधायक आवास पर जनसुनवाई की। विधानसभा क्षेत्र रतनगढ के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र से आए लोगों ने अपनी जनसमस्याएं लेकर विधायक की जनसुनवाई में पहुंचे। विधायक ने एक-एक व्यक्ति की समस्या सुनकर जल्द समस्या समाधान का आश्वासन दिया। इस दौरान ग्राम सिमसिया, दाउदसर, बुधवाली, धातरी, आदि गांवों में जलभराव की समस्या से अवगत करवाया गया। जिसपर विधायक ने सम्बन्धित अधिकारियों को पुख्ता इंतजाम कर जलभराव की समस्या के निवारण के निर्देश जारी किए। इसके अलावा आपणी योजना एवं पीएचडी से पेयजल सप्लाई सम्बन्धित समस्याओं का निवारण मौके पर ही किया गया। विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित के लिए आरडी एसएस योजना में स्वीकृत अतिरिक्त ट्रांसफार्मर व ढाणी कनेक्शन शीघ्र लगाने के निर्देश विद्युत विभाग को दिए गए। रतनगढ़ कस्बे के वार्ड संख्या 10 11 में रास्ते में गढ़े भरने सहित अम्बेडकर नगर में जलभराव की समस्या के निवारण के निर्देश जारी किए गए। विधायक की अनुशंसा पर राज्य सरकार द्वारा मालासी से माताजी डूंगरी सानण वाया भोजाणा की ढाणी सड़क की स्वीकृति जारी करने पर ग्रामीणों द्वारा विधायक का सम्मान गुलदस्ता भेंट करके किया गया। इस दौरान अरविंद चाकलान, केपीएस संस्था निदेशक सहीराम गोदारा, सुरेश मेघवाल, चरण सिंह कोका,एम आर चौधरी,अर्जुन राम खाती, रतनलाल नटवाडीया, दुलाराम, नथमल बोला, प्रह्लाद, खिलेरी, जितेन्द्र, भंवर लाल, कुमाराम बोला, बनवारी लाल चाहर, भागीरथ खीचड़, शिवलाल ढेवा, सहित कई जनप्रतिनिधि व ग्रामीण एवं शहरवासी मौजूद रहे।

'स्काउट गाइड जीवन जीने की कला'

सीकर (निसं)। राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड जिला मुख्यालय सीकर के तत्वावधान में स्थानीय संघ शिवसिंहपुरा के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय दौलतपुरा ,जिला सीकर के परिसर में राज्य पुरस्कार स्काउट, गाइड ,रेंजर का प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 4 अगस्त से 8 अगस्त 2025 तक जा रहा है। शिविर का उद्घाटन नेकीराम आर्य निदेशक, आर्य शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालय दौलतपुरा के कर कमलो द्वारा भारत स्काउट गाइड ध्वजारोहण के साथ किया गया। निदेशक द्वारा स्काउट गाइड संगठन मनुष्य की जीवन जीने की कला का अभिप्राय बताते हुए बताया गया कि बालकों के चारित्रिक, बौद्धिक एवं सर्वांगीण विकास व जीवन में लक्ष्य प्राप्त करने के लिए स्काउट गाइड संगठन बालकों के जीवन में अनिवार्य सह शैक्षिक गतिविधि है। जिसके सहारे बालक का सर्वांगीण विकास होता है। बालक संस्कारवान बनने के साथ-साथ लक्ष्य प्राप्ति के लिए अधिक मजबूती से तैयार होता है। शिविर संचालक किशनलाल सियाक सचिव स्थानीय संघ शिवसिंहपुरा ने राज्य पुरस्कार स्काउट गाइड के प्रशिक्षण एवं संगठन की गतिविधियों से अवगत करवाया गया ।अलीताब धोबी द्वारा नोटबुक संधारित करना , रोशन देबनिया द्वारा सिटी व हाथ के संकेत प्रेम सिंह नेहरा द्वारा दैनिक कार्यक्रम मुकेश कुमार भूकर द्वारा लेआउट, महेंद्र सिंह मील द्वारा पंजीकरण, प्रेम पावडिया द्वारा निरीक्षण, गरिमा सियाग रेंजर्स पाठ्यक्रम व पुष्पा पीपलवा गाइड्स पाठ्यक्रम की जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम पर बाबूलाल मीणा सचिव धोद,देवीलाल जाट सहायक सचिव सीकर, सुष्मिता ग्रामीण महिला शिक्षण संस्थान, इमरान रोवर लीडर, आदिल खान, सौरभ जांगिड, ओमप्रकाश डमोलिया व ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

आंगनबाड़ी केंद्र की हालत खस्ता

राजलदेसर (निसं)। राजलदेसर कस्बे में वार्ड नं 23 में एकमात्र सरकारी आंगनबाड़ी भवन है। जिसकी हालत इतनी खस्ता है की कभी भी गिर सकता है। किसी भी समय बड़ा हादसा हो सकता है। भवन का निर्माण 1994 के अंदर सरकार की योजना के तहत पंचायत समिति रतनगढ़ के माध्यम से भवन का निर्माण हुआ था। जिसमें एक बडा हॉल, एक छोटा रूम, एक बरामदा बनाया गया था। लेकिन करीबन 10 वर्षों से इस भवन की इतनी हालत खस्ता है की रोड के लेवल के बराबर भवन आ चुका है। जिसके चलते बरसाती पानी इसके अंदर जाता है साथ ही भवन पूरी तरह से जर्जर हो चुका है जिसको देखते हुए आंगनवाडी कार्यकर्ता कमल प्रजापत ने बच्चों के भविष्य को देखते हुए एक पास में ही छोटा कमरा किराए पर लेकर उसमें भवन संचालित किया जा रहा है लेकिन केंद्र एवं राज्य सरकार की विभिन्न योजनाएं आंगनबाडी के अंदर संचालित होती है लेकिन जब भवन भी सही नहीं है तो योजनाओं को कैसे धरातल पर उतारा जाएगा क्योंकि इस भवन के अंदर सभी आंगनबाडी केंद्र संचालित होते हैं। कार्यकर्ताओं एवं आशा सहयोगिनियो की मीटिंग यहीं पर होती थी लेकिन अब इधर-उधर भटकना पड़ता है केंद्र की कार्यकर्ता कमल प्रजापत ने बताया लगातार विभाग एवं राजनेताओं को बार-बार अवगत करा रही हूं लेकिन किसी भी तरह की कोई सुनवाई नहीं हो रही है सबसे बड़ा डर यह लगता है यह रोड पर स्थित होने के कारण यहां से आने वाले राहगीरों पर कभी भी काल का ग्रास बन सकता है।

तहसीलदार को ज्ञापन सौंपा

पाटन (निसं)। समता आंदोलन समिति (रजि.) जयपुर के अध्यक्ष द्वारा आदिवासी मीणा समुदाय के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणियाँ किए जाने के विरोध में पाटन स्थित आदिवासी मीना सेवा समिति ने सोमवार को तहसीलदार को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा।ज्ञापन में आरोप लगाया गया कि समता आंदोलन समिति द्वारा हाल ही में राज्य के चिकित्सा मंत्री को एक पत्र भेजा गया, जिसमें एसएमएस अस्पताल से मीणा समुदाय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हटाने की मांग की गई है। इस पत्र में मीणा समुदाय के कर्मचारियों को आतंकी जैसे आपत्तिजनक और अमर्यादित शब्दों से संबोधित किया गया है। समिति का कहना है कि यह पत्र पूरी तरह से निराधार, असत्य और समाज में वैमनस्य फैलाने वाला है, जिससे पूरे समुदाय की छवि को ठेस पहुंची है। समाज के लोगों ने समता आंदोलन समिति का पंजीकरण तत्काल प्रभाव से निरस्त करने की मांग की है साथ ही समुदाय विशेष को बदनाम करने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई,पूरे प्रकरण की उच्च स्तरीय जांच करवाने की मांग भी की है, ताकि ऐसे कृत्य दोबारा न हों और समाज में सौहार्द बना रहे। इस अवसर पर आदिवासी मीना सेवा समिति पाटन के समस्त पदाधिकारी, समाज के वरिष्ठजन, महिला प्रतिनिधि और बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित रहे। सभी ने एक स्वर में इस आपत्तिजनक कृत्य की निंदा करते हुए त्वरित न्याय की मांग की।

आधार पंजीकरण कैम्प आयोजित

सीकर (निसं)। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव शालिनी गोयल ने बताया कि राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली द्वारा संविधान के अनुच्छेद 39 (ई) और (एफ) को बनाए रखने और समान न्याय प्रदान करने के अपने अधिदेश के तहत निराश्रित बच्चों को कानूनी पहचान प्रदान करने और सामाजिक कल्याण तक पहुंच को सुगम बनाने के लिए संचालित एक केंद्रित राष्ट्रीय अभियान साथी अभियान' के अन्तर्गत सोमवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सीकर के निर्देशन में जिला प्रशासन के सहयोग से दशरथ मनोविकास संस्थान सीकर के परिसर में आधार पंजीकरण कैम्प का आयोजन किया गया। कैम्प के दौरान दशरथ मनोविकास संस्थान, सीकर, वात्सल्य सेवा समिति, रैवासा, परमार्थ सेवा संस्थान, सीकर, कस्तुरबा सेवा संस्थान, भादवासी में निवासरत 17 बेसहारा बच्चों का नवीन आधार पंजीयन किया गया एवं 4 बेसहारा बच्चों के आधार का बायोमैट्रीक अद्यतन किये गये। शिविर के दौरान अधिकार मित्र ओमप्रकाश पुरोहित, चेतन मनोहर एवं डीओआईटीसी की टीम के सदस्य उपस्थित रहे।

मतदान केन्द्रों के पुनर्गठन के सबंध में बैठक कल

सीकर (निसं)। उप जिला निर्वाचन अधिकारी एवं अतिरिक्त जिला कलेक्टर रतन कुमार ने बताया कि 1200 से अधिक मतदाता वाले मतदान केन्द्रों का पुनर्गठन, सुव्यवस्थिकरण किया जाना है। जिसके संबंध में आवश्यक चर्चा करने के लिए जिला निर्वाचन अधिकरी एवं जिला कलेक्टर के कार्यालय में 6 अगस्त 2025 को प्रात:11 बजे बैठक आयोजित की जायेगी।

तिरंगा यात्रा के संयोजक व सहसंयोजक नियुक्त

सीकर, (निसं)। भाजपा में संगठनात्मक कार्य के लिए जिला संयोजक व सहसंयोजकों की नियुक्ति की गई है। विभाजन विभिषिका व तिरंगा यात्रा के सफल संचालन के लिए जिलाध्यक्ष मनोज बाटड ने यह नियुक्ति की है। जिलाध्यक्ष बाटड़ ने राजकुमार जोशी को संयोजक, अरूण चौधरी, दिनेश सैनी, सुनील स्वामी व अनुराधादेवी को सहसंयोजक नियुक्त किया है।

लालसोट में ईसरदा-दौसा पेयजल परियोजना का सीएम भजनलाल ने किया शिलान्यास

हर गांव-ढाणी तक सुविधाएं पहुंचाकर लोगों का जीवन बेहतर बनाना हमारा संकल्प : भजनलाल

सीएम भजनलाल शर्मा ने बटन दबाकर ईसरदा-दौसा पेयजल परियोजना का शिलान्यास किया।

■ 'ईसरदा-दौसा पेयजल परियोजना से लगभग 6.27 लाख लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो सकेगा'

दौसा/जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रदेश के हर गांव, हर ढाणी और हर व्यक्ति तक सुविधाएं पहुंचाकर लोगों का जीवन बेहतर बनाना हमारा संकल्प है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश को सशक्त एवं समृद्ध बनाने का लक्ष्य लेकर कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा सोमवार को दौसा जिले के लालसोट विधानसभा क्षेत्र स्थित डूंगरपुर गांव में आयोजित समारोह में रिमोट का बटन दबाकर ईसरदा-दौसा पेयजल परियोजना का शिलान्यास किया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि महादेव की कृपा से प्रदेश में भरपूर बारिश से जलाशय लबालब हो गए हैं और ईरसदा बांध में भी खूब पानी आया है। उन्होंने कहा कि ईसरदा-दौसा पेयजल परियोजना के तहत लालसोट में लगभग 350 करोड़ रुपये की लागत से 8 स्वच्छ जलाशयों, 5 पंप हाउस, 47 उच्च जलाशयों का निर्माण किया जाएगा। इसमें 280 किलोमीटर राइजिंग मुख्य पाइप लाइन, 200 किलोमीटर से अधिक मुख्य पाइप लाइन एवं 1360 किलोमीटर वीडीएस पाइप लाइन बिछाई जाएगी। उन्होंने कहा कि वर्ष 2027 तक पूर्ण किए जाने वाले इन कार्यों से 302 गांवों की लगभग 5 लाख 58 हजार आबादी और लालसोट की करीब 69 हजार आबादी को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो सकेगा। शर्मा ने कहा कि लालसोट विधानसभा में 120 करोड़ रुपये से अधिक के अन्य विकास कार्यों की भी स्वीकृति दी गई है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि लालसोट विधानसभा के लिए 116 करोड़ रुपए का प्रावधान कर संबंधित कार्यों को तेजी से पूरा किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि एसएच-24 से एनएच-11ऐई वाया नांगल मोड, देवली रोड-लालसोट बाईपास के नवीनीकरण एवं चौड़ाईकरण हेतु कार्यादेश जारी किए जा चुके हैं। एनएच 148 डूंगरपुर मोड से डोब वाया हरिपुरा एवं लालसोट से खटवा तक सड़क नवीनीकरण एवं चौड़ाईकरण कार्य करवाया जा रहा है। लालसोट नगर पालिका को नगर परिषद् में क्रमोन्नत किया गया है। साथ ही श्यामपुरा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में एवं कन्या महाविद्यालय, लालसोट को पीजी में क्रमोन्नत किया गया है।

समारोह में कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य की डबल इंजन सरकार किसानों का जीवन स्तर बेहतर बनाने के लिए लगातार कार्य कर रही है। उनकी पैदावार बढ़ाने के लिए उच्च किस्म के खाद-बीज और कीटनाशक उपलब्ध कराए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि अतिवृष्टि प्रभावित लोगों को नियमानुसार मुआवजा दिया जाएगा। कृषि मंत्री ने दौसा क्षेत्र में ईसरदा बांध का पानी उपलब्ध कराने के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया। जलदाय मंत्री कन्हैयालाल ने कहा कि गत सरकार के कार्यकाल में जल जीवन मिशन में व्यापक भ्रष्टाचार हुआ जिससे इसके कार्य समय पर पूरे नहीं हुए। अब हमारी सरकार द्वारा जल जीवन मिशन के अंतर्गत गुणवत्तापूर्ण कार्य तेजी से पूरे किए जा रहे हैं। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने सिंदूर का पौधा भी लगाया।

रिश्वत लेते हेड कांस्टेबल गिरफ्तार

■ थाने में मारपीट नहीं करने एवं जमानत में मदद करने के एवज में दो हजार रूपये रिश्वत मांगी

उदयपुर, (निसं)। पति की मदद के लिए परिवादिया के सहयोगी से एक हजार रूपये रिश्वत लेते गोवर्धन विलास पुलिस थाने के हेड कांस्टेबल को भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो टीम ने गिरफ्तार किया है।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो उदयपुर टीम के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अनन्त कुमार ने बताया कि 4 अगस्त को परिवादिया लक्ष्मीबाई निवासी काया ने सहपरिवादी भगवान निवासी काया के साथ ब्यूरो कार्यालय उदयपुर में एक रिपोर्ट दी।

उसने बताया कि गोवर्धन विलास पुलिस थाने के हेड कांस्टेबल संजय कुमार मीणा जो एक्साईए एक्ट मामले में बंदी मेरे पति होमा के साथ थाने में मारपीट नहीं करने एवं जमानत में मदद करने के एवज में 2 हजार रूपये रिश्वत की मांग कर रहा है। जिसका सत्यापन कराया तो हेडकांस्टेबल संजय कुमार ने 1500 रूपये की रिश्वत उसी समय ले ली। शेष नकदी कोर्ट में परिवारजन से उपलब्ध करवाने के लिए कहा। सत्यापन होने पर एसीबी के पुलिस निरीक्षण नरपतसिंह मय टीम ने संजय मीणा को कोर्ट परिसर में परिवादी से 1000 हजार रूपये रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया। ब्यूरो की टीम आरोपी के मकान की तलाश कर रही है।

बीस हजार की रिश्वत लेते हेड कांस्टेबल गिरफ्तार

■ लूट के मामले में आरोपी नहीं बनाने तथा जब्त कार छोड़ने के एवज में रिश्वत ली

उदयपुर, (निसं)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो इन्टेलिजेंस उदयपुर की टीम ने लूट के मामले में आरोपी नहीं बनाने तथा जब्त कार छोड़ने के एवज में पीड़ित से राजसमंद जिले के खमनोर थाना पुलिस के हेडकांस्टेबल को बीस हजार रूपये रिश्वत लेते गिरफ्तार किया।

प्राप्त जानकारी के अनुसर एक अगस्त को पीड़ित यशपालसिंह चौहान निवासी कल्ला, खेड़ी विरान पोस्ट गुंजोल नाथद्वारा राजसमंद ने भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो इंटेलीजेंस यूनिट उदयपुर को रिपोर्ट दी। जिसमें उसने बताया कि मुझे खमनोर पुलिस थाने में दर्ज प्रकरण में लूट के मामले में आरोपी नहीं बनाने एवं जब्तशुदा कार को छोड़ने के एवज में थानाधिकारी खमनोर शैतानसिंह नाथावत के रीडर कृष्णकुमार पुत्र सरदाराराम निवासी मोठूका तहसील नीमकाथाना पाटन सीकर हॉल हेडकांस्टेबल पुलिस थाना खमनोर 26 हजार रूपये रिश्वत की मांग कर रहा है। पूर्व में मुझसे डरा धमकाकर 35 हजार रूपये वसूल कर चुका है।

जिस पर एक अगस्त को शिकायत का सत्यापन किया तो रीडर हेडकांस्टेबल द्वारा थानेदार के नाम से रिश्वत मांगने की पुष्टि की गई। इस पर भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो उदयपुर रेंज के उप महानिरीक्षक पुलिस प्रहलादसिंह कृष्णियां के सुपरविजन में ब्यूरो टीम की प्रभारी निरीक्षक डॉ. सोनू शेखावत के नेतृत्व में एएसआई मुनीर मोहम्मद, सहायक प्रशासनिक अधिकारी दलपतसिंह, कांस्टेबलन अजय कुमार, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो इंटेलीजेंस यूनिट कनिष्ट सहायक लक्ष्मणसिंह टीम ने सोमवार को थानाधिकारी के नाम पर हेड कांस्टेबल कृष्णा कुमार को 20 हजार रूपये रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया। ब्यूरो की टीम मामले में खमनोर थानाधिकारी की संदग्धि भूमिका के मामले में जांच कर रही है।

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

ई-निविदा 04/2025-26

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर तथा कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र, सुमेरपुर में श्रमिकों की आपूर्ति करने हेतु ऑनलाईन ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा संबंधी विस्तृत विवरण एवं जानकारी www.sppp.rajasthan.gov.in एवं https://eproc.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है। UBN No. : JAU2526SLRC00071

Eproc ID: 2025_AGUJD_492103_1

राज.संवाद/सी/25/7470 नियंत्रक (वित्त)

Government of Rajsthan
Water Resources Department
Office of the Executive Engineer
Water Resources Division Dholpur
Tel & Fax No. 05642-220880 E-mail- eewrddholpur1@gmail.com
E-NIT NO. 06 YEAR 2025-26

No. 1597 Date-25.07.2025

On behalf of government of Rajasthan NIT No. 06 Year 2025-26 is invited from eligible contractor for 04 Nos. works cost of works is Rs. 66.41 Lacs. The detail of works is available on following websites.

UBN NO. (1) WRD2526GLOB00768, (2) WRD2526GLOB00769, (3) WRD2526GLOB00770, (4) WRD2526GLOB00771

1. www.diprajasthan.gov.in 2. www.sppp.rajasthan.gov.in

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER
WATER RESOURCES DIVISION, JHALAWAR
NO. E.E./WRJHA./NIT-05/2025-26/1426-54 Date- 25.07.2025

E-NIT NO. 05/2025-26

On Behalf of The Governor of Rajasthan, e-tender is invited from interested bidders for the work for 1. Plantation work (ERCP) Mission Hariyalo Rajasthan water resources Division Jhalawar Tehsil Jhalarapatan, Bakani, Pachphar. (Est. Cost Rs. 39.25 Lac) 2. Plantation work (ERCP) Mission Hariyalo Rajasthan water resources Division Jhalawar Tehsil Khanpur.,(Est. Cost Rs. 39.25 Lac) for Completion period of 03 Months (Including Rainy Season) from 26.07.2025 (9.30 AM) to 05.08.2025 (06.00 PM). Other particulars, terms & conditions may be seen on the procurement portal www.eproc.rajasthan.gov.in, www.dipr.rajasthan.gov.in, http://sppp.rajasthan.gov.in & www.waterresources.rajasthan.gov.in

NIB CODE- WRD2526A0302, UBN For Item No. 01-WRD2526WSOB00796,
UBN For Item No. 02-WRD2526WSOB00797

(Pankaj Singh)
Executive Engineer
DIPR/C/10883/2025 Water Resources Division, Jhalawar

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर
विज्ञप्ति

दिनांक-28.07.2025

आयोग के वि.सं. 09/2024-25 दिनांक 05.08.2024 द्वारा आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग के लिए सहायक सांख्यिकी अधिकारी (ASSISTANT STATISTICAL OFFICER) के कुल 43 (गैर अनुसूचित क्षेत्र-31 एवं अनुसूचित क्षेत्र-12) पदों पर भर्ती हेतु ऑनलाईन आवेदन पत्र आमंत्रित किये गये थे। विभाग द्वारा गैर अनुसूचित क्षेत्र के पदों की संख्या में 50 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि किये जाने के फलस्वरूप उक्त पदों हेतु दिनांक 30.07.2025 से दिनांक 13.08.2025 को रात्रि 12.00 बजे तक ऑनलाईन आवेदन पत्र पुनः आमंत्रित किये जाते है। इसके पश्चात लिंक निष्क्रिय हो जाएगा। ऑनलाईन आवेदन करने के लिए अभ्यर्थियों को आयोग के ऑनलाईन पोर्टल https://rpsc.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध Apply online link को Click कर अथवा एस.एस.ओ.(SSO) पोर्टल https://sso.rajasthan.gov.in से Login कर Citizen Apps (G2C) में उपलब्ध Recruitment Portal का चयन कर One Time Registration (OTR) करना होगा। विभाग से प्राप्त संशोधित वर्गवार वर्गीकरण एवं अन्य सूचना के संबंध में आयोग की वेब-साईट पर जारी शुद्धि पत्र संख्या 6/2025-26 का अभ्यर्थी अवलोकन कर सकते हैं।

DIPR/C/10916/2025 (रामनिवास मेहता) सचिव

2.16 करोड़ का डोडा-पोस्त जब्त, आरोपी गिरफ्तार

नागौर, (निसं)। नागौर पुलिस ने जिला स्तरीय अभियान ऑपरेशन नीलकंठ के तहत एक खेत में दबिश देकर 1441 किलोग्राम अवैध डोडा-पोस्त जब्त किया है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बरामद डोडा पोस्त की अनुमानित कीमत करीब 2 करोड़ 16 लाख रुपए है। सयुक्त कार्रवाई में पांचौड़ी थाना, सदर और नागौर डीएसटी टीम शामिल रही।

नागौर एसपी मृदुल कच्छावा ने बताया कि नशे व मादक पदार्थों के खिलाफ नागौर जिला स्तर पर ऑपरेशन नीलकंठ चलाया जा रहा है। सूचना मिली कि भेड़ गांव का श्रवणराम विश्नोई (40) खेत में अवैध डोडा-पोस्त छिपा रखा है सूचना की पुष्टि होते ही स्थानीय पांचौड़ी थाना टीम को अवगत कराया गया। टीम ने आरोपी श्रवणराम के खेत पर छापा मारा। पुलिस ने वहां से 50 कट्टों में भरा 1441 किलो डोडा-पोस्त बरामद किया और मौके से ही आरोपी श्रवण राम विश्नोई को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस अब इस तस्करी नेटवर्क से जुड़े अन्य आरोपियों की तलाश में जुट गई है।

तेज रफ्तार डंपर ने बाइक सवार महिला को कुचला, मौत

■ आक्रोशित परिजनों व ग्रामीणों ने शव को सड़क पर रखकर प्रदर्शन किया

■ मुवावजा देने के आश्वासन के बाद चार घंटे बाद धरना समाप्त हुआ

पावटा, (निसं)। तेज रफ्तार डंपर ने एक महिला को कुचला दिया। हादसे में महिला की मौके पर ही मौत हो गई। आक्रोशित परिजनों व ग्रामीणों ने शव को सड़क पर रखकर प्रदर्शन किया और सड़क मार्ग जाम कर दिया।

हादसे के बाद मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई।

प्रागपुरा थाना क्षेत्र के बुचारा निवासी लक्ष्मी देवी (48) पत्नी प्रहलाद सोमवार की सुबह घर से अपने भाई के लड़के अजय के साथ बाइक पर पावटा डॉक्टर को दिखाकर दवाई लेकर वापस बुचारा आ रही थी। उसी समय समय ग्राम बुचारा पहुंचने पर कालीबाय के पास क्रशर के डंपर ने महिला को रौंद दिया, जिससे मौके पर ही महिला की मौत हो गई। सुबह करीब 12 बजे हुई इस दुर्घटना के बाद क्षेत्र में हड़कंप मच गया।

आसपास के ग्रामीण और परिजन दौड़कर मौके पर पहुंच गए। घटना की जानकारी लगते ही डंपर चालक तो मौके से भाग गया। आसपास के लोगों से सूचना गांव पहुंची, तो देखते ही देखते लोगों की भीड़ मौके पर पहुंच गई और जाम जैसी स्थिति निर्मित हो गई। महिला के मौत की खबर सुनते ही परिजन व ग्रामीण आक्रोशित हो गए और मार्ग को जाम कर मृत महिला के शव को लेकर धरने पर बैठ गए व क्रेशर व डंपर मालिक को मौके पर बुलाने व क्षेत्र में इन वाहनों की वजह से घटित हो रही दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने एवं मृतक के परिजनों को मुवावजे व कोटपूतली विधायक हंसराज पटेल को भी मौके पर बुलाने की मांग पर अड़े रहे। सूचना पर पावटा तहसीलदार संजय खेदड व प्रागपुरा थाना प्रभारी किरण सिंह मय जाप्ता मौके पर पहुंचे व मृतक महिला के परिजनों ग्रामीणों से समझाइश करते हुए मामला शांत कर धरना समाप्त कर शव का पोस्टमार्टम करवाने का प्रयास किया, लेकिन परिजन व ग्रामीण अपनी मांग पर अड़े रहे।

प्रागपुरा थाना प्रभारी किरण सिंह ने बताया कि महिला की मौत के मामले में दुर्घटना करने वाले डंपर को कब्जे में ले लिया गया है, डंपर चालक को पकड़ने के लिये नकाबन्दी भी करवाई गई है। आगे की कारवाई की जा रही है। पावटा तहसीलदार संजय खेदड व प्रागपुरा थाना प्रभारी किरण सिंह ने बताया कि डंपर चालक पर कठोर कार्रवाई व क्रशर व डंपर मालिक द्वारा मुआवजा देने के आश्वासन के बाद चार घंटे चल रहे धरने को समाप्त कर परिजन व ग्रामीण शव का पोस्टमार्टम करवाने को राजी हुए।

सातवीं मंजिल से नीचे गिरा बालक, मौत

कोटा, (निसं)। बोरखेड़ा थाना इलाके में खेलते समय पैर फिसलने से सातवीं मंजिल की सीढ़ियों से नीचे गिरने से बालक की मौत हो गई। 12 वर्षीय बालक हर्ष प्रधान अपार्टमेंट की छत पर खेलते समय पैर फिसलने से सीढ़ियों पर आ गया और सीधे नीचे फ्लोर पर गिर गया। जिसे अस्पताल लाया गया। जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। बोरखेड़ा थानाधिकारी देवेश भारद्वाज ने बताया कि मृतक बालक हर्ष प्रधान उड़ीसा का निवासी है जो परिवार वालों के साथ कोटा में कुछ ही महीने पहले आया था। थानाधिकारी ने बताया कि मृतक बालक हर्ष की मां इलाके के कोरल पार्क स्थित श्याम अपार्टमेंट में वार्डन का काम करती है। बालक अपार्टमेंट की छत पर खेल रहा था, पैर फिसलन से बालक सीढ़ियों से गिरता हुआ नीचे आ गया।

राज्य सरकार ने 103 शिक्षा अधिकारियों के तबादले किये

बीकानेर, (निसं)। राज्य सरकार ने 24 घंटे में 612 शिक्षा अधिकारियों के ट्रांसफर कर दिए। इनमें प्रिंसिपल के साथ ही ब्लॉक लेवल से स्टेट के अधिकारी भी शामिल हैं। पहली लिस्ट रविवार को 509 प्रिंसिपल की जारी हुई थी। इसके बाद सोमवार सुबह पहले 35 और फिर 68 शिक्षा अधिकारियों के ट्रांसफर किए गए। जून 2023 के बाद से शिक्षा विभाग में ट्रांसफर नहीं हुए थे। इनमें कई ऐसे भी थे, जो कांग्रेस सरकार में लगे हुए थे। इधर, इससे पहले शिक्षा विभाग की ओर से ट्रांसफर से रोक हटाने और 10 हजार टीचर के ट्रांसफर का प्रस्ताव बनाकर भेजा था। हालांकि सरकार ने इसे खारिज कर पूरा प्रशासनिक फेरबदल कर दिया है।

प्रिंसिपल ट्रांसफर की एक और लिस्ट सोमवार सुबह जारी की गई। इस लिस्ट पर माध्यमिक शिक्षा निदेशक के ई-साइन देर रात तीन बजे हुए हैं। ये लिस्ट सोमवार अल सुबह सार्वजनिक हुई। इसमें 35 प्रिंसिपल को पोस्टिंग दी गई है। इसमें 23 प्रिंसिपल वे हैं, जिन्हें अलग-अलग कारणों से एपीओ किया गया था। वहीं चार प्रिंसिपल का ट्रांसफर संशोधित किया गया है। इन्हें स्कूल से स्कूल में ही लगाया गया है। इसमें बीकानेर के महारानी स्कूल की प्रिंसिपल शारदा पहाड़िया भी शामिल हैं। जिन्हें पहले देशनोक लगाया गया था, लेकिन अब बीकानेर शहर में ही उस्तों की बारी स्कूल में प्रिंसिपल लगाया गया है। इसके बाद तीसरी लिस्ट सुबह साढ़े छह बजे जारी हुई है। इसमें बीकानेर और अजमेर के राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान (टीटी कॉलेज) में जिला शिक्षा अधिकारी, प्रिंसिपल और लेक्चरर लगाए गए हैं।

बिजली का पोल गिरने से बुजुर्ग की मौत

टोंक, (निसं)। कोतवाली थाना क्षेत्र के बड़ा कुआं, पीली हवेली के पास रविवार को पेड़ काटते समय पेड बिजली के तारों पर गिरने से बिजली पोल टूट कर नीचे किराना दुकान पर खड़े बुजुर्ग के सिर पर गिर गया, जिससे बुजुर्ग का सिर फटने से उसकी मौत हो गई।

थाना कोतवाली प्रभारी भंवरलाल वैष्णव ने बताया कि पीली हवेली निवासी अबरार अहमद (72) जो किराने की दुकान पर घरेलू सामान लेने गया था, तभी दुकान के पास काटा जा पेड़ बिजली की लाइन के तार जर्जर पड़े बिजली के पोल आ गिरा तभी पोल टूटकर अबरार अहमद के सिर पर गिर पड़ा, जिससे उसका सिर फट गया। जिसे परिजनों और मोहल्लेवासियों ने अस्पताल पहुंचाया, लेकिन जयपुर ले जाते समय रास्ते में उसकी मौत हो गई। वहीं मृतक के परिजनों ने मामले की रिपोर्ट दर्ज कराकर घटना में बिजली निगम की लापरवाही का आरोप लगाया है, जहां परिजनों ने मुआवजा देने और लापरवाही करने वाले अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

तीस हजार की रिश्वत लेते झालावाड़ नगर परिषद का बाबू व दलाल गिरफ्तार

एसीबी टीम ने नगर परिषद झालावाड़ का बाबू व दलाल को रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया।

■ मामले में आरोपी परिषद सभापति संजय शुक्ला फरार, एसीबी टीम तलाश में लगी हुई है

■ पट्टा जारी करने की फाइल पर हस्ताक्षर करने के लिये 50 हजार रूपये की मांग की

झालावाड़, (निसं)। झालावाड़ नगर परिषद में भ्रष्टाचार का सनसनीखेज मामला सामने आया है। मामले में भ्रष्टाचार निरोधक विरुद्ध द्वारा नगर परिषद के सभापति संजय शुक्ला भी आरोपी बनाए गए हैं। वहीं नगर परिषद के बाबू आकाश कलोसिया एवं दलाल अजय को रंगे हाथों गिरफ्तार किया है।

एसीबी झालावाड़ की एडिशनल एसपी प्रेरणा शेखावत ने बताया कि एसीबी मुख्यालय के निर्देश पर एसीबी की झालावाड़ चौकी द्वारा कार्रवाई करते हुये संजय शुक्ला सभापति नगर परिषद झालावाड़ के कहने पर आकाश कलोसिया कनिष्ठ सहायक एवं अजय कुमार प्राइवेट व्यक्ति को परिवादी से 30 हजार रूपये रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है।

मामले में आरोपी झालावाड़ नगर परिषद का सभापति संजय शुक्ला फिलहाल फरार है। एसीबी एडिशनल एसपी ने बताया कि शुक्ला के पीछे उनकी टीम में लगी हुई है तथा लोकेशन ट्रेस करके शीघ्र गिरफ्तार किया जाएगा। एडिशनल एसपी ने बताया कि परिवादी द्वारा गत 21 जुलाई को शिकायत दी गई कि, प्रार्थी की गांव मुण्डेरी में भूमि स्थित है, जिसका खसरा नम्बर 380 है। जमीन को पर्यटन ईकाई भवन (मोटेल) में कन्वर्जन हेतु पट्टे की फाईल नगर परिषद झालावाड़ में गत 4 वर्षों से पेंडिंग पड़ी है। जिसकी पॉवर ऑफ अटर्नी मेरे नाम है, जिसकी 90ए की कार्यवाही सहित आयुक्त के हस्ताक्षर होकर समस्त राशि जमा करवा रखी है। जिस पर पट्टा जारी करने के लिये सभापति संजय शुक्ला के हस्ताक्षर होना शेष है। उक्त फाईल पर हस्ताक्षर के लिये परिवादी सभापति संजय शुक्ला से मिला तो उन्होंने हस्ताक्षर करने के लिये 50 हजार रूपये की मांग की। शिकायत पर रिश्वत मांग का सत्यापन करवाने पर परिवादी के अनुग्रह पर आरोपी संजय शुक्ला सभापति द्वारा 40 हजार रूपये कागज पर लिखकर परिवादी को बताया, परन्तु परिवादी ने सभापति से कहा कि मैं 30 हजार रूपये ही दूंगा। इस पर सभापति ने आकाश कनिष्ट सहायक से मिलने के लिये कहा। परिवादी आरोपी आकाश कलोसिया से मिला तो उसने कहा कि मेरे पास सभापति का कॉल आया था, उन्होंने 40 हजार रूपये की कहा है, मैं सभापति संजय शुक्ला से पूछकर उनके बताये अनुसार व्यक्ति को रूपये दिलवाऊंगा। रिश्वत की मांग का सत्यापन होने के पश्चात एसीबी झालावाड़ द्वारा सोमवार को ट्रेप कार्यवाही कर संजय शुक्ला सभापति नगर परिषद झालावाड़ के बताये अनुसार आकाश कलोसिया कनिष्ठ सहायक ने अजय कुमार मारवाड़ा टैन्ट हाउस को 30 तीस हजार रूपये रिश्वत राशि दिलवाई, जिस पर अजय कुमार प्राईवेट व्यक्ति को रंगे हाथों पकड़ा गया। आरोपी के घर की तलाशी जारी है। एसीबी द्वारा मामले में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के अन्तर्गत प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान किया जायेगा।

पर्यावरणीय स्वीकृति हेतु लोक सुनवाई के लिए आम सूचना

विषयः- मैसर्स गीतांजलि स्टील प्राइवेट लिमिटेड, निकट ग्राम गढ़ तकनेट, तहसील श्रीमाधोपुर, जिला सीकर में प्रस्तावित धातुकर्म उद्योग (लौह और अलौह), खनिज लाभकारीकरण, ताप विद्युत संयंत्र परियोजना हेतु पर्यावरण स्वीकृति के लिए लोक सुनवाई।

1. सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक मैसर्स गीतांजलि स्टील प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रस्तावित धातुकर्म उद्योग (लौह और अलौह), खनिज लाभकारीकरण, ताप विद्युत संयंत्र परियोजना जोकि, निकट ग्राम गढ़ तकनेट, तहमील श्रीमाधोपुर, जिला सीकर में स्थित है से संबंधित प्रार्थना पत्र मय दस्तावेज पर्यावरणीय स्वीकृति से पूर्व आवश्यक लोक सुनवाई हेतु प्रस्ताव राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल (यहाँ तथा बाद में मण्डल के नाम से अभिलिखित) को प्रस्तुत किया गया है।
2. और चूंकि मैसर्स गीतांजलि स्टील प्राइवेट लिमिटेड, ने राजस्थान राज्य प्रदूपण नियंत्रण मण्डल को उक्त परियोजना की पर्यावरणीय स्वीकृति से पूर्व आवश्यक परियोजना की लोक सुनवाई हेतु मण्डल को आवेदन प्रस्तुत किया है। उक्त परियोजना हेतु वन एव पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा जारी अधिसूचना संख्या एस. ओ. 1533 दिनांक 14.09.2006 ओर एस.ओ. 141 ई दिनांक 15.01.2016 के प्रावधानों के अनुसरण में जन सुनवाई हेतु **इस आशय की सूचना जारी कर 30 दिवस का नोटिस दिया जाना आवश्यक है।**
3. उक्त परियोजना से सम्बंधित मंक्षिप्त अभिलेख (कार्यकारी मारांश) एवं संस्तिप कार्यपालक मार अभिलेख निम्न कार्यालयों में अवलोकनार्थ उपलब्ध हैः-
   i. जिला कलक्टर, सीकर।
   ii. अतिरिक्त जिला कलेक्टर, नीमकाथाना, जिला सीकर।
   iii. राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल मुख्यालय 4, संस्थानिक क्षेत्र झालाना डूंगरी, जयपुर।
   iv. क्षेत्रीय कार्यालय, वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार, ए-218, अरण्यभवन झालाना संस्थानिक क्षेत्र जयपुर।
   v. महा प्रबन्धक, जिला उद्योग केंद्र, सीकर।
   vi. उपखण्ड अधिकारी श्रीमाधोपुर, जिला सीकर।
   vii. क्षेत्रीय प्रबंधक रीको, सीकर।
   viii. ग्राम पंचायत, गढ़ तकनेट, तहसील श्रीमाधोपुर, जिला सीकर|
   ix. राजीव गाँधी मेसेवा केंद्र, ग्राम गढ़ तकनेट, तहसील श्रीमाधोपुर, जिला सीकर।
   x. निदेशक, पर्यावरण विभाग, कमरा मंख्या 8240 द्वितीय तल, 3-प (एमएमओ) भवन, सचिवालय, जयपुर।
   xi. क्षेत्रीय अधिकारी, राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल मीकर जिला सीकर।

अतः सर्वसाधारण को कार्यालय जिला कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, सीकर के पत्र क्रमांक 2461 दिनांक 25.07.2025 के क्रम में इस आम सूचना के माध्यम से एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि उक्त परियोजना की पर्यावरणीय स्वीकृति से संबंधित जन सुनवाई हेतु **दिनांक 10.09.2025 (बुधवार) को प्रातः 11:30 बजे, स्थान- राजीव गांधी सेवा केन्द्र, ग्राम गढ़ तकनेट, तहसील श्रीमाधोपुर एवं जिला सीकर** में उपस्थित होकर अपने लिखित / मौखिक आक्षेप / सुझाव प्रस्तुत कर सकते है।

साथ ही इस सम्बन्ध में लिखित सुझाव/आपत्ति इस सूचना के प्रकाशन की तिथि से 30 दिवस के अन्दर क्षेत्रीय कार्यालय राजस्थान राज्य प्रदूषण मण्डल, सीकर जिला सीकर में दिये जा सकते है। यह आम सूचना वैशिक महामारी कोविड-19 से सम्बंधित केंद्रीय/राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर पारित निर्देशों के अनुरूप एवं अधीन रहेगी तथा सभी प्रावधानो/सावधानियो की पालना सुनिश्चित करनी होगी।

क्षेत्रीय अधिकारी
राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मंडल, सीकर

अतिरिक्त मुख्य सचिव ने सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के संबंध में ली बैठक

बैठक के दौरान राजस्थान में सतत विकास लक्ष्यों पर राज्य की प्रगति के सबंध में विस्तृत चर्चा की

जयपुर। अतिरिक्त मुख्य सचिव जनजातीय क्षेत्रीय विकास कुंजीलाल मीणा ने सोमवार को नीति आयोग द्वारा निर्धारित सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के संबंध में संबंधित विभाग के अधिकारियों की बैठक ली।

■ **मीना ने ग्रुप 5 से संबंधित समूह सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल (एस.डी.जी.) 5 व 10 के विभिन्न संकेताक जैसे कमजोर शिशु लिंगानुपात, घरेलु हिंसा, अनुसूचित जाति, जनजाति उत्पीड़न आदि में सुधार हेतु आवश्यक निर्देश प्रदान किये**

मुख्यालय अम्बेडकर भवन के सभागार में हुई बैठक के दौरान राजस्थान में सतत विकास लक्ष्यों पर राज्य की प्रगति के सबंध में विस्तृत चर्चा की गयी

मीना ने ग्रुप 5 से संबंधित समूह सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल (एसडीजी) 5 व 10 के विभिन्न संकेताक जैसे कमजोर शिशु लिंगानुपात, घरेलु हिंसा, अनुसूचित जाति, जनजाति उत्पीड़न आदि में सुधार हेतु आवश्यक निर्देश प्रदान किये ताकि गोल 5 व 10 में राजस्थान राज्य स्तर पर सुधार हो सके और राजस्थान राज्य सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल रैंकिंग में राष्ट्रीय स्तर पर ऊँचे पायदान पर पहुँच सके।

अतिरिक्त मुख्य सचिव ने बैठक के दौरान संबंधित विभागों को संकेतकों के प्रदर्शन में सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाने हेतु निर्देशित किया। साथ ही सतत विकास और उनके लक्ष्यों के अनुसार अपनी योजनाओं और रणनीतियों को बनाने एवं जाँच करने, सतत विकास और उनके लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संबंधित विभागों को अपने से संबंधित संकेतकों के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए अन्य राज्यों की सर्वोत्तम कार्यप्रणाली का अध्ययन करने हेतु निर्देशित किया।

मीना ने निर्देशित किया कि समाज में महिलाओं का स्थान मजबूत करने एवं जो सामाजिक परम्पराएँ है सिर्फ लडको द्वारा की जाती है जैसे पगड़ी की रस्म कन्यादान की रस्म, बिंदोली की रस्म इत्यादि में महिला प्राथमिकता को बढ़ावा देने का प्रयास करना चाहिए, इस हेतु जिला कलक्टर ब्लॉक स्तर आंगनबाडी वर्कस स्तर पर कार्य किया जाना चाहिए।

मीना ने उद्योग विभाग को निर्देशित किया कि किसी कम्पनी में उच्च पदस्थ जैसे डायरेक्टर, मैनेजर आदि पद हेतु महिला को प्राथमिकता दी जायें, जिससे असमानता का स्तर कम हो सकें। इस हेतु एसएलबीसी, सीआईआई. फिक्की आदि को पत्र लिखें। साथ ही चिकित्सा विभाग को निर्देशित किया कि वह जो महिला एवं पुरुष असमानता है इस हेतु महिला संबंधी मोडर्न मेटर है, उन पर ध्यान दें। उन्होंने निर्देशित किया कि टेलीकॉम कम्पनीया जैसे एयरटेल, जियो, वोडाफोन आदि को पत्र लिखकर कितने महिला और पुरुषों के पास मोबाईल फोन है, का डाटा मंगवा कर आगामी बैठक में अपडेट लेकर आएं व साथ ही सभी अधिकारीयों को निर्देश प्रदान किये की सभी 5-5 ऐसे नवाचार व उपाय साझा करें जिससे ग्रुप 5 से सबंधित दोनों गोल 5 व 10 में अपेक्षित व आवश्यक सुधार किये जा सके।

बैठक में निदेशक एवं संयुक्त शासन सचिव आशीष मोदी, अतिरिक्त निदेशक केसर लाल मीना सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

राज्य स्तरीय अंगदान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

जयपुर। स्टेट ऑर्गन टिशू ट्रांसप्लांट ऑर्गनाइजेशन के तत्वावधान में आज एसएमएस मेडिकल कॉलेज के नए एकेडमिक ब्लॉक में राज्य स्तरीय अंगदान जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य अंगदान के प्रति जन जागरूकता बढ़ाना और इस क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को सम्मानित करना था, कार्यक्रम में मोहन फाउंडेशन जयपुर सिटीजन फोरम की संरक्षक भावना जगवानी और कोर ग्रुप सदस्य ठाकुरदास जी, एम.डी. गोयल, अजय गुप्ता, कमला चौधरी, गोविंद गुर्जर, रवि कामरा, प्रजेश तंवर और साक्षरता तंवर जी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत रवि कामरा, अजय गुप्ता और एम.डी. गोयल द्वारा मधुर संगीत के माध्यम से अंगदान का संदेश फैलाकर की गई, जिसे उपस्थित जनसमूह ने सराहा।

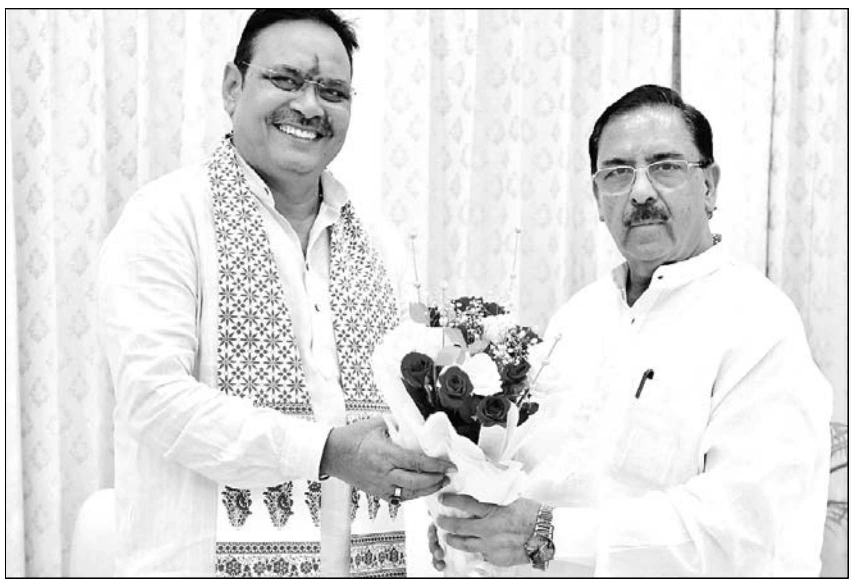

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर 7वें राज्य वित्त आयोग के नवनियुक्त अध्यक्ष अरूण चतुर्वेदी ने मुलाकात की। मुलाकात के दौरान उन्होंने राज्य की पंचायतीराज संस्थाओं एवं नगरीय निकायों के वित्तीय सुदृढ़ीकरण के उपायों सहित आयोग के कार्यक्षेत्र से जुड़े विभिन्न विषयों पर चर्चा की। नियुक्ति के उपरांत मुख्यमंत्री से उनकी यह पहली शिष्टाचार भेंट थी।

झूठ पर राजनीति करने वाले राहुल गांधी को सुप्रीम कोर्ट ने दिखाया आईना : सीपी जोशी

जयपुर। भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं चित्तौड़गढ सांसद सीपी जोशी ने आज दिल्ली में सुप्रीम कोर्ट द्वारा राहुल गांधी को चीन द्वारा भारत की भूमि पर कब्जे के मुद्दे पर लगाई गई फटकार पर कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि इससे यह स्पष्ट हो गया है कि राहुल गांधी बिना तथ्यों के गंभीर राष्ट्रीय सुरक्षा और सीमाओं से जुड़े मुद्दों पर भी गलत बयानबाजी करते है जो बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। चीन जैसे संवेदनशील विषय पर राजनीति करना और झूठ फैलाना न कैवल गैर जिम्मेदाराना है, बल्कि देश की एकता और सुरक्षा के लिए भी खतरा है। राहुल गांधी ने बार-बार यह आरोप लगाया कि चीन ने भारत की जमीन हड़प ली है और सरकार कुछ नहीं कर रही। सुप्रीम कोर्ट ने राहुल गांधी की इन टिप्पणियों को गंभीर, तथ्यहीन और गैर जिम्मेदाराना बताया है, जिससे उनकी साख और मंशा दोनों पर सवाल खड़े हो गए हैं।सांसद सीपी जोशी ने कहा कि

■ **राहुल गांधी हमेशा झूठ, भ्रम और भड़काऊ राजनीति का सहारा लेकर देश की जनता को गुमराह करने की कोशिश करते है - सीपी जोशी**

अक्साई चीन का मुद्दा कांग्रेस के कमजोर नेतृत्व का प्रतीक है। क्योंकि उस समय नेहरू प्रधानमंत्री थे, और संसद में महावीर त्यागी जी द्वारा जब पूछा गया कि यह जमीन क्यों दी गई है, तो नेहरू ने जवाब दिया कि यह जमीन तो बंजर है। इसपर महावीर त्यागी जी ने कहा था कि आपके सिर पर बाल नहीं है तो क्या यह भी उन्हें काटकर दे दोगे क्या? आज राहुल गांधी भी लगातार चीन और पाकिस्तान की भाषा बोलते नजर आते है। जब भारत-चीन सीमा पर तनाव चरम पर था तब ये चीनी राजदूत के साथ मुलाकात करते पाए गए थे। इस प्रकार की घटनाएं कांग्रेस की सोच को दर्शाती है।सांसद सीपी जोशी ने कहा कि जब देश के जवान चीन के सामने सीना तानकर खड़े हैं, तब राहुल गांधी जैसे नेता चीन के नैरेटिव को मजबूती देने का काम कर रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट की फटकार ने यह साबित कर दिया है कि विपक्ष की राजनीति सिर्फ अफवाह और नकारात्मकता पर आधारित है। अब समय आ गया है जब देश की जनता ऐसे नेताओं से सवाल करे जो देश की गरिमा को ठेस पहुंचाने वाले बयानों से विदेशी ताकतों को राजनीतिक लाभ पहुंचाने की कोशिश कर रहे हैं।

सांसद सीपी जोशी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार न केवल सीमाओं की रक्षा के लिए लगातार महत्वपूर्ण निर्णय ले रही है, बल्कि इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत कर, चीन को जवाब देने की भी पूरी तैयारी की है।

नशीला पेय पिलाकर युवती से गैंगरेप

जयपुर। मुहाना थाना इलाके में एक युवती से गैंगरेप का मामला सामने आया है। पुलिस ने पीड़िता के बयानों के आधार पर आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर उनकी तलाश शुरु कर दी है। पुलिस इस संबंध में आरोपियों के खिलाफ आईटी एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है।

मामले की जांच कर रहे एसीपी मानसरोवर आदित्य कांकड़ ने बताया मुहाना इलाके में रहने वाली 23 वर्षीय युवती का आरोप है कि चारों आरोपी उसके पुराने परिचित थे। जिसके कारण उनकी आपस में बातचीत होती रहती थी। कुछ दिन पहले चारो आरोपी उससे मिलने के लिए आए और धोखे से नशीला पेय पिलाया। जिसके बाद चारों बदमाशों ने बेहोशी की हालत में उसके साथ दुष्कर्म किया और उसका अश्लील वीड़ियों बना लिया। वीड़ियो वायरल करने की धमकी देकर चारो बदमाश उसके ब्लैकमेंल करने लग गए। रोज -रोज की धमकियों से परेशान होकर पीड़िता ने थाने पहुंच मामले की जानकारी पुलिस को दी।

एनीमिया जांच शिविर का आयोजन

जयपुर। भारत विकास परिषद महेश नगर शाखा जयपुर एवं रामकृष्ण हॉस्पिटल लाल कोठी के संयुक्त तत्वाधान में एनिमिया जाँच शिविर का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम त्रिवेणी नगर चौराहे पर स्थित शहीद अशोक यादव उच्च माध्यमिक विद्यालय में हुआ। राजस्थान उत्तर पूर्व प्रांत की नवीन शाखा महेश नगर का यह पहला कार्यक्रम था। शाखा के पदाधिकारीयों एवं सदस्यों ने इसमें उत्साह के साथ सहभागिता की। इस अवसर पर विद्यालय की छात्राओं एवं महिला अध्यापिकाओं की एनीमिया की जाँच की गई।

उपमुख्यमंत्री ने सुनी आमजन की समस्याएं

जयपुर। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने आज सिविल लाइंस स्थित अपने कार्यालय पर जनसुनवाई आयोजित की। जनसुनवाई में प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए लोगों ने व्यक्तिगत और सार्वजनिक समस्याएं उनके समक्ष रखीं।

उपमुख्यमंत्री ने संवेदनशीलता के साथ प्रत्येक आवेदक की बात सुनी और संबंधित विभागों के अधिकारियों को त्वरित कार्यवाही के निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि जनसुनवाई का उद्देश्य सिर्फ सुनना नहीं, बल्कि लोगों की समस्याओं का अंतिम समाधान सुनिश्चित करना है।

■ **जनसुनवाई में प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए लोगों ने व्यक्तिगत और सार्वजनिक समस्याएं उनके समक्ष रखकर समाधान करवाया**

इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री ने कहा, ''जनसुनवाई के माध्यम से आमजन से सीधा संवाद स्थापित होता है और उनके मन में सरकार के प्रति विश्वास भी बढ़ता है। हमारा प्रयास है कि हर समस्या का यथासंभव त्वरित निस्तारण हो, ताकि जनता को राहत मिले और एक सकारात्मक संदेश जाए।''

उल्लेखनीय है कि उपमुख्यमंत्री प्रत्येक सप्ताह सोमवार और मंगलवार को दो दिवसीय जनसुनवाई कार्यक्रम आयोजित करती हैं, जिसमें प्रदेशभर से आने वाले नागरिकों की समस्याओं को गंभीरता से सुनकर, समाधान हेतु आवश्यक निर्देश दिए जाते हैं।

इस जनसुनवाई में विभिन्न विभागों के अधिकारी भी उपस्थित रहे और मौके पर ही अनेक मामलों में प्राथमिक कार्यवाही की गई।

अहिल्याबाई उद्यान और मोक्षधाम में लगाए 108 पौधे

जयपुर। पर्यावरण संरक्षण को समर्पित ''एक पेड़ मां के नाम'' पहल के अंतर्गत सोमवार को सिविल लाइंस के हरिपुरा स्थित अहिल्याबाई होल्कर उद्यान और रामेश्वरम मोक्षधाम में पौधारोपण किया गया। यह कार्यक्रम श्रावण के चौथे एवं अंतिम सोमवार को रामेश्वरम मोक्षधाम मंदिर में रुद्राभिषेक के साथ मुख्य अतिथि सिविल लाइंस विधायक गोपाल शर्मा के सान्निध्य और प्लांटेशन बोर्ड के चेयरमैन सर्वेश्वर शर्मा के नेतृत्व में शुरू हुआ। कार्यक्रम में सभी अतिथियों तथा नागरिकों ने भगवान शिव को साक्षी मानकर सामूहिक रूप से पर्यावरण संरक्षण की शपथ ली और भविष्य में अधिकाधिक पौधारोपण तथा देखभाल का संकल्प लिया।

■ **विधायक गोपाल शर्मा ने रामेश्वर मोक्षधाम मंदिर में रुद्राभिषेक से की शुरुआत**

रामेश्वरम मोक्षधाम में 'एक पेड़ मां के नाम' के तहत पौधारोपण किया।

विधायक गोपाल शर्मा ने कहा कि हर पेड़ में मां का आशीर्वाद है। जब हम एक पौधा रोपते हैं, तो जैसे अपने भविष्य की जड़ें मजबूत कर रहे होते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल पर शुरू हुआ यह अभियान सिर्फ एक पौधा नहीं, एक संस्कार रोपण है। शर्मा ने कहा कि पौधारोपण सिविल लाइंस में श्रावण उत्सव के रूप मनाया जा रहा है। यह न केवल हरियाली बढ़ाने के लिए बल्कि समाज में पर्यावरण संरक्षण की चेतना जागृत करने का श्रेष्ठ माध्यम है।

प्लांटेशन बोर्ड के उपनिदेशक प्रवीण शर्मा, जिला प्रमुख अधिकारी विजेंद्र सिंह शेखावत, उप जिला प्रमुख अधिकारी सुनील बोहरा, कलेक्ट्रेट कर्मचारी संघ के अध्यक्ष राकेश शर्मा पाराशर, डॉ. तरुण माथुर, सामाजिक कार्यकर्ता अभिषेक शर्मा, भाजपा मंडल अध्यक्ष पवन सैनी, पूर्व भाजपा मंडल अध्यक्ष राकेश गुर्जर, वार्ड अध्यक्ष हरवीर सिंह चौधरी, चेयरमैन रवि प्रकाश सैनी, पार्षद राजेश कुमावत, पूर्व पार्षद अखिलेश दुबे, पूर्व पार्षद चंचल सैनी, प्रमोद शर्मा, अशोक सिंह शेखावत, अजय शर्मा, दशरथ सिंह, शेर सिंह, सीमा चौहान, मेघना कुमावत, लाली देवी, चंद्रकांता सैनी, मुन्नी मीणा, हिमांशु राजौरिया, राम सिंह राठौड़ समेत बड़ी संख्या में नागरिकों ने उत्साह से भाग लिया।

युवती से दुष्कर्म करने वाले आरोपित गिरफ्तार

जयपुर। श्याम नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए युवती से दुष्कर्म करने वाले आरोपित आर एस कसाना को गिरफ्तार किया है। बताया जा रहा है कि गिरफ्तार आरोपित ने युवती की फोटो वायरल करने की कहकर गहने भी ले लिये थे। फिलहाल आरोपित से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर दक्षिण राजर्षि राज ने बताया कि श्याम नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए युवती से दुष्कर्म करने वाले आरोपित आर एस कसाना निवासी वैर जिला भरतपुर को गिरफ्तार किया गया। इस संबंध में एक युवती ने मामला दर्ज करवाया था कि सुरक्षा गार्ड का काम करते हुए उसकी जानकारी आरएस कसाना नाम के व्यक्ति से हुई जो इस कंपनी का मालिक था। धीरे-धीरे आरएस कसाना उससे बात करने लगा और सैलरी बढ़ाने का झांसा भी दिया। जून माह 2024 में आरोपित आरएस कसाना उसे कम्पनी के काम के बहाने से एक होटल में लगा और उसके कॉल ड्रिंक में नशीला पदार्थ पिलाकर बेहोशी के हालत में उसके साथ दुष्कर्म किया। साथ ही आरोपित ने उसकी अश्लील फोटो बना ली।

देवस्थान मंत्री जोराराम कुमावत ने किया रूद्राभिषेक

मंत्री जोराराम कुमावत (बांये) ने मंत्रोच्चारण के साथ पूजा की।

जयपुर। सावन के चौथे और आखिरी सोमवार को राजस्थान सरकार देवस्थान विभाग की ओर से प्रदेशभर के शिव मंदिरों में रुद्राभिषेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसी कड़ी में देवस्थान मंत्री जोराराम कुमावत ने जयपुर के बड़ी चौपड़ स्थित राजकीय प्रत्यक्ष प्रभार श्रेणी के मंदिर चंद्रेश्वर जी सिरहड्योढ़ी बाजार में प्रदेश की सुख, शांति, समृद्धि, खुशहाली एवं अनुकूल वर्षा की मंगल कामना के लिए श्रद्धा और विधि विधान के साथ रुद्राभिषेक किया। इस दौरान देवस्थान विभाग के पुजारियों ने मंत्रोच्चारण के साथ पूजा अर्चना करवाई। मंत्री कुमावत ने बताया कि देवस्थान विभाग के राजकीय प्रत्यक्ष प्रभार श्रेणी के प्रदेशभर के 80 मंदिरों में रुद्राभिषेक के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

रुद्राभिषेक में मुख्य रूप से भाजपा ओबीसी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष चंपालाल गेदर, देवस्थान विभाग के सहायक आयुक्त महेंद्र कुमार देवतवाल, निरीक्षक सुरेंद्र पूनिया, भाजपा प्रदेश प्रवक्ता मदन प्रजापत आदि ने देवाधिदेव महादेव की पूजा अर्चना कर भगवान भोलेनाथ का आशीर्वाद प्राप्त किया। इससे पहले मंत्री जोराराम कुमावत के मंदिर पहुंचने पर देवस्थान विभाग के अधिकारियों ने उनका भव्य अभिनंदन किया।

सार-समाचार

साइकिल चुराने वाला शातिर साइकिल चोर गिरफ्तार

जयपुर। विद्याधर नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए घरों के अंदर घुसकर साइकिल चुराने वाले एक शातिर साइकिल चोर को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपित के पास से उनीस ब्रांडेड साइकिल बरामद की है। पुलिस पूछताछ में सामने आया कि नशे के शौक के लिए साइकिल चोर जयपुर शहर में 50 से अधिक ब्रांडेड साइकिल चोरी कर चुका है। पुलिस फिलहाल आरोपी से पूछताछ कर रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर (उत्तर) करण शर्मा ने बताया कि विद्याधर नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए घरों के अंदर घुसकर साइकिल चुराने वाले एक शातिर साइकिल राहुल स्वामी उर्फ कब्बू (19) निवासी पुराना विद्याधर नगर को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपित के कब्जे से जयपुर शहर से चुराई 19 ब्रांडेड साइकिल बरामद की है। वह घरों के अंदर घुसकर भी साइकिल चोरी की वारदात को अंजाम देता था। पूछताछ में आरोपी ने नशे के शौक के लिए साइकिल चोरी करना स्वीकार किया है। जयपुर शहर में ब्रांडेड साइकिल चोरी की 50 से अधिक वारदात करना बताया है। उसके खिलाफ जयपुर शहर के विभिन्न थानों में 8 प्रकरण दर्ज है। पुलिस पूछताछ में और भी कई वारदातें खुलने की आशंका जताई जा रही है।

लायंस क्लब हवामहल का प्रतिनिधिमंडल करेगा राष्ट्रपति भवन का भ्रमण

जयपुर। देश के प्रतिष्ठित और सक्रिय सामाजिक संगठनों में से एक लायंस क्लब जयपुर हवामहल के प्रतिनिधिमंडल द्वारा आगामी 6 और 7 अगस्त में नई दिल्ली स्थित राष्ट्रपति भवन और नई संसद भवन का भ्रमण किया जाएगा। यह ऐतिहासिक यात्रा लायंस इंटरनेशनल के 108 गौरवशाली वर्षों के पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित की जा रही है। इस अवसर पर क्लब के सदस्य भारतीय लोकतंत्र की कार्यप्रणाली, विशेष रूप से संसद की कार्यवाही, को प्रत्यक्ष रूप से देखने और समझने का अवसर प्राप्त करेंगे। साथ ही लोकसभा अध्यक्ष माननीय ओम बिरला जी को क्लब की ओर से उनके अद्वितीय सामाजिक योगदान और जनसेवा के लिए 'लाइफ़टाइम अचीवमेंट अवार्ड' से सम्मानित किया जाना प्रस्तावित है। कार्यक्रम संयोजक लायन अनूप खंडेलवाल और लायन धर्मेश सक्सेना ने बताया कि यह दो दिवसीय विशेष यात्रा सदस्यों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव होगी, जिसमें वे न केवल राष्ट्रपति भवन और संसद भवन की भव्यता को देखेंगे, बल्कि उनकी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक महत्ता से भी परिचित होंगे।

एनीमिया जांच शिविर आयोजित

जयपुर। भारत विकास परिषद महेश नगर शाखा जयपुर एवं रामकृष्ण हॉस्पिटल लाल कोठी के संयुक्त तत्वाधान में एनिमिया जाँच शिविर का आयोजन किया गया। शाखा संरक्षक महेंद्र सिंघल ने बताया यह कार्यक्रम त्रिवेणी नगर चौराहे पर स्थित शहीद अशोक यादव उच्च माध्यमिक विद्यालय में हुआ। राजस्थान उत्तर पूर्व प्रांत की नवीन शाखा महेश नगर का यह पहला कार्यक्रम था। शाखा के पदाधिकारीयों एवं सदस्यों ने इसमें उत्साह के साथ सहभागिता की। इस अवसर पर विद्यालय की छात्राओं एवं महिला अध्यापिकाओं की एनीमिया की जाँच की गई। लगभग 125 एनीमिया जाँच की गई। कार्यक्रम में भारत विकास परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष रणवीर सिंह त्यागी, शाखा संरक्षक महेंद्र सिंघल,अध्यक्ष सीताराम गुप्ता,सचिव लोकेंद्र गर्ग, कोषाध्यक्ष सीए अखिल जैन एवं अन्य सदस्य उपस्थित रहे। इस अवसर पर एनीमिया के लक्षण, रोकथाम एवं उपचार पर रामकृष्ण हॉस्पिटल की स्त्री रोग विशेषज्ञ डा. नीलम जैन का विद्यालय की छात्रों के साथ वार्तालाप भी रहा।

पतंजलि योगपीठ में जड़ी-बूटी दिवस के रूप में मनाया आचार्य बालकृष्ण जी का जन्मदिवस

जयपुर/ हरिद्वार। पतंजलि योगपीठ के महामंत्री आचार्य बालकृष्ण जी का जन्मदिवस पतंजलि वैलनेस,पतंजलि योगपीठ-2 के योगभवन सभागार में जड़ी-बूटी दिवस के रूप में मनाया गया। जड़ी-बूटी दिवस के अवसर पर स्वामी रामदेव जी व आचार्य बालकृष्ण जी ने उपस्थित जनसमूह को स्वस्थ व्यक्ति,स्वस्थ परिवार,स्वस्थ समाज, स्वस्थ राष्ट्र व स्वस्थ विश्व के लिए वृक्षारोपण हेतु संकल्पित कराया। स्वामी जी व आचार्य जी ने स्वयं रक्तदान व वृक्षारोपण कर जनसामान्य को प्रेरित किया।

■ **जड़ी-बूटियाँ मात्र उपचार के लिए नहीं अपितु आत्म साक्षात्कार के लिए भी हेतु हैं : स्वामी रामदेव**

स्वामी रामदेव जी महाराज (बीच में) ने आचार्य बालकृष्ण जी को तिलक लगाकर जन्मदिवस मनाया।

कार्यक्रम में स्वामी रामदेव जी महाराज ने आचार्य जी को जन्मदिवस की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि आचार्य जी का जन्मदिवस मनाना तो मात्र एक बहाना है,इसका मुख्य उद्देश्य भारत माता के प्रत्येक घर में ही नहीं सम्पूर्ण धरती माता के आँगन में जड़ी-बूटियाँ शोभायमान हों और सम्पूर्ण मानवता उनसे स्वास्थ्य व सुख पाएँ। उन्होंने कहा कि जड़ी-बूटियाँ प्रकृति-परमेश्वर के अनुग्रह को अनुभव करने का एक माध्यम हैं। उन्होंने कहा कि जड़ी-बूटियाँ मात्र उपचार के लिए ही नहीं अपितु आत्म साक्षात्कार के लिए भी हेतु हैं।

स्वामी जी ने कहा कि अपने ऋषियों की विरासत को गौरव के साथ प्रतिष्ठापित करने वाले आचार्य जी इस अखंड-प्रचंड पुरुषार्थ के जीवंत प्रतिमान हैं। पतंजलि आयुर्वेद हॉस्पिटल,योगग्राम,पतंजलि वेलनेस आदि पतंजलि के विभिन्न सेवा परिसरों में आचार्य जी का बहुत बड़ा तप निहित है। पूज्य आचार्य जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन लोकहित में समर्पित कर दिया है। इनका जीवन एक प्रेरणा है कि हमें अखंड-प्रचंड पुरुषार्थ करते हुए अपने पूर्ण ज्ञान,भक्ति व पुरुषार्थ से प्रत्येक कार्य को भगवान का अराधन मानकर अपने जीवन की आहुति भारत माता, मानवता, प्रकृति, संस्कृति की सेवा के लिए समर्पित करनी है। इसके जीवंत प्रतिमान तथा साक्षात विग्रहवानरूप श्रद्धेय आचार्य जी हैं।

कार्यक्रम में आचार्य बालकृष्ण जी महाराज ने कहा कि जड़ी-बूटियां हमसे नहीं हैं अपितु जड़ी-बूटियों से हम हैं। हमें अपने जीवन की रक्षा करनी है तो जड़ी बूटियों को बचाना जरूरी है। इसलिए पतंजलि का जड़ी-बूटी दिवस सम्पूर्ण मानवता के जीवन को बचाने का एक उपक्रम है,जड़ी बूटियां नही होंगी,पेड़ पौधे नहीं होंगे,तो मानव का जीवन का अस्तित्व भी नहीं रह सकता।

आचार्य जी ने कहा कि जन्मदिन तो मात्र बहाना है,जब हम रात्रि विश्राम करके प्रातःकाल उठते हैं तो नूतन ऊर्जा के साथ,नूतन सूर्योदय के साथ,नवजीवन के साथ हम प्रतिदिन अवतरित होते हैं। इस अवसर पर पतंजलि योगपीठ से जुड़े हमारे लाखों-लाखों परिवार के साथ देश व दुनिया में लाखों करोड़ों लोग जड़ी बूटियां लगाकर इस उत्सव को मनाते हैं।

विधायक गोपाल शर्मा कांवड़ यात्रा में हुए शामिल

जयपुर। श्रावण मास के अंतिम सोमवार से पूर्व शहर में कांवड़ यात्राओं की श्रृंखला अनवरत जारी है। रविवार को सिविल लाइंस विधानसभा क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर कांवड़ यात्राएं निकलीं। विधायक गोपाल शर्मा भी राधा विहार कॉलोनी में कांवड़ यात्रा में शामिल हुए। उन्होंने कांवड़ियों पर पुष्पवर्षा की और स्वयं भी कांवड़ उठाकर साथ चले।

श्रद्धा, उत्सव और अध्यात्म के माहौल में आयोजित हुई कांवड़ यात्रा के दौरान ''हर हर महादेव! बोल बम! जय जय शिव शंकर! के नारों से पूरा क्षेत्र गूंज उठा। केसरिया वस्त्रधारी शिवभक्तों की टोली, ढोल-नगाड़ों, मुखोटों व धार्मिक ध्वजों के साथ जैसे ही आगे बढ़ी, वातावरण दिव्यता और भक्ति की ऊर्जा से सघन हो उठा। भोले बाबा की भव्य झांकी, भक्ति भाव में झूमती प्रसन्निचत्त मातृशक्ति, श्रद्धालुओं की सेवा में जुटे नागरिव, ऐसे दृश्यों के साथ हर पल यह यात्रा एक चलती-फिरती काव्यगाथा बन गई।विधायक शर्मा ने आयोजकों को इस सुंदर समरस आयोजन के लिए साधुवाद दिया और युवाओं से आग्रह किया कि इस वातावरण की सच्चाई को आत्मसात करके सामूहिक संस्कृति में भागीदारी निभाएं।

"विकसित राजस्थान-खुशहाल राजस्थान" बनाने में जुटी है भजनलाल सरकार : पूनिया

सतीश पूनियां ने नागौर के रोल में राज. विद्यालय परिसर में बेटियों के साथ पौधारोपण किया

जयपुर/नागौर। मारवाड़, मेवाड़-वागड़ के सात जिलों के चार दिवसीय प्रवास पर भाजपा हरियाणा संगठन प्रभारी, भाजपा राजस्थान पूर्व प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां सोमवार को डीडवाना-कुचामन और नागौर के प्रवास पर रहे, जहां पूनियां ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अभिनव पहल एक पेड़ माँ के नाम 2.0 अभियान के तहत कुचामन-डीडवाना में कार्यकर्ताओं एवं जनप्रतिनिधियों के साथ पौधारोपण किया और नागौर जिले के रोल में राजकीय विद्यालय परिसर में बेटियों के साथ एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधारोपण किया। इस दौरान कार्यकर्ताओं से मुलाकात के दौरान जिले के विकास कार्यों को लेकर चर्चा कर फीडबैक भी लिया।

भाजपा राजस्थान पूर्व प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां का कार्यकर्ताओं ने नागौर में स्वागत किया।

- **डॉ. सतीश पूनियां ने कार्यकर्ताओं से मुलाकात के दौरान जिले के विकास कार्यों को लेकर चर्चा कर फीडबैक भी लिया**
- **पूनियां ने नागौर के पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष रमाकांत शर्मा के निवास पर पहुंचकर उनकी माताजी दुर्गा देवी के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त की**

पूनियां ने नागौर के पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष रमाकांत शर्मा के निवास पर पहुंचकर उनकी माताजी दुर्गा देवी के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त कर परिवारजनों को ईश्वर से संबल प्रदान करने की प्रार्थना की और ढांढस बंधाया। मीडिया से बातचीत में सतीश पूनियां ने कहा कि 2018 से 2023 तक कांग्रेस की अशोक गहलोत सरकार रही। इन पांच सालों में तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत अधिकांश समय तो कुर्सी बचाने में लगे रहे। कांग्रेस पार्टी के भीतर इतना विरोध था कि उप मुख्यमंत्री और प्रदेश अध्यक्ष सचिन पायलट को बर्खास्त करना पड़ा। उन 5 सालों में जो अराजकता एवं बिगड़ी कानून व्यवस्था का दंश प्रदेश ने झेला, वो विरासत भाजपा की भजनलाल शर्मा सरकार को मिली है, जो विकसित राजस्थान और खुशहाल राजस्थान बनाने में जुटी है।

पूनियां ने ब्यूरोक्रेसी के बढ़ते हस्तक्षेप को लेकर मीडिया द्वारा पूछे गये सवाल के जवाब में कहा कि ब्यूरोक्रेसी सरकार की योजनाओं के अनुसार ही कार्य कर रही है। राज्य में पंचायतीराज और स्थानीय निकाय संस्थाओं को पुनर्जीवित करना, उनको आर्थिक एवं प्रशासनिक रूप से खड़ा किया जा रहा है, जो राज्य हित में अच्छा कदम है। उन्होंने कहा कि, राज्य में पुनर्सीमांकन का काम लगभग पूरा हो चुका है, कांग्रेस शासन में जो गड़बड़ी हुई थी, उसे दुरुस्त करने में कुछ समय लगा, भाजपा सरकार में यह चुनाव व्यवस्थित तरीके से निर्धारित समय में होंगे। उन्होंने कहा कि विपक्ष में रहते हुये 2019-2023 के बीच ऐसा पहली बार हुआ कि भाजपा ने 21 जिला परिषदों पर कब्जा किया था, पंचायत समिति और जिला परिषद के अधिकतर सदस्य भाजपा के जीते थे, आजादी के बाद पहली बार राज्य में विपक्ष में रहते हुए भाजपा की पंचायतीराज चुनाव में सबसे बड़ी जीत थी, इस दौरान सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी को पंचायतीराज चुनाव में करारी हार का सामना करना पड़ा और अब विकसित राजस्थान बनाने के लिए संकल्पित होकर काम कर रही भाजपा सरकार के शासन में निकाय से लेकर पंचायतीराज चुनाव में भी भाजपा बड़ी जीत हासिल करेगी, ऐसा लोगों ने मन बना लिया है।

72.50 लाख की हेरोइन जब्त, दो जने गिरफ्तार

- **एक आरोपी नरेंद्र सिंह कुछ महीने पहले हेरोइन तस्करी के आरोप में गिरफ्तार हुआ था**
- **जमानत पर छूटते ही फिर से नरेंद्र सिंह ने हेरोइन तस्करी का काम शुरू कर दिया**
- **नरेंद्र सिंह अपने मामा के लड़के बलजीत सिंह को पंजाब से हेरोइन लाने के लिए साथ रखा था**

श्रीगंगानगर, (निसं)। जवाहर नगर पुलिस ने 145 ग्राम हेरोइन के साथ दो लोगों को गिरफ्तार किया है। बरामद हेरोइन की कीमत करीब 72.50 लाख रुपए बताई गई है। आरोपियों की पहचान नरेंद्र सिंह उर्फ लवी सैनी (25 साल) पुत्र बक्शीस सिंह सैनी निवासी हाल किराएदार वार्ड नंबर 25, श्रीकरणपुर और बलजीत सिंह उर्फ समना (26) पुत्र सुखवंत सिंह निवासी 6 ओ (बी), केसरीसिंहपुर के तौर पर हुई है। खास बात यह है कि एक आरोपी नरेंद्र सिंह कुछ महीने पहले हेरोइन तस्करी के आरोप में गिरफ्तार हुआ था। जमानत पर छूटते ही फिर से तस्करी का काम शुरू कर दिया। आरोपियों को साधुवाली चेक पोस्ट पर नाकाबंदी के दौरान गिरफ्तार किया गया।

जानकारी के अनुसार पुलिस को मुखबिरों से सूचना मिली थी कि तस्कर पंजाब से हेरोइन की एक बड़ी खेप लाने की फिराक में है। इसके चलते सीमावर्ती क्षेत्रों में गश्त बढ़ाई गई। पंजाब सीमा पर चेकपोस्ट पर नाकाबंदी की गई। वाहनों की जांच के दौरान एक सफेद रंग की क्रेटा कार नंबर आरजे 13 सीसी 6998 की तलाशी के दौरान 145 ग्राम हेरोइन जब्त की गई। पुलिस सूत्रों के अनुसार आरोपियों ने हेरोइन को छिपाकर भी नहीं रखा था। तलाशी के दौरान इनकी जेब से हेरोइन बरामद हुई। एनसीबी के अनुसार आरोपियों से बरामद हेरोइन की कीमत करीब 72.50 लाख रुपए हैं। गिरफ्तार करने वाली टीम में एसआई जयवीर, कांस्टेबल विरेंद्र, मनोज शामिल थे। इस कार्रवाई में डीएसटी टीम के इंचार्ज रामविलास, कांस्टेबल हबीब खां, निर्मल बिश्नोई, पवन, प्रमोद व अश्व नी का विशेष योगदान रहा। आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट की विभिन्न धाराओं में केस दर्ज कर जांच सदर थाना के एसआई हंसराज को सौंपी गई है। एसआई हंसराज ने बताया कि आरोपियों का 6 अगस्त तक का पुलिस रिमांड लिया गया है। इनसे सप्लायर्स के संबंध में पूछताछ की जा रही है।

पुलिस द्वारा गिरफ्तार आरोपी नरेंद्र सिंह उर्फ लवी सैनी लंबे समय से नशे के कारोबार से जुड़ा है। पुलिस सूत्रों के अनुसार नरेंद्र सिंह पंजाब से थोक में हेरोइन लाकर श्रीगंगानगर में खुदरा बिक्री करने वालों को सप्लाई करता है। फरवरी माह में भी सदर पुलिस ने नरेंद्र सिंह को हेरोइन सहित गिरफ्तार किया था। जमानत पर छूटते ही आरोपी ने फिर से हेरोइन तस्करी का काम शुरू कर दिया। नरेंद्र सिंह के खिलाफ 2022 में भी श्रीकरणपुर थाना में एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज हुआ था। इसके अलावा बीकानेर के बीछवाल थाने में मारपीट का मुकदमा भी दर्ज है।

उधर, बलजीत सिंह उर्फ समना रिश्ते में नरेंद्र सिंह का भाई है। नरेंद्र सिंह अपने मामा के लड़के बलजीत सिंह को पंजाब से हेरोइन लाने के लिए साथ रखा था। पुलिस सूत्रों के अनुसार बलजीत सिंह पहली बार पकड़ में आया है। प्रारंभिक पूछताछ में सामने आया है कि आरोपी पंजाब के तरणतारन से हेरोइन लेकर आए थे। इस संबंध में विस्तार से पूछताछ की जा रही है।

चार दिन से न्याय के लिए भटक रही दलित नाबालिग पीड़िता ने फांसी लगाई

- **गंभीर हालत में पीड़िता को बांगड़ जिला अस्पताल लाया गया, सीकर रैफर किया**
- **29 जुलाई की रात्रि को दौलतपुरा निवासी गीता देवी और उसकी पुत्रियों पर हमला हुआ था**
- **थाने से लेकर एसपी ऑफिस तक चक्कर काटने के बाद भी पीड़ित परिवार की नहीं हुई सुनवाई**

डीडवाना, (निसं)। जिले के दौलतपुरा गांव में एक दलित परिवार के साथ मारपीट और महिलाओं के साथ छेड़छाड़ के मामले में चार दिनों बाद भी कार्रवाई नहीं होने पर सोमवार को दलित परिवार की नाबालिग पीड़िता ने फांसी लगाकर आत्महत्या का प्रयास किया। हालांकि गनीमत रही कि परिजनों ने तुरंत ही लड़की को फंदे से उतार लिया और उसे बांगड़ जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां से चिकित्सकों ने बालिका को सीकर रेफर कर दिया।

जानकारी के अनुसार 29 जुलाई की रात्रि को दौलतपुरा गांव में दलित परिवार के घर पर कुछ दबंगों ने घर में घुसकर परिवार के लोगों और महिलाओं के साथ मारपीट की थी। इस मामले को लेकर पीड़ित परिवार द्वारा रिपोर्ट दर्ज करवाई गई। दलित परिवार का आरोप है कि रिपोर्ट दर्ज होने के बावजूद पुलिस द्वारा आरोपितों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है, जिससे आरोपितों के हौसले बुलंद है और लगातार धमकियां दे रहे हैं। इस मामले में कार्रवाई की मांग को लेकर पीड़ित महिला गीता देवी चार दिनों से पुलिस थाना और एसपी कार्यालय के चक्कर लगा रही थी उसके बावजूद उसकी सुनवाई नहीं हुई। इसी बीच मारपीट और छेड़छाड़ से आहत होकर दलित परिवार की एक नाबालिग लड़की ने सोमवार को सुबह फांसी लगाकर आत्महत्या का प्रयास किया। इसके बाद गंभीर अवस्था में पीड़िता को बांगड़ जिला अस्पताल लाया गया, जहां से उसे सीकर रेफर कर दिया गया।

इस मामले में दलित परिवार का आरोप है कि रिपोर्ट के बावजूद पुलिस आरोपितों पर कार्रवाई नहीं कर रही है और पीड़ित परिवार पर ही समझौता करने का दबाव बनाया जा रहा है।

पुलिस उपअधीक्षक धरम पूनिया का कहना है कि इस मामले में दो आरोपितों को गिरफ्तार किया जा चुका है। आज इसी प्रकरण में छेड़छाड़ का एक अन्य मामला भी दर्ज किया गया है। उन्होंने कहा कि मामले की जांच जारी है और किसी भी दोषी को बक्शा नहीं जाएगा।

एडवा के 13वें राज्य सम्मेलन में रईसा को कोषाध्यक्ष बनाया

बीकानेर/जयपुर। अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति (एडवा) का तेरहवां राज्य सम्मेलन बीकानेर में संपन्न हुआ। सम्मेलन में अलवर से रईसा, अनीता, सरोज तथा निर्मला सहित प्रदेश से 203 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। सम्मेलन में रईसा को कोषाध्यक्ष चुना गया। सम्मेलन की शुरुआत प्रदेश अध्यक्ष कमला मेघवाल द्वारा झंडारोहण कर की गई। संगठन की राष्ट्रीय महासचिव मरियम ढवले ने उद्घाटन भाषण देते हुए सभी प्रतिनिधियों से महिला हिंसा, सांप्रदायिकता, पितृसत्ता एवं गैर बराबरी के खिलाफ एकजुट होकर संघर्ष करने का आव्हान किया। सम्मेलन में पिछले तीन वर्षों के कार्यों की समीक्षा की गई एवं आगामी तीन वर्षों के लिए नई कार्य योजना एवं संघर्षों रीतिनीति तैयार की गई। सम्मेलन में 31सदस्यीय राज्य कमेटी का चुनाव किया गया जिसमें डॉ. सीमा जैन को प्रदेश महासचिव, कमला मेघवाल को प्रदेश अध्यक्ष तथा रईसा को प्रदेश कोषाध्यक्ष चुना गया।

बीकानेर में अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति (एडवा) के सम्मेलन में अलवर से रईसा, अनीता, सरोज आदि ने हिस्सा लिया।

- **अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति (एडवा) का तेरहवां राज्य सम्मेलन बीकानेर में संपन्न**
- **सम्मेलन में अलवर से रईसा, अनीता, सरोज तथा निर्मला सहित 203 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया**

सम्मेलन में महात्मा गांधी रोजगार गारंटी योजना के सुदृढ़ क्रियान्वयन, कामकाजी महिलाओं के अधिकार, फिलिस्तीन पर हो रहे हमलों के खिलाफ एकजुटता, दलितों व अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष, बेरोजगारी एवं महंगाई के खिलाफ संघर्ष, नागरिक सुविधाओं के बेहतर क्रियान्वयन के लिए संघर्ष, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा स्मार्ट मीटर का विरोध, महिला हिंसा एवं सांप्रदायिकता के खिलाफ संघर्ष, बढ़ते नशे के खिलाफ संघर्ष, एकल महिलाओं के हक एवं अधिकारों के लिए संघर्ष जैसे मुद्दों पर प्रस्ताव पास किए गए। जनवादी महिला समिति राजस्थान की केंद्रीय कमेटी प्रभारी आशा शर्मा ने प्रतिनिधियों से और अधिक प्रतिबद्धता के साथ संगठन का काम करने एवं आंदोलन तेज करने का आव्हान किया। समापन सत्र में संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केरल की स्वास्थ्य मंत्री पीके श्रीमती ने पहली बार ऐतिहासिक शहर बीकानेर आने पर खुशी जाहिर करते हुए भाजपा की जन विरोधी नीतियों पर प्रहार किया। अंत में जोशीले नारों-एडवा जिंदाबाद, महिला एकता जिंदाबाद, इंकलाब जिंदाबाद, तेरहवां राज्य सम्मेलन कामयाब के साथ सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

आकांक्षा हाट मेले का आयोजन

नागौर/जायल, (निसं)। स्थानीय उत्पादों और कारीगरों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से वोकल फॉर लोकल अभियान के अंतर्गत सोमवार को जायल में आकांक्षा हाट मेले का शुभारंभ महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री डॉ. मंजू बाघमार व जिला कलेक्टर अरुण कुमार पुरोहित ने फीता काटकर किया।

इस अवसर पर जिला कलेक्टर पुरोहित ने आकांक्षा हाट मेले की जानकारी दी तथा स्थानीय कारीगरों और स्वयं सहायता समूहों के उत्पादों को राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने के लिए सभी से अधिकतम सहयोग करने का आव्हान किया। उन्होंने बताया कि मेले का आयोजन 9 अगस्त तक किया जाएगा।

भरतपुर कलेक्ट्रेट कार्यालय परिसर में छत का प्लास्टर गिरा

भरतपुर, (निसं)। भरतपुर जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय परिसर में छत का प्लास्टर गिरने से हड़कंप मच गया। नीचे बैठे एडवोकेट एवं अन्य लोग बाल-बाल बच गए। एडीएम सिटी ने मौके पर पहुंचकर घटना स्थल का मौका मुआयना किया। भवन की जांच के लिए मौके पर पीडब्ल्यूडी के अधिकारी बुलाकर निरीक्षण कराया जा रहा है।

जिला कलेक्ट्रेट परिसर के भवनों की छत क्षतिग्रस्त है और आगे भी ऐसा हादसा देखने को मिल सकता है। एडवोकेट बृजेंद्र बिहारी शर्मा ने बताया कि जिला कलेक्ट्रेट परिसर स्थित आर आर वन कोर्ट के सामने मेरा चैंबर है। मैं और क्लाइंट बैठे हुए थे। ऊपर से छत से प्लास्टर का टुकड़ा हमारे ऊपर आकर गिरा हम और क्लाइंट बाल-बाल बच गये। उन्होंने कहा कि हमने पूर्व में उच्च अधिकारियों को जर्जर भवन के बारे में अवगत करा चुके हैं लेकिन इस और कोई ध्यान नहीं दिया गया। जर्जर भवनों को लेकर के तमाम खबरें सामने आ रही हैं और अधिकारियों के द्वारा जर्जर भवनों की लिस्ट भी मांगी गई है लेकिन खुद जिला कलेक्टर भवन के परिसर की हालत किसी से छुपी नहीं है और आए दिन हादसों की खबरें सामने आ रही है। मौके पर एडीएम सिटी राहुल सैनी ने पहुंचकर मौका मुआयना किया। उन्होंने कहा कि पीडब्ल्यूडी विभाग के अधिकारियों को बुलाया गया है। उनसे जांच कराई जाएगी, अगर यह बिल्डिंग कंडम होगी तो तुड़वाई जाएगी, नहीं तो सही मरमत कराकर ठीक कराया जाएगा। सिविल डिफेंस टीम को बुलाकर मलवे को हटाने की कार्यवाही की जा रही है। उन्होंने छत को सही कराने के निर्देश दिए हैं। साथ ही एडवोकेट और आमजन को दूसरी जगह शिफ्ट करा रहे हैं।

चाकूबाजी की वारदात करने वाले दो आरोपी गिरफ्तार : कस्बा कपासन स्थित सूफी संत हजरत दीवाना शाह के उर्स में चाकूबाजी की वारदात करने वाले मोमिन मोहल्ला निवासी मोहम्मद समीर पुत्र मोहम्मद रूस्तम अंसारी व मोहम्मद सोहेल रजा पुत्र मोहम्मद शराफत अंसारी को कपासन थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया है।

पुलिस अधीक्षक मनीष त्रिपाठी ने बताया कि गत एक अगस्त को रात्रि के समय कपासन निवासी मोहम्मद साहिल व तोकीर दोनों उर्स मेले में कपासन दरगाह के मेला ग्राउण्ड में घूम रहे थे कि समीर, सोहिल, सरीफ उनके सामने आये और पुरानी रंजिश के कारण समीर ने तोकीर को जान से मारने की नियत से तोकीर के सीने पर दांयी तरफ और बांयी तरफ हाथ के नीचे दोनों जगह चाकू मार दिया। घटना की रिपोर्ट पर प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया गया।

केमिकल से भरा टेंकर पलटा, चालक जिंदा जला

उदयपुर, (निसं)। बडगांव थाना क्षेत्र घसियार रोड़ पर अनियंत्रित टेंकर पलट गया, जिससे धमाका होने के बाद आग लग गई। हादसे में चालक की जिंदा जलने से मौके पर ही मौत हो गई। जानकारी के अनुसार सोमवार तड़के जिले के बड़गांव थाना क्षैत्र घसियार के समीप केमिकल से भरा अनियंत्रित टेंकर पलट गया। जिससे धमाका होने के बाद उसमें आग लग गई तथा चालक की मौके पर जिंदा जलने से मौत हो गई। इसकी सूचना मिलने पर पुलिस ने मौके पर पहुंच कर फायर ब्रिगेड को बुलाकर आग पर काबू किया जब तक चालक की मौत हो चुकी थी, जिसे एमबी चिकित्सालय मोर्चरी में रखवा उसकी शिनाख्त देवराज नगर बरार भीम राजसमन्द निवासी धर्मसिंह पुत्र जवानसिंह रावत के रूप में शिनाख्त कर परिजनों को सूचना दी। इस पर हेड कांस्टेबल राजेन्द्र सिंह ने पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया।

नगर परिषद में शादी का फर्जी पंजीयन करवाया

- **लड़की और लड़के ने अपने पते गलत बताए हैं, यहां तक कि लड़की के पिता की जगह भी फर्जी व्यक्ति पेश करके हस्ताक्षर करवाकर शादी रजिस्टर्ड की गई है**

श्रीगंगानगर, (निसं)। एक ऐसी शादी का मामला सामने आया है जिसमें लड़की और लड़के ने अपने पते गलत बताए हैं। यहां तक कि लड़की के पिता की जगह भी फर्जी व्यक्ति पेश करके हस्ताक्षर करवाकर शादी रजिस्टर्ड की गई है। यह कारनामा नगर परिषद में विवाह पंजीयन शाखा के कर्मचारी की जानकारी और मौजूदगी में किया गया है। इस संबंध में पीड़ित लड़की के पिता ने कोतवाली थाने में मुकदमा दर्ज करवाया है।

अदालत के आदेश से दर्ज किए गए मुकदमे की जांच एएसआई बेयंतसिंह को सौंपी गई है। पीड़ित एसएसबी रोड पर सिद्धु कॉलोनी निवासी 55 वर्षीय सुशील कुमार के परिवाद पर मुकदमा दर्ज हुआ है। पीड़ित ने बताया कि नगर परिषद की विवाह पंजीयन शाखा में उसकी बेटी की शादी का पंजीयन करवाया जा रहा था। इसमें दीपक कुमार निवासी इंदिरा कॉलोनी के साथ शादी का पंजीयन किया गया।

पीड़ित को सूचना मिली तो वह मौके पर पहुंचा। तब नगर परिषद की विवाह पंजीयन शाखा में प्रभारी क्लर्क राजेंद्र सेवटा शादी का पंजीयन करने की प्रकिया पूरी करवा रहा था। वहां पीड़ित की बेटी के पिता की जगह अज्ञात अधेड़ उम्र के व्यक्ति को पेश कर रखा था और पेश किए गए शपथ पत्र में भी पीड़ित के फर्जी हस्ताक्षर किए हुए थे। यहां तक कि पीड़ित की बेटी का पता भी गलत लिखा हुआ था। वहां मौके पर पुरानी आबादी हनुमान मंदिर के निकट निवासी ओमप्रकाश भार्गव ने पंडित की जगह हस्ताक्षर किए। सादुलशहर के वार्ड 20 निवासी मोहितकुमार और इंद्रा कॉलोनी की गली नंबर तीन निवासी संजू को गवाह बनाकर हस्ताक्षर करवाए गए।

सड़क टूटकर नदी में बही, बौंली व बामनवास के 40 गांवों का आवागमन बाधित

बौंली-बामनवास, (निसं)। क्षेत्र के बरनाला तहसील अंतर्गत टिगरिया-निमोद सड़क मार्ग के मध्य स्थित मौरेल नदी की सड़क पर बनी पुलिया के दोनों किनारों से सड़क टूटकर नदी में बह जाने के कारण बौंली एवं बामनवास उपखंड के करीब 40 गांव का आवागमन बाधित हो गया।

मौरेल नदी पर बनी पुलिया के दोनों किनारों से सड़क टूटकर नदी में बह गई।

- **सोमवार सुबह जब पुलिया व सड़क मार्ग टूटा, तब एक बाइक सवार बह गया, जिसे ग्रामीणों ने नदी में कूदकर बचा लिया**
- **गत दिनों हुई अत्यधिक वर्षा के कारण नदी उफान पर है एवं पुलिया सड़क मार्ग पर करीब तीन फीट पानी बह रहा था**

ग्रामीणों ने बताया कि सोमवार को सुबह जब पुलिया व सड़क मार्ग टूटा, तब एक बाइक सवार बह गया, जिसे ग्रामीणों ने नदी में कूदकर बड़ी मुश्किल से बचाया। ग्रामीणों ने बताया कि गत दिनों हुई अत्यधिक वर्षा के कारण नदी उफान पर है एवं पुलिया सड़क मार्ग पर करीब तीन फीट पानी बह रहा था। इस कारण गत 5 दिन से यातायात बाधित था। अभी जलस्तर थोड़ा कम पड़ा था तो पुलिया के आसपास पूरी सड़क नदी में समा गई।

इस कारण बौंली एवं बामनवास उपखंड मुख्यालय के करीब 40 गांवों का संपर्क टूट गया, जिसमें बौंली उपखंड के निमोद, करेल, बरियारा, टोंड, जस्टाना, पीपलदा, कोड़ियाई, गालद, कीरतपुरा, मलारना चौड़ सहित कई गांवों का संपर्क कटा हुआ है। इसी प्रकार बामनवास उपखंड के बरनाला, बाटोदा, बेरखंडी, भावड़, जीवद, सुंदरी, मीना ठीकरी, रामसिंहपुरा, टिगरिया, बिछोछ, भंवरकी, साचोली, चांदनहौली, पिपलाई, बाढ़ व मोहनपुरा का संपर्क कटा हुआ है। इस समस्या के कारण स्थानीय लोगों को करीब 25 किलोमीटर का अतिरिक्त चक्कर काटकर भाड़ौती मेगा हाइवे या लालसोट, बगड़ी होकर अपने गंतव्य तक पहुंचाना पड़ रहा है।

स्थानीय निवासियों का टूटी सड़क से पैदल निकलना भी दुश्वार हो रहा है, चार दिन अवकाश के बाद खुले विद्यालयों में छात्र-छात्राएं नहीं पहुंच पा रहे हैं एवं करीब दो दर्जन छात्र-छात्राओं को मौरेल नदी पर ही रोक कर स्थानीय नागरिकों ने सुरक्षा की दृष्टि से वापस घर लौटा दिया। स्थानीय ग्रामीणों ने सार्वजनिक निर्माण विभाग से सड़क मार्ग ठीक कराने की मांग की है।

पाकिस्तान की ओर से एक बार फिर हेरोइन तस्करी का प्रयास

खेत में मिला 522 ग्राम हेरोइन का पैकेट, ढाई करोड़ रुपए बताई जा रही है कीमत

- **पैकेट पर छोटे अक्षरों में कुछ लिखा हुआ है और इस पर मिट्टी नहीं लगी है**
- **केंद्रीय एजेंसियों के अधिकारियों ने भी मौके पर पहुंचकर जांच शुरू की, खेत में सर्च ऑपरेशन चलाया है**

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिले के बॉर्डर इलाके में पाकिस्तान की ओर से एक बार फिर भारत में हेरोइन तस्करी का प्रयास किया गया है।

श्रीगंगानगर में इंटरनेशनल बॉर्डर के पास संगतपुरा गांव के चक 8 एच में एक खेत से हेरोइन का पैकेट बरामद हुआ है। यह स्थान पाकिस्तान बॉर्डर से मात्र एक किलोमीटर दूर है। संगतपुरा का स्वास्थ्य केंद्र इस जगह से केवल 50 मीटर की दूरी पर स्थित है। पीले रंग के पैकेट में मिली हेरोइन का वजन 522 ग्राम है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में इसकी कीमत ढाई करोड़ रुपए से अधिक आंकी गई है। पैकेट पर छोटे अक्षरों में कुछ लिखा हुआ है और इस पर मिट्टी नहीं लगी है। इससे अनुमान लगाया जा रहा है कि यह पाकिस्तान से ड्रोन के जरिए भेजा गया है। पैकेट पर लगी कुंडी भी ड्रोन से लटकाने के लिए इस्तेमाल की जाती है।

हेरोइन का यह पैकेट हरकीर्तन सिंह मान के खेत में नरमे की फसल के बीच से बरामद हुआ। जिस स्थान पर पैकेट मिला, वहां नरमे के पौधे नहीं हैं। शाम को हरकीर्तन सिंह और कुलदीप सिंह पानी की बारी के लिए खेत में गए थे। उन्होंने खेत में पड़ा पैकेट देखकर गांव में इसकी सूचना दी। शाम करीब छह बजे ग्रामीण बलजीत मान ने बीएसएफ अधिकारियों को इसकी जानकारी दी। सूचना मिलते ही बीएसएफ के अधिकारी और जवान मौके पर पहुंचे। मटीलीराठान थाना प्रभारी सुभाषचंद्र भी पुलिस टीम के साथ वहां आए। केंद्रीय एजेंसियों के अधिकारियों ने भी मौके पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी है। पैकेट मिलने के बाद विभिन्न एजेंसियों ने खेत में सर्च ऑपरेशन चलाया। पैकेट का वजन 522 ग्राम होने के कारण माना जा रहा है कि पाकिस्तानी तस्करों ने छोटे ड्रोन का इस्तेमाल किया होगा। इसी वजह से यह बीएसएफ और अन्य एजेंसियों की नजर में नहीं आया। पैकेट पर मिट्टी न लगी होने से अनुमान है कि तस्करी का यह प्रयास हाल ही में किया गया है।

चोटिल तेज गेंदबाज क्रिस वोक्स कंधे की चोट के बावजूद ओवल टेस्ट के आखिरी दिन बल्लेबाजी के लिए उपलब्ध हैं।
- जो रूट

इंग्लैंड के ऑलराउंडर, क्रिस वोक्स के बारे में बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी — **सूर्यकुमार यादव**

भारतीय टी-20 टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव सर्जरी के बाद एशिया कप से पहले पूरी तरह फिट होने के लिए इस समय राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में है। सूर्यकुमार यादव ने हाल ही में पुनर्वास और फिटनेस आकलन के लिए बेंगलुरु स्थित भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के सेंटर में रिपोर्ट की थी। पूरी तहर फिट न होने के कारण उन्हें पश्चिम क्षेत्र के चयनकर्ताओं ने दलीप ट्रॉफी के लिए 15 सदस्यीय टीम से बाहर रखा। ऐसा माना जा रहा है कि सूर्यकुमार ने उन्हें सूचित कर दिया था कि उन्होंने सीओई जांच करा ली है।

क्या आप जानते हैं ?... टेस्ट में रनों के लिहाज से भारत की सबसे कम अंतर से जीत, पहली बार विदेशी सीरीज में जीता पांचवां मैच।

भारत ने इंग्लैंड को छह रनों से हराकर बनाये कई रिकॉर्ड

सिराज का पंजा, भारत ने 2-2 से बराबर की सीरीज

लंदन, 4 अगस्त। भारत ने सोमवार को पांचवें टेस्ट मैच में इंग्लैंड को छह रनों से हराकर कई रिकार्ड बनाये। ओवल में यह छह रनों की टेस्ट में भारत की सबसे छोटी जीत है। इससे पहले भारत ने 2004 में मुंबई में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 107 रनों का बचाव करते हुए 13 रन से मैच जीता था। यह छह रन की हार इंग्लैंड की टेस्ट में तीसरी संयुक्त सबसे छोटी हार भी है। पांचवां विकेट गिरने के बाद इंग्लैंड का स्कोर 332 रन था । इससे पहले केवल एक बार ऐसा हुआ है कि किसी टीम ने पहले पांच साझेदारियों में इतने रन बनाए हों और फिर भी हार गई हो। 1977 में इंग्लैंड 463 रन के लक्ष्य में 346/5 पर था, लेकिन 45 रन से हार गया।

मोहम्मद सिराज और प्रसिद्ध कृष्णा टेस्ट में दोनों पारियों में चार या उससे अधिक विकेट लेने वाली भारत की दूसरी जोड़ी बने। इससे पहले 1969 में दिल्ली में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बिशन सिंह बेदी और एरापल्ली प्रसन्ना ने यह उपब्धिक हासिल थी। ओवल में सिराज और प्रसिद्ध का प्रदर्शन किसी टीम के लिए दोनों पारियों में दो गेंदबाजो के चार-चार विकेट लेने का 15वां उदाहरण है। पिछली बार इंग्लैंड के लिए 2012-13 में मुंबई में मोंटी पनेसर और ग्रेम स्वान ने ऐसा किया था। भारतीय कप्तान शुभमन गिल को पूरी सीरीज में उनकी शानदार बल्लेबाजी के लिए 'प्लेयर ऑफ द सीरीज' और मोहम्मद सिराज को आखिरी मैच में नौ विकेट लेने के लिए 'प्लेयर ऑफ द मैच' नवाजा गया। इस सीरीज में मोहम्मद सिराज ने इंग्लैंड के खिलाफ 23 विकेट लिए जो कि टेस्ट सीरीज में इंग्लैंड में किसी भारतीय गेंदबाज के लिए संयुक्त रूप से सर्वाधिक हैं। उन्होंने जसप्रीत बुमराह की 2021-22 की 23 विकेटों की बराबरी की। भारत की ओर से मोहम्मद सिराज ने 30.1 ओवर में 104 रन देकर पांच विकेट लिये। जबकि प्रसिद्ध कृष्णा ने 27 ओवर में 126 रन देकर चार विकेट झटके। आकाश दीप ने एक बल्लेबाज को आउट किया। जो रूट और हैरी ब्रूक के बीच चौथी पारी हार के बावजूद यह 195 रनों की साझेदारी, दूसरी सबसे बड़ी साझेदारी रही। इससे बड़ी साझेदारी 204 रनों की थी, केएल राहुल और ऋषभ पंत के बीच, 2018 में ओवल में ही हुई थी। रूट और ब्रूक ऐसे सातवें बल्लेबाजी जोड़ी बने जिन्होंने चौथी पारी में शतक लगाए और फिर भी हार का सामना किया। इससे पहले ऐसा आखिरी बार राहुल और पंत ने 2018 में किया था।

यह लगातार चौथी टेस्ट सीरीज हैं जिसमें इंग्लैंड भारत के खिलाफ सीरीज नहीं जीत पाया। आखिरी बार उन्होंने भारत को 2018 में 4-1 से हराया था। भारत के खिलाफ इंग्लैंड की सबसे लंबी बिना सीरीज जीत की लकीर 1996 से 2011 के बीच पांच सीरीज की रही है। विदेशी धरती पर किसी टेस्ट सीरीज के पांचवें या छठे मैच में भारत का जीत-हार का रिकॉर्ड 1-10 का है। ओवल में छह रन की जीत से पहले भारत ने ऐसे 17 में से 10 मैच हारे थे, जबकि सात ड्रॉ रहे। घरेलू मैदान पर कुल 27 मैचों में भारत का ऐसे टेस्ट में रिकॉर्ड 7-4 है।

सुबह मैं कर सकता हूं कि स्क्रीन शॉट का वॉलपेपर लगाया : सिराज

लंदन, 4 अगस्त। भारत के तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज ने कहा कि सुबह उठने के बाद मैंने सोचा कि मैं कर सकता हूं, मैंने गूगल से एक स्क्रीनशॉट लिया और उसे वॉलपेपर लगाया। इंग्लैड पर छह रनों की रोमांचकारी जारी के बाद मोहम्मद सिराज ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि हर किसी ने कड़ी मेहनत की और हम अंत तक मिलकर लड़े। मेरी एक ही योजना थी कि मैं निरंतरता के साथ सही लेंथ हिट करते रहूं। प्लेयर ऑफ द मैच सिराज ने कहा कि सुबह उठने के बाद मैंने सोचा कि मैं कर सकता हूं, मैंने गूगल से एक स्क्रीनशॉट लिया और उसे वॉलपेपर लगाया। ब्रूक का विकेट गेम चेंजिंग मोमेंट था, अगर मैंने वो कैच ले लिया होता तो मैच शायद इस स्थिति में पहुंचता नहीं है। ब्रूक ने बेहतरीन पारी खेली। लॉर्ड्स में आउट होने दिल तोड़ने जैसा पल था, जडेजा भाई ने मुझे यही कहा था कि मैं खेलते रहूं और अपने पिता के बारे में सोचते रहूं कि उन्होंने यहां तक मुझे पहुंचाने के लिए कितनी मेहनत की थी।

हमें पता था कि इंग्लैंड के खेमे में दबाव है : गिल

लंदन, 4 अगस्त। भारतीय टीम के कप्तान शुभमन गिल ने कहा कि हमें पता था कि इंग्लैंड के खेमे में दबाव है और हम इसी सोच के साथ मैदान में आये कि उन पर दबाव बनाये रखना है। मैच के बाद संवाददाता सम्मेलन में शुभमन गिल ने कहा इस सीरीज में दोनों टीमों ने बढ़िया प्रदर्शन किया हर मैच अंतिम दिन तक पहुंचा जो कि दोनों टीमों के प्रदर्शन के बारे में बताता है। प्लेयर ऑफ द सीरीज से सम्मानित गिल ने कहा कि सिराज और प्रसिद्ध जैसे गेंदबाज़ जब गेंदबाजी कर रहे होते हैं तो बतौर कप्तान अधिक चिंता करने की जरूरत नहीं होती। दोनों गेंदबाज जानते हैं कि गेंद को कैसे हरकर कराना है। हमें पता था कि इंग्लैंड के खेमे में दबाव है और हम इसी सोच के साथ आए थे कि उनके ऊपर से दबाव कम नहीं होने देना है। उन्होंने कहा कि इस प्रदर्शन से मैं बेहद खुश हूं और इस सीरीज से पहले मैंने बेहद मेहनत की थी।

किन सुरक्षा मानकों पर सीटिंग अरेंजमेंट खरा उतरने पर अनुमति दी गई ?

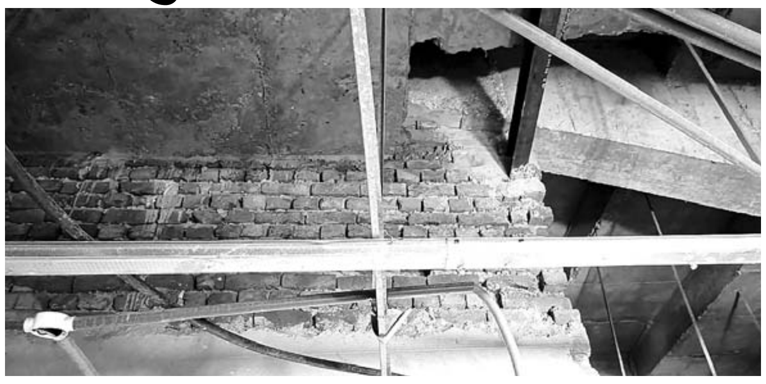

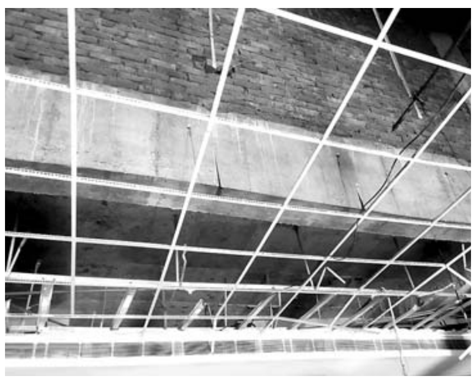

जयपुर, 4 अगस्त। सवाई मानसिंह स्टेडियम के साउथ ब्लॉक में 400 सीटों की क्षमता बढ़ाने को लेकर चले निर्माण कार्य को लेकर बीसीसीआई वेन्यू ऑपरेशन टीम , राजस्थान रॉयल्स के राजीव खन्ना और खेल विभाग के खेल सचिव नीरज के. पवन ने पूरे स्टेडियम का दौरा किया था ओर 13 अप्रैल को होने वाले जयपुर के पहले मैच की तैयारियों का जायजा लिया था। नीरज पवन के अनुसार निर्माण कार्य युद्धस्तर पर अपनी मंज़िल की ओर बढ़ा ओर दिन रात काम करवाया गया था। एमएनआईटी के द्वारा सुरक्षा मानकों को नज़र अंदाज़ नही किया गया। अगर कोई दुर्घटना हो भी जाती है तो जिसको ये काम सौंपा गया है वो जिम्मेदार होगा। अगर साउथ ब्लॉक में सीटिंग अरेंगमेंट में आखिरी पल में भी किसी की जान का जोखिम नज़र आया तो सीटिंग की अनुमति नही दी जाएगी।

यह है साउथ पवेलियन का मामला

इंडियन प्रीमियर लीग के मुकाबले के दौरान राजस्थान रॉयल्स ने सवाई मानसिंह स्टेडियम के रिनोवेशन के लिए 9 करोड़ 85 लाख खर्च किए थे। इसमें लगभग 2 से 3 करोड़ रुपए का खर्चा साउथ ब्लॉक को फिर से तैयार करने के लिए किया गया था। 11 अप्रैल को ये पूरा हुआ था। रिनोवेशन के लिए जो राशि राजस्थान रॉयल्स ने खर्च की थी। खेल परिषद द्वारा उसका भुगतान राजस्थान रॉयल्स को किया जा चुका है। लेकिन स्टेडियम में साउथ ब्लॉक पहली बारिश ही नहीं झेल पाया है। जिससे सरकार के करोड़ों रुपए बर्बाद हो गए है। ग्राउंड फ्लोर पर बने हॉल और दोनों ड्रेसिंग रूम में डक्टिंग के माध्यम से पानी फर्श पर भर रहा है। फर्स्ट फ्लोर पर बने हॉल की फॉल सीलिंग गिर चुकी है। उस पर लगी सभी लाइट्स लटक गई है। वुडन फ्लोरिंग भी पूरी तरह से खराब हो चुकी है। शेन वॉर्न गैलरी पर कैमरा पर्सन के लिए बने लोहे के स्ट्रक्चर पर पानी निकासी की कोई व्यवस्था नहीं है। शेन वॉर्न गैलरी का ड्रेनेज सही नहीं होने के कारण पानी का निकास व्यवस्थित नहीं है।

खेलमंत्री के एसएमएस स्टेडियम का नक्शा बदलकर नया स्वरूप दिये जाने पर पानी फिरता नजर आ रहा है

जयपुर, 4 अगस्त। खेल मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने कहा था कि जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में दर्शकों के बैठने के लिए अलग अलग ब्लॉक में सीटिंग व्यवस्था को बढ़ाया जाएगा। क्रिकेट देखने के साथ साथ दर्शकों को बेहतर सुविधाएं मिल सके इसके लिए आने वाले वर्षों में सीटिंग कैपेसिटी डबल करने का प्रयास करेंगे। सवाई मानसिंह स्टेडियम के साउथ पवेलियन को रिनोवेट किया है। लगभग साढ़े 12 करोड़ रुपए की लागत से यह काम किया गया है। इससे वहां एक हजार लोगों के बैठने की सिटिंग कैपेसिटी भी डेवलप की गई है। जो काफी शानदार है। दो दशक पुरानी घास को भी बदल कर नई घास लगाई जाएगी। नाइट मैच के लिए भी अभी जोलाइट लगी है उसमें नई लाइट ओर लगाकर स्टेडियम को जगमग किया जाएगा। इसके साथ ही क्रिकेटर्स के लिए जो भी अत्याधुनिक सुविधाएं होनी चाहिए जिससे इंडियन प्रीमियर लीग के अगले साल होने वाले मुकाबलों से पहले स्टेडियम का एक नया स्वरूप निकलकर सामने आएगा।

अब काम की लीपापोती कर रही है राजस्थान रॉयल्स

जयपुर, 4 अगस्त। शेन वॉर्न गैलेरी में बनाए गए नए दर्शक स्टैंड में सीढ़ियों पर वाटर प्रूफिंग का कार्य अब करवाया जा रहा है जिससे बारिश का पानी पूरी बिल्डिंग में नीचे तक नहीं आ पाए जिससे पूरी बिल्डिंग को नुकसान ना हो। लेकिन साउथ पवेलियन की दीवारें अपनी बर्बादी की कहानी खुद तस्वीरों से बयां करती नजर आ रही है। ईंटों की चुनाई करके उसे वैसे ही छोड़ दिया गया है और तो और उसी ईंटों की दीवार पर लोहे की बड़ी एंगल को बिल्डिंग का वजन सहने के लिए बिना प्लास्टर किए ही लीपापोती कर दी गई। लोहे की प्लेट लगाकर छत डाल दी गई उसके नीचे कोई प्लास्टर नहीं किया गया। एसीसी के ब्लॉक लगा कर साउथ पवेलियन की दीवारें खड़ी कर दी गई थीं लेकिन पूरे साउथ पवेलियन की दीवारों पर प्लास्टर नहीं किया गया था जो साफ तौर पर दिखाई देती हैं। सिर्फ लकड़ी या प्लास्टिक के बोर्ड लगा कर चालू काम कर आईपीएल मैचों का आयोजन करवा दिया गया। ये तो गनीमत रही कि उस वक्त ऐसी बरसात नहीं हुई जैसी अभी हो रही है नहीं तो कोई भी हादसा हो सकता था। साउथ पवेलियन के काम को किस सुरक्षा प्रणाली ओर किस सुरक्षा मानकों के अनुसार एमएनआईटी द्वारा एनओसी दी गई। आने वाले समय में जयपुर में डोमेस्टिक टूर्नामेंट के अलावा प्राइवेट टूर्नामेंट आयोजित किये जाएंगे अगर ऐसी स्थिति में किसी टूर्नामेंट का आयोजन होता है तो खिलाड़ियों ओर उनके साथ आए मेहमानों, दर्शकों की जान मुश्किल में आ सकती है। कोई भी दुर्घटना साउथ पवेलियन में कभी भी होने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। सिर्फ दुबारा से फोर्सिलिंग नए लगा कर साउथ पवेलियन की दीवारों की कमी को छुपाया नहीं जा सकता। अगर अभी भी इस साउथ पवेलियन के काम को सीरियसली नहीं लिया गया तो कभी भी किसी होने वाले हादसों से बचा नहीं जा सकता। राजस्थान रॉयल्स प्रबंधन द्वारा इस पूरे मामले में किस तरह की लापरवाही की जा रही है उनके खिलाफ सख्त से सख्त एक्शन लिया जाना चाहिए।

पैरा एथलीट सुनील कुमार साहू ने उपमुख्यमंत्री से की भेंट

पैरालंपिक की तैयारी को मिला समर्थन

जयपुर, 4 अगसत। आज जनसुनवाई के दौरान प्रदेश की उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी से देश के होनहार पैरा एथलीट सुनील कुमार साहू ने मुलाकात की। उन्होंने हाल ही में 7वीं इंडियन ओपन पैरा एथलेटिक्स इंटरनेशनल चैंपियनशिप में लॉन्ग जंप में सिल्वर मेडल जीतकर देश और प्रदेश का नाम रोशन किया है। सुनील कुमार साहू अब तक राष्ट्रीय स्तर पर 18 मेडल जीत चुके हैं, जिनमें 11 स्वर्ण पदक शामिल हैं। पिछले तीन वर्षों में छह बार राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतने वाले इस युवा एथलीट ने अब पैरा ओलंपिक की तैयारी शुरू कर दी है। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने उनकी उपलब्धियों पर उन्हें साधुवाद दिया और कहा कि, सुनील जैसे प्रतिबद्ध और प्रेरणादायक खिलाड़ी हमारे देश की असली शक्ति हैं। राज्य सरकार उनकी पैरालंपिक यात्रा में हर संभव सहयोग देगी। सुनील ने उपमुख्यमंत्री को अपनी यात्रा, संघर्ष और भविष्य की योजनाओं से अवगत कराया। उपमुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि उनकी प्रशिक्षण, सुविधाओं और आवश्यक संसाधनों के लिए हर स्तर पर सहायता सुनिश्चित की जाए। सुनील की यह उपलब्धि न केवल राजस्थान बल्कि पूरे भारत के लिए गर्व की बात है।

जिला एथलेटिक प्रतियोगिता 13 व 14 को एसएमएस स्टेडियम में

जयपुर, 4 अगस्त। जिला जूनियर एथलेटिक प्रतियोगिता 13 व 14 अगस्त 2025 को होना निश्चित हुआ है। प्रतियोगिता लड़के एवं लड़कियों के वर्ग में संपन्न होगी। प्रतियोगिता 14, 16,18,20 वर्ष के आयु वर्ग के लड़के व लड़कियों में संपन्न होगी। इच्छुक प्रतियोगी आयोजन सचिव अशोक धाकड़ को मोबाइल नंबर 9694504397 पर अपनी प्रविष्टि दे देवें। चयनित एथलीट राज्य एथलेटिक्स प्रतियोगिता में जो की 27 से 28 अगस्त 2025 को लड़कों की एवं 29 व 30 अगस्त को लड़कियों की प्रतियोगिता बीकानेर में संपन्न होगी उसमें भाग लेंगे। प्रतियोगिता सुबह 13 को एसएमएस स्टेडियम जयपुर के एथलेटिक ट्रैक पर सुबह 7 बजे चालू होगी।

एचसीएल इंडिया टूर स्क्वैश : महिला वर्ग में भारत की 8 खिलाड़ी अंतिम 16 में

भारत के अयान, आर्यवीर, ओम और संदेश पुरुष वर्ग के प्री-क्वार्टर में पहुंचे

जयपुर, 4 अगस्त। भारत के अयान वजीरअली, आर्यवीर दीवान, ओम सेमवाल और संदेश पीआर ने सोमवार को यहां सवाई मानसिंह स्टेडियम कोर्ट्स पर शुरू हुए एचसीएल इंडिया टूर स्क्वैश टूर्नामेंट के पहले दिन अपने मुकाबले जीत पुरुष वर्ग के प्री क्वार्टर फाइनल में प्रवेश कर लिया। महिला वर्ग में भी भारतीय खिलाड़ियों ने पहले राउण्ड में जीत दर्ज करते हुए अंतिम 16 के राउण्ड में जगह बना ली।

भारत के अयान वजीर अली ने पहले दौर के मुकाबले में इंडिया के ही मोहित भट्ट को 11-7, 11-6, 9-11, 6-2 (रिटायर) से पराजित किया। पुरुष वर्ग के अन्य मुकाबलों में आर्यवीर दीवान ने यूसुफ एलशेरिफ (मिस्त्र) को 12-21, 8-11, 11-9, 11-9 से और संदेश रवि कुमार ने मलेशिया के ताय जुन कुआन को 11-6, 11-6, 13-11 से पराजित किया। भारत के ओम सेमवाल को मिस्त्र के मारवान तमीर के खिलाफ वाकओवर मिल गया। भारत के राहुल बैथा को मिस्त्र के सैफ रेफाय के खिलाफ 7-11, 6-11, 11-8, 1-6 (रिटायर) हार का सामना करना पड़ा।

महिला वर्ग में भी भारत की 8 खिलाड़ियों ने अपने पहले दौर के मुकाबले जीत अंतिम 16 के ड्रॉ में जगह बना ली। पहले दौर के मुकाबले में 6-1 के स्कोर पर सानवी बतर के रिटायर होने पर महक तलाती को प्री क्वार्टर में जगह मिल गई। पहले राउण्ड से अन्य मैचों में सुनीता पटेल ने राजस्थान की छवि सारण को 11-9, 11-5, 8-11, 11-4 से, पूजा आरती रघु ने आराधना कस्तूरी राज को 11-2, 11-5, 11-3 से, ईशा श्रीवास्तव ने कोरिया की यूजिन शिन को 11-6, 11-4, 11-4 से, रथिका एस सीलन ने सान्या वत्स को 7-11, 12-10, 7-11, 11-3, 16-14 से, अनिका दुबे ने तनिष्का जैन को 11-9, 7-11, 11-8, 10-12, 16-14 से, उन्नित त्रिपाठी ने मिस्त्र की मोना तमेर को 11-8, 11-5, 1-11, 11-5 से हरा प्री क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया।

स्क्वैश रैकेट फेडरेशन ऑफ इंडिया की उपाध्यक्ष सुरभि मिश्रा के अनुसार पुरुष और महिला दोनों वर्गों में 32-32 के ड्रॉ में टॉप-8 रैंकिंग प्लेयर्स को पहले दौर में बाय के साथ सीधे प्री क्वार्टर फाइनल में जगह मिल गई।

दिलीप सिंह करेंगे म्यांमार में भारतीय महिला अंडर-20 टीम के प्रतिनिधि मंडल की अगुवाई

जयपुर, 4 अगस्त। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ ने राजस्थान फुटबॉल संघ के सचिव दिलीप सिंह शेखावत को आगामी एशियाई फुटबॉल चैंपियनशिप अंडर-20 - महिला एशिया कप 2026 क्वालीफायर के लिए भारत की अंडर-20 टीम का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतिनिधिमंडल का प्रमुख नियुक्त किया है। यह टूर्नामेंट 4 से 11 अगस्त 2025 तक म्यांमार के यंगून में आयोजित होगा।

राजस्थान फुटबाल संघ के पदाधिकारी ओर जयपुर जिला फुटबॉल संचालन समिति के सदस्य अब्दुल जब्बार, हितेश शर्मा, मनोज शर्मा, डॉ दिलीप सिंह चुंडावत और सेबी फिलिप्स ने राजस्थान फुटबाल संघ के सचिव दिलीप सिंह शेखावत को अंतर्राष्ट्रीय पटल पर मिली इस विशेष जिम्मेदारी को सफलतापूर्वक निभाने के लिए शुभकामनाएं प्रेषित की है। संचालन समिति के वरिष्ठ सदस्य अब्दुल जब्बार ने बताया कि इतिहास में पहली बार राजस्थान फुटबाल संघ के किसी पदाधिकारी को एशिया कप के प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख की जिम्मेदारी मिली है और इसका श्रेय राजस्थान फुटबाल संघ के द्वारा विगत कुछ वर्षों में सफलतापूर्वक अखिल भारतीय फुटबाल महासंघ के कार्यक्रमों को आयोजित करने के कारण बने विश्वास और राजस्थान फुटबाल संघ के सचिव दिलीप सिंह शेखावत की कुशल प्रशासनिक कौशल के कारण संभव हो पाया है। भारतीय टीम को ग्रुप डी में रखा गया है जिसका सामना 6 अगस्त को इंडोनेशिया, 8 अगस्त को तुर्कमेनिस्तान और 10 अगस्त को मेजबान म्यांमार से होगा।

मैं अपनी टीम के प्रदर्शन से खुश हूं : स्टोक्स

लंदन, 4 अगस्त। इंग्लैंड टीम के कप्तान बेन स्टोक्स ने कहा कि मैं अपनी टीम के प्रदर्शन से खुश हूं। भारत के छह रन से मैच जीतने पर बेन स्टोक्स ने कहा कि गेम ना खेल पाना कठिन है। दोनों ही टीमों ने इस सीरीज में अच्छा प्रदर्शन किया और अपनी पूरी ऊर्जा के साथ खेला। इस सीरीज का हिस्सा रहना गर्व का हिस्सा रहा और मैं अपनी टीम के प्रदर्शन से खुश हूं। (वोक्स को बल्लेबाजी के लिए भेजने पर) यह दर्शाता है कि इन खिलाड़ियों के लिए देश के लिए खेलना कितना मायने रखता है। उन्होंने कहा कि इंग्लैंड और भारत की सीरीज हमेशा एक बड़ी सीरीज होती है और कई बार भावनाएं खुलकर सामने आ जाती हैं। हर कोई अपने देश का प्रतिनिधित्व करने आता है। जब आप मैच की शुरुआत में एक गेंदबाज कम हो जाते हैं तो अन्य गेंदबाजो के ऊपर अतिरिक्त जिम्मेदारी आ जाती है।

गिल भारतीय टेस्ट टीम को नई ऊंचाईयों पर ले जाएंगे : के.एल. राहुल

लंदन, 4 अगस्त। भारतीय टीम के सीनियर बल्लेबाज केएल राहुल ने कप्तान शुभमन गिल की तारीफ करते हुए कहा है कि शुभमन अद्भुत रहे हैं। उन्होंने वाकई आगे बढ़कर नेतृत्व किया है। उन्होंने खिलाड़ियों के साथ वाकई कड़ी मेहनत की है। वह रणनीतिक रूप से वाकई अच्छे रहे हैं। उन्होंने जो भी बदलाव किए हैं, उनसे हमें हमेशा किसी न किसी तरह विकेट मिले हैं। वह आगे भी निखरेंगे। वह एक लीडर के रूप में बने रहेंगे और इस भारतीय टेस्ट टीम को नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे। टेस्ट क्रिकेट और सीरीज ड्रॉ पर प्रसारक से बातचीत करते हुए राहुल ने कहा, यह (टेस्ट क्रिकेट) मेरे लिए बहुत मायने रखता है। मैंने कुछ समय तक क्रिकेट खेला है।

अमित असावा बीसीसीआई के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस द्वारा शिक्षण संकाय के रूप में नामित

जयपुर, 4 अगस्त। राजस्थान के एकमात्र बीसीसीआई-मान्यता प्राप्त लेवल 3 कोच अमित असावा को भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस द्वारा 4 से 7 अगस्त 2025 (ऑनलाइन) और 11 से 15 अगस्त (ऑन-साइट) तक सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, बैंगलोर में आयोजित होने वाले फास्ट ट्रैक हाइब्रिड लेवल 2 कोच कोर्स के लिए शिक्षण संकाय के रूप में नियुक्त किया गया है। अमित असावा 2013-14 के दौरान आरसीए अकादमी के निदेशक भी रहे हैं। यह कोर्स विशेष रूप से उन फास्ट ट्रैक क्रिकेटरों के लिए डिज़ाइन किया गया है जिन्होंने 75 से अधिक प्रथम श्रेणी मैच खेले हैं। कुछ नाम हैं - प्रशांत चोपड़ा (एचपीसीए), शेल्डन जैक्सन (सौराष्ट्र), बी. अपराजित (टीएनसीए), अंकित राजपूत (यूपीसीए), विजय शंकर (टीएनसीए), अशोक मेनारिया (आरसीए), सुश्री पूनम यादव (आरएसपीबी) इस पाठ्यक्रम में भाग लेंगे।

आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक व टीम आज करेगी निर्माणधीन चौंप स्टेडियम का दौरा

जयपुर, 4 अगस्त। राजस्थान क्रिकेट संघ के नवगठित आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत अपनी टीम के साथ कल दिनांक 5 अगस्त को जयपुर के चौंप में निर्माणाधीन आरसीए के अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम का दौरा करेगी। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत व उनकी टीम चौंप में निर्माणाधीन आरसीए के अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम के अभी तक के निर्माण का निरीक्षण व समीक्षा करेगी।

आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावतने कहा की जब से एडहॉक कमेटी का गठन हुआ है उनका व सभी सदस्यों का पूरा प्रयास रहा है की राज्य के युवा खिलाडियों के लिए हर स्तर पर उचित खेल का वातावरण व सहायता उपलब्ध कराई जाये जिससे उन्हें आगामी घरेलू क्रिकेट सत्र में न केवल खेलने का मौका मिले साथ ही उन्हें उच्च स्तरीय विकेट , मैदान व प्रशिक्षित मैच ऑफिशल्स उपलब्ध हो सके।

संयोजक के अनुसार राज्य के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के विजन राज्य में खेल व खिलाडियों के उच्चस्तरीय विकास की राह से न केवल सभी अवरोधों को दूर करना साथ जी युवा खिलाडियों को सभी संभव विकसित तकनीक उपलब्ध कराने के साथ राज्य में बेहतर खेल का माहौल बने की कड़ी में हम लगातार कार्य कर रहे हैं। उनके अनुसार आरसीए द्वारा आयोजित किये जाने वाले 2 दिवसीय आरसीए एम्पायर व स्कोरर (पुरुष व महिला) फ्रेशर सेमिनार हेतु बीसीसीआई पैनल के अंपायर व स्कोरर को फैकल्टी बनाया गया है जिससे इस सेमिनार में भाग लेने वाले राज्य के सभी अंपायर व स्कोरर को न केवल उनके द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त होगा साथ ही उनके अनुभव का फायदा भी मिलेगा।

आ्रसीए अंपायर व स्कोरर रिफ्रेशर सेमीनार का उद्घाटन आज

आज सुबह 10 :30 बजे होटल क्लार्क आमेर में किया जायेगा। उद्धघाटन समारोह के दौरान आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत व सदस्य मौजूद रहेंगे। आरसीए अंपायर व स्कोरर रिफ्रेशर सेमिनार हेतु बीसीसीआई अंपायर फैकल्टी -अनिल चौधरी, तपन शर्मा, गजानंद वशिष्ठ, राजीव गोदारा, कमलेश शर्मा। स्कोरर फेकल्टी :- मनोज भटनागर, ओ पी शर्मा, दीपक शर्मा, तपेश कौशिक। संयोजक के अनुसार आरसीए द्वारा आयोजित होने वाले अंपायर व स्कोरर फ्रेशर सेमिनार से मैच ऑफिशियल को न केवल लाभ मिलेगा साथ ही उन्हें खेल के दौरान आने वाली सभी परिस्थितियों में किस प्रकार धैर्य, संयम व एकाग्रचित होकर क्या निर्णय लेना से जिस से खेल व खिलाडी का भविष्य उज्जवल हो व खेल को किसी भी प्रकार से कोई हानि न पहुंचे उस निर्णय को लेने में आसानी होगी।

मुख्यमंत्री भजनलाल ने सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर जिलों का हवाई सर्वेक्षण किया

उन्होंने चकचैनपुरा, मण्डरायल व बिश्नोदा में अतिवृष्टि प्रभावित लोगों से संवाद किया

जयपुर, 4 अगस्त। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को सवाई माधोपुर, करौली और धौलपुर जिलों में जलभराव व अतिवृष्टि प्रभावित क्षेत्रों का हवाई सर्वेक्षण कर स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने सवाई माधोपुर जिले के चकचैनपुरा, करौली जिले के मण्डरायल एवं धौलपुर जिले के बिश्नोदा में प्रभावित लोगों से संवाद कर उनकी समस्याएं सुनीं तथा संबंधित अधिकारियों को आपदा राहत कार्य मुस्तैदी से करने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने सवाई माधोपुर जिले के भारी बारिश से प्रभावित गांवों का हवाई सर्वेक्षण कर अतिवृष्टि से हुए जलभराव और नुकसान का जायजा लिया।

मुख्यमंत्री ने भारी बारिश एवं जलभराव से प्रभावित लोगों से संवाद करते हुए कहा कि जिला कलेक्टर, स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं प्रशासनिक अधिकारियों से नियमित रूप से बैठक कर फीडबैक लिया जा रहा है। शर्मा ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि स्कूल, आंगनबाड़ी, अस्पताल और सड़कों की मरम्मत के कार्य प्राथमिकता से पूरे करवाए जाएं। फसल खराबे की भरपाई हेतु गिरदावरी की कार्यवाही शीघ्र पूरी की जाए।

- मुख्यमंत्री ने कहा कि बाढ़ की स्थिति से निपटने के लिए एसडीआरएफ की दो टीमें राजाखेड़ा तथा एक-एक टीम धौलपुर व सरमथुरा उपखंड क्षेत्रों में तैनात की गई हैं।

उल्लेखनीय है कि प्रदेश के अतिवृष्टि एवं जलभराव वाले क्षेत्रों में सिविल डिफेंस एवं आपदा राहत बलों की टीमें निरंतर कार्य कर रही हैं। धौलपुर जिले में बाढ़ की स्थिति से निपटने के लिए एवं राहत बचाव कार्य हेतु एसडीआरएफ की 2 टीमें राजाखेड़ा एवं 1-1 टीम धौलपुर व सरमथुरा उपखण्ड क्षेत्रों में तैनात की गई हैं। एनडीआरएफ की एक टीम धौलपुर मुख्यालय पर तैनात है। सेना का एक दल भी राहत और बचाव कार्यों के लिए धौलपुर बुलाया जा चुका है। इन क्षेत्रों के प्रभावित गांवों में से 2700 से अधिक लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को सवाई माधोपुर, करौली और धौलपुर जिलों में जलभराव व अतिवृष्टि प्रभावित क्षेत्रों का हवाई दौरा कर स्थिति का जायजा लिया।

इस दौरान आपदा प्रबंधन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा, सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार दक, गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म, विधायक जितेन्द्र गोठवाल, दर्शन सिंह गुर्जर, हंसराज मीणा, जसवंत सिंह गुर्जर मौजूद थे।

राज्यसभा ने शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि दी

नयी दिल्ली, 04 अगस्त। राज्यसभा ने सोमवार को अपने मौजूदा सदस्य और झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के निधन पर शोक व्यक्त किया और उन्हें श्रद्धांजलि देने के बाद सदन की कार्यवाही दिन भर के लिए स्थगित कर दी गयी।

उप सभापति हरिवंश ने सदस्यों को बताया कि उन्हें बड़े दुख के साथ सदस्यों को यह सूचित करना पड़ रहा है कि सदन के मौजूदा सदस्य शिबू सोरेन का आज निधन हो गया। उन्होंने कहा कि सोरेन जाने-माने सामाजिक तथा विशिष्ट आदिवासी नेता थे। आम लोगों में उन्हें दिशोम गुरूजी के नाम से जाना जाता था। उपसभापति ने कहा कि सोरेन ने अलग झारखंड राज्य के गठन से संबंधित आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी और तीन बार राज्य के मुख्यमंत्री रहे।

- श्रद्धांजलि के बाद सदन की कार्यवाही दिन भर के लिए स्थगित कर दी गई।

उन्होंने कहा कि सोरेन के निधन से देश ने एक अनुभवी सांसद और आदिवासी अधिकारों के पैरोकार को खो दिया।

विपक्षी दलों के हंगामे के कारण नहीं चली लोकसभा

स्पीकर ओम बिड़ला ने पहले दो बजे तक और फिर दिन भर के लिए लोकसभा स्थगित की

नयी दिल्ली, 04 अगस्त। लोकसभा में सोमवार को बिहार में मतदाता सूची विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया वापस लेने की मांग को लेकर विपक्षी दलों के हंगामे के कारण सदन की कार्यवाही दिनभर के लिए स्थगित कर दी गयी।

एक बार स्थगन के बाद दो बजे सभापति जगदंबिका पाल ने सदन की कार्यवाही जैसे शुरु की विपक्षी सदस्य नारेबाजी करते हुए सदन के बीचोबीच आ गये। सदस्यों ने एसआईआर वापस लेने को लेकर नारे लगाते रहे। सभापति ने शोरशराबे के बीच ही जरूरी कागजात सभा पटल पर रखवाये और सदस्यों से अपने स्थान पर जाने का आग्रह किया।

इससे पहले अध्यक्ष ओम बिड़ला ने पूर्वाह्न 11 बजे जैसे ही प्रश्नकाल शुरू कराया, विपक्षी दलों के सदस्य शोरगुल करते हुए सदन के बीचों-बीच आ गये। कुछ सदस्य तख्तियां भी लिए हुए थे, जिन पर एसआईआर के विरोध में नारे लिखे थे।शोरशराबे के बीच ही बिड़ला ने प्रश्न पूछने के लिए एक सदस्य का नाम पुकारा और केन्द्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्री ने उसका जवाब भी दिया। इस दौरान सदस्य हंगामा करते रहे। बिरला ने शोरशराबा कर रहे सदस्यों से अपने-अपने स्थानों पर जाने और कार्यवाही चलने देने का आग्रह किया। बिड़ला ने कहा कि वह फिर सदस्यों से आग्रह करते हैं कि वे अपने-अपने स्थानों पर जायें और सदन की कार्यवाही चलने दें। पर विपक्षी सांसद हंगामा करते रहे। इस पर अध्यक्ष ने सदन की कार्यवाही अपराह्न दो बजे तक और फिर दिनभर के लिए स्थगित कर दी।

- विपक्षी सांसद बिहार में मतदाता सूचियों के पुनरीक्षण पर हंगामा कर रहे थे। स्पीकर ने उनसे बार-बार आग्रह किया, सदन में नियमानुसार काम होने दें, पर विपक्षी सांसदों ने उनकी एक नहीं सुनी।

झारखंड के पूर्व ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मिलकर अपनी संवेदनाएं व्यक्त कीं।

प्रधानमंत्री ने सोरेन के पुत्र और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से मिलने के बाद, सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि दुख की इस घड़ी में सोरेन के परिजनों से मिलकर उनके प्रति संवेदना व्यक्त की।

मोदी ने पोस्ट में लिखा, झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। दुख की इस घड़ी में हेमंत जी, कल्पना जी और सोरेन के प्रशंसकों के प्रति मेरी संवेदनाएं। उनका पूरा जीवन जनजातीय समाज के कल्याण के लिए समर्पित रहा। इसके लिए वे सदैव याद किये जायेंगे।

- प्रधानमंत्री मोदी ने गंगाराम अस्पताल जाकर शिबु सोरेन को श्रद्धांजलि दी और आदिवासी समाज के हित में उनके द्वारा किए गए कार्यों को याद किया।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे तथा पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने भी सोमवार को यहां गंगा राम अस्पताल जाकर झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के पार्थिव शरीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

'ओम बिड़ला के ओ.एस.डी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गई जानकारी पर विचार करते हुए और रिकॉर्ड का अवलोकन करने के उपरांत, यह निर्देश दिया जाता है कि याचिकाकर्ताओं के खिलाफ कोई भी दंडात्मक कार्रवाई, जिसमें गिरफ्तारी भी शामिल है, तब तक नहीं की जाएगी, जब तक वे चल रही जांच में पूर्ण सहयोग और भागीदारी सुनिश्चित करते हैं। यदि किसी प्रकार की कार्रवाई की आवश्यकता हो, तो उसके लिए पूर्व अनुमति इस न्यायालय से प्राप्त की जाए।''

- अदालत ने मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए, मामले की विस्तृत कानूनी जाँच करने को कहा है और कहा है कि इस मामले की जाँच से जुड़ी प्रगति की रिपोर्ट राजस्थान पुलिस के डी.जी.पी. के साथ साझा की जाए। अदालत ने कहा, इस मामले की विस्तृत जाँच की रिपोर्ट आठ सप्ताह की भीतर अदालत में पेश की जाए।

न्यायालय ने यह भी कहा कि ''मामले की प्रकृति को देखते हुए, जिसमें एक ओर मानव तस्करी जैसे जघन्य अपराधों और दूसरी ओर अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 के तहत आरोप शामिल हैं तथा अजमेर, पाली, कोटा और बूंदी में दर्ज कई एफआईआर और शिकायतों के मद्देनज़र, जांच को समग्र, निष्पक्ष, पारदर्शी और त्वरित ढंग से किया जाए। यह जाँच दिनेश एम.एन. की निगरानी और निर्देश में की जाएगी।

अदालत ने यह भी निर्देश दिया कि संबंधित ज़ीरो एफआईआर को उपयुक्त क्षेत्राधिकार वाले पुलिस थाने को स्थानांतरित कर पुनः कानून के अनुसार दर्ज किया जाए। इस बीच, याचिकाकर्ता ने प्रधानमंत्री कार्यालय को एक पत्र लिखा है, जिसमें बताया गया है कि कैसे उसके खिलाफ कई मामले दर्ज किए गए हैं और उसे धमकाया तथा प्रताड़ित किया जा रहा है।

इस संवाददाता ने राजीव दत्ता से संपर्क कर इस पर प्रतिक्रिया और उनका पक्ष जानना चाहा तो उन्होंने संक्षिप्त रूप में कहा कि ''मामला विचाराधीन है।''

अमित शाह ने सदन की आंतरिक सुरक्षा पर हाई लेवल मीटिंग की

नई दिल्ली, 04 अगस्त। संसद भवन में सोमवार को गृह मंत्री अमित शाह ने आंतरिक सुरक्षा को लेकर हाई लेवल बैठक की। इस दौरान राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजित डोभाल, इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी) डायरेक्टर तपन कुमार डेका, गृह सचिव गोविंद मोहन मौजूद रहे। इससे पहले संसद भवन में विदेश मंत्री एस जयशंकर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। वहीं, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल और केंद्रीय मंत्री किरण रिजिजू के साथ बैठक की। दिल्ली में ये बैठकें जम्मू-कश्मीर से आर्टिकल 370 हटने के 6 साल पूरे होने से एक दिन पहले हुई हैं।

- राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल, इन्टेलीजेंस ब्यूरो डायरेक्टर तपन कुमार डेका तथा ग्रह सचिव गोविन्द मोहन बैठक में शामिल थे।

ममता बनर्जी ने अपने भतीजे को लोकसभा में पार्टी का नेता बनाया

कोलकाता/दिल्ली, 04 अगस्त। तृणमूल कांग्रेस ने संसद के मानसून सत्र के बीच बड़ा राजनीतिक कदम उठाते हुए पिछली तीन लोकसभा से पार्टी के सदन के नेता रहे सुदीप बंद्योपाध्याय को हटाकर पार्टी प्रमुख ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी को पार्टी का नया नेता नियुक्त किया है।

पार्टी ने इसके साथ ही लोकसभा में अपने मुख्य सचेतक कल्याण बनर्जी को भी हटा दिया है और उनकी जगह वरिष्ठ सांसद काकोली घोष दस्तीदार को पार्टी का नया मुख्य सचेतक नियुक्त किया है।

इस नियुक्ति के साथ ही पार्टी की तेज तर्रार नेता बनर्जी ने तत्काल मुख्य सचेतक पद से इस्तीफा दे दिया है।

- कल्याण बनर्जी को हटाकर काकोली घोष दस्तीदार को मुख्य सचेतक नियुक्त किया।

तृणमूल कांग्रेस ने यह निर्णय पार्टी नेता ममता बनर्जी की अध्यक्षता में पार्टी के सांसदों की वर्चुअल बैठक के बाद लिया है। मानसून सत्र के कारण पार्टी के ज्यादातर सदस्य इस समय दिल्ली में मौजूद हैं इसलिए ममता बनर्जी को वर्चुअल बैठक लेनी पड़ी।

कुपवाड़ा में आतंकवादी ठिकाना पकड़ा गया

श्रीनगर , 04 अगस्त। सुरक्षा बलों ने सोमवार को जम्मू कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में एक गुफा के अंदर आतंकवादी ठिकाने का भंडाफोड़ किया और 12 चीनी ग्रेनेड समेत, हथियारों तथा गोला-बारुद का बड़ा जखीरा बरामद किया। आधिकारिक प्रवक्ता के मुताबिक, कुपवाड़ा के कलारूस इलाके में सेना और पुलिस के तीन दिनों तक चले संयुक्त अभियान के बाद इस ठिकाने का भंडाफोड़ हुआ। अभियान में सुरक्षा बलों ने एक पथरीली गुफा का पता लगाया और वहां से 12 चीनी ग्रेनेड, गोला-बारुद से लैस चीनी पिस्तौल, केनवुड रेडियो सेट, उर्दू आईईडी मैनुअल और छड़ें बरामद कीं। उन्होंने बताया कि खुफिया जानकारी के अनुसार, आतंकवादियों को उनके पाकिस्तानी आकाओं ने आने वाले दिनों में पुलिस और अन्य सुरक्षा बलों को निशाना बनाने के लिए इनका इस्तेमाल करने का निर्देश दिया था।

'अभिव्यक्ति की ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कोई ठोस आधार है क्या? एक सच्चा भारतीय ऐसा नहीं कहेगा। जब सीमा पर तनाव है, तब क्या इस तरह के बयान दिए जाने चाहिए? आपके पास अनुच्छेद 19(1)(ए) के तहत अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है, इसका मतलब यह नहीं कि आप कुछ भी कह सकते हैं।'' राहुल गांधी की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने तर्क दिया कि ''इस तरह की टिप्पणी को लेकर किसी तीसरे पक्ष द्वारा मानहानि का मुकदमा नहीं दायर किया जा सकता। इस प्रकार का मानहानि का आरोप लगाकर किसी को परेशान नहीं किया जाना चाहिये। हाईकोर्ट का कहना है कि शिकायतकर्ता 'अपमानित तो हुए हैं, लेकिन प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित नहीं थे', जो कि कानूनी दृष्टि से सही नहीं है।'' सुप्रीम कोर्ट ने कार्यवाही पर स्टे देते हुये, राज्य सरकार को नोटिस जारी कर दिया। मामले की अगली सुनवाई तीन सप्ताह बाद होगी।

'रुस से तेल ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

घोषणा की है। इस संबंध में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा हस्ताक्षिरत आदेश में भारत पर 25 प्रतिशत अतिरिक्त आयात शुल्क लगाया गया है। साथ ही ट्रंप ने घोषणा की थी कि रूस से तेल खरीदने के लिए दंड के रूप में भारत पर और शुल्क लगाये जायेंगे, हालाँकि उक्त आदेश में इस संबंध में कुछ भी स्पष्ट नहीं किया गया था।

स्कूल इमारतों ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हालातों को लेकर स्वप्रेरणा से प्रसंज्ञान लेते हुए संबंधित अधिकारियों से जवाब तलब किया था। हाईकोर्ट की खंडपीठ ने दोनों स्वप्रेरित प्रसंज्ञान पर जनहित याचिका के तौर पर एक साथ सुनवाई करना तय किया है।

ट्रंप की टैरिफ धमकी के जवाब...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कूटनीतिक, आर्थिक और अन्य, ताकि यूक्रेन में चल रहे युद्ध को समाप्त कर शांति लाई जा सके।''

पिछले हफ्ते ट्रंप ने पत्रकारों से कहा था कि उन्होंने ''सुना'' है कि भारत अब रूसी तेल नहीं खरीदेगा और इसे ''एक अच्छा कदम'' बताया। ब्लूमबर्ग ने रिपोर्ट किया था कि रिफाइनरियों को गैर-रूसी तेल खरीदने की योजना तैयार करने को कहा गया है, हालांकि एक सूत्र ने इसे केवल ''परिस्थिति आधारित योजना'' बताया।

''न्यूयॉर्क टाइम्स'' ने शनिवार को रिपोर्ट किया कि भारत, रूसी कच्चा तेल खरीदता रहेगा, भले ही ट्रंप प्रशासन प्रतिबंधों की धमकी दे। रिपोर्ट में दो वरिष्ठ भारतीय अधिकारियों के हवाले से यह बात कही गई, जिनके नाम उजागर नहीं किए गए।

ब्लूमबर्ग द्वारा संपर्क करने पर भारत के पैट्रोलियम मंत्रालय के प्रवक्ता ने ब्लूमबर्ग के सवाल पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

भारत की रिफाइनरियों को यूरोपीय संघ और अमेरिका, दोनों ने निशाना बनाया है क्योंकि वे यूक्रेन युद्ध के दौरान मॉस्को को समर्थन देने के रूप में रूसी तेल खरीद रही हैं।

भारत अब रूसी समुद्री कच्चे तेल का दुनिया का सबसे बड़ा खरीदार बन गया है, जो पहले लगभग शून्य था और अब कुल आयात का लगभग एक-तिहाई है।

हालांकि चीन रूस का प्रमुख आर्थिक और कूटनीतिक साझेदार है, लेकिन ट्रंप के लिए दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था पर दबाव बनाना कठिन है, क्योंकि चीन के पास दुर्लभ-भूमि मैग्नेट्स हैं, जो अमेरिका की उच्च तकनीक वाली वस्तुओं के निर्माण आवश्यक हैं। अमेरिका और चीन ने हाल के महीनों में आपसी संबंधों को स्थिर करने के लिए वार्ताएं की हैं, हालांकि दोनों देशों ने इस साल की शुरुआत में एक-दूसरे की वस्तुओं पर 100 प्रतिशत से अधिक टैरिफ लगाए थे।

कश्मीर को फिर से राज्य ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कंवलजीत सिंह ढिल्लों ने सोशल मीडिया पर चिंता जताते हुए कहा, ''कश्मीर में शांति बहुत सी जानों की कीमत पर आई है। किसी भी फैसले में जल्दबाज़ी नहीं होनी चाहिये। सब कुछ ठीक होने दें।'' उनकी सोशल मीडिया पोस्ट को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भी फॉलो करते हैं। भू-राजनीतिक विश्लेषक आरती टिक्कू सिंह ने इन अटकलों पर चिन्ता जताई है कि कश्मीर और जम्मू, दो अलग-अलग राज्य बनाये जा सकते हैं। उन्होंने एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा, ''ऐसा कोई भी कदम विनाशकारी हो सकता है।'' इसके साथ ही, एक अन्य चर्चा यह भी है कि राज्य का दर्जा बहाल होने के बाद फिर से चुनाव कराए जा सकते हैं, क्योंकि पिछले चुनाव उस समय हुये थे जब यह क्षेत्र केन्द्र शासित था। खुद मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने जून में कहा था कि अगर राज्य का दर्जा मिलने के बाद विधानसभा भंग कर फिर से चुनाव कराए जाएं, तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी।

क्या बिहार चुनाव के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वरिष्ठ राजनीतिक विश्लेषक ने कहा, ''स्पष्ट है कि वे खुद को एक ऐसे क्षेत्रीय नेता के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं, जो जमीनी हकीकत पर ध्यान देता है और दिल्ली की बात को आंख मूंदकर नहीं मानता।''

आंध्र प्रदेश के किसान और मत्स्य समुदाय पहले ही बढ़ती लागत, निर्यात में रुकावटें और अनिश्चित जलवायु जैसी चुनौतियों से जूझ रहे हैं। ऐसे में अमेरिका की टैरिफ वृद्धि ने उनकी परेशानी और बढ़ा दी है। नायडू की त्वरित प्रतिक्रिया न केवल किसानों के हितों की रक्षा के लिए है, बल्कि खुद को एक क्रियाशील और संवेदनशील प्रशासक के रूप में प्रस्तुत करने की रणनीति भी है।

हालांकि नायडू और मोदी के बीच अभी तक कोई सीधे टकराव की स्थिति नहीं बनी है, लेकिन मुख्य मुद्दों पर बढ़ता मतभेद आने वाले दिनों में एन.डी.ए. के अंदर रिश्तों को और जटिल बना सकता है, खासकर ऐसे समय, जब 2025 की राजनीतिक गतिविधियाँ तेजी से आगे बढ़ रही हैं।

एक तरफ जहाँ बिहार चुनाव 2026 के आम चुनाव से पहले राष्ट्रीय स्तर पर गठबंधनों की दिशा तय कर सकते हैं, वहीं, अब सबकी निगाहें चंद्रबाबू नायडू पर हैं, जो एनडीए के सबसे अनुभवी और रणनीतिक नेताओं में से एक माने जाते हैं। देखना यह है कि वे अंततः किस दिशा में कदम बढ़ाते हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने भूपेश बघेल को हाईकोर्ट जाने को कहा

नयी दिल्ली, 04 अगस्त। उच्चतम न्यायालय ने 2160 करोड़ रुपए के कथित शराब घोटाला समेत, अन्य मामलों से जुड़े धन शोधन के आरोपों में घिरे छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और उनके बेटे चैतन्य बघेल को सोमवार को कोई राहत न देते हुए उनकी याचिका पर सुनवाई करने से इनकार कर दिया।

न्यायमूर्ति सूर्य कांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने पिता-पुत्र से कहा कि वे इस मामले में पहले उच्च न्यायालय या निचली अदालत के समक्ष राहत की गुहार लगा सकते हैं।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू (राज.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2009/28296 जयपुर कार्यालयः सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोनः 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोनः 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोनः 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालयः आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोनः 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालयः राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोनः 2627612, फैक्स:0145-2624665, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्सः 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोनः 230200, 230400, फैक्सः 07469-230600